वितस्ता

मुख्य संपादिकाएं :

डॉ.रूबी ज़ुत्शी एवं डॉ. ज़ाहिदा जबीन

हिंदी विभाग, कश्मीर विश्वविध्यालय राष्ट्रीय मूल्यांकन एवं प्रत्यायन परिषद् द्वारा 'ए+' ग्रेड
श्रीनगर 190006

वितस्ता

मुख्य संपादिकाएं :

डॉ.रूबी ज़ुत्शी एवं डॉ. ज़ाहिदा जबीन

हिंदी विभाग, कश्मीर विश्वविध्यालय

राष्ट्रीय मूल्यांकन एवं प्रत्यायनपरिषद् ए+ ग्रेड

श्रीनगर 190006

संपादक मण्डल :-

1. डॉ. भारतेन्दु कुमार पाठक
2. श्रीमती नायराह कुरैशी

सह- संपादक मण्डल :-

1. रुमैसा नज़ीर
2. सईदा मेहराज
3. दावूद अहमद परे

Prof. Talat Ahmad
FNA, FASc, FNA Sc. JC Bose National Fellow

Vice Chancellor
University of Kashmir
Hazratbal Srinagar – 190006
Jammu and Kashmir (India)

Date: 11th December, 2019

MESSAGE

It is a pleasure to learn that Post Graduate Department of Hindi is publishing its Departmental Annual Research Journal "**VISTASTA**"

Undoubtedly, Hindi is one of the primitive languages spoken all across the country. Hindi as a language has a great importance as an associated language among various linguistic groups, particularly in Jammu and Kashmir. Presently, all major efforts are being taken by the Govt. of India to promote and constantly support the student community in learning and understanding Hindi as a subject in non Hindi speaking states as well.

There is a significant requisite to adoption of innovative practices to reveal standard quality education and create job opportunities among young generation so that youth actively takes part to choose Hindi subject as a career.

Prof. Talat Ahmad

परामर्श मण्डलः-

1. ***प्रो० यज्ञ प्रसाद तिवारी***
   आचार्य एवं पूर्व विभागाध्यक्ष, हिंदी विभाग नागपुर विश्वविद्यालय, नागपुर (महाराष्ट्र)

2. ***प्रो० नीरज सूद***
   हिंदी विभाग पंजाब विश्वविद्यालय (चंडीगढ़)

3. ***डॉ० अशोक कुमार***
   हिंदी विभाग पंजाब विश्वविद्यालय (चंडीगढ़)

4. ***डॉ० परमिन्दर कौर***
   अध्यक्ष हिंदी विभाग जम्मू

5. ***डॉ० हरिशरण वर्मा***
   संपादक, सोशल रिसर्च फाउंडेशन कानपुर

सम्पादकीय

विभागीय शोध पत्रिका 'वितस्ता' वर्ष २०१९ का अंक हिंदी जगत के समक्ष है | हिंदी विभाग के सभी सदस्यों के लिए यह हर्षक है | कश्मीर में इतनी जटिल परिस्थितियों के उपरान्त भी विभाग वितस्ता के प्रकाशन में कार्यरत है क्योंकि कश्मीर में वितस्ता केवल एक मात्र पत्रिका है जो यहाँ के लेखकों एवं शोधार्थियों की अभिव्यक्ति का माध्यम है | पत्रिका ने समय-समय पर उच्चकोटि की साहित्यिक आलोचनात्मक तथा शोधपरक गतिविधियों का परिचय दिया है | साहित्यकार अपने समाज की उपज होता है | उसकी रचनाओं में उसका समाज एवं युग दोनों अभिव्यक्ति पाते हैं | वह अपने समय का प्रतिनिधि होता है / उनको जैसा मानसिक पोषण मिल जाता है वैसी ही उसकी कृति की उपज होती है | साहित्य समाज को प्रेरित करता है, वह उसकी चेतना को जगाता है | प्रत्येक देश का साहित्य वहां की जनता की चित्तवृतियों का अंकन होता है | उसके बिना मानव-जीवन की व्याख्या असंभव है | व्यक्ति,समाज और साहित्य का

एक घनिष्ट सम्बन्ध है | तीनों एक दूसरे से जुड़े हुए हैं कि तीनों में किसी एक को यदि अलग किया जाए तो शेष दो विकलांग से हो जाते हैं | पत्रिका में प्रस्तुत शोध पत्रों में लेखक इन्हीं साहित्यिक गतिविधियों का विश्लेषण करते हैं और साहित्य एवं हिंदी भाषा के नए प्रयोगों तथा नए ट्रेंड्स से पाठकगण को अवगत कराते हैं | पत्रिका नव युवा लेखकों को बेधडक अभिव्यक्ति का विस्तृत क्षेत्र उपलब्ध कराता है | प्रस्तुत अंक में शोध लेखों के लेखकों के विचार उनके निजी हैं, संपादिका का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है | आशा करती हूँ पूर्व अंकों की भांति हमारा यह प्रयास भी पाठकों को पसंद आएगा | हमें आपकी लिखित प्रतिक्रियाओं एवं सुझाओं की प्रतीक्षा रहेगी ताकि आगामी अंक को हम आपके समक्ष और भी बेहतर रूप में प्रस्तुत कर सकें |

सम्पादिकाएं:-

डॉ.रूबी ज़ुल्शी एवं डॉ.
ज़ाहिदा जबीन

आभार

कश्मीर विश्वविध्यालय के उपकुलपति महोदय प्रो० तलत अहमद तथा कुलसचिव डॉ.निसार अहमद के प्रति अपना आभार प्रकट करना अपना कर्तव्य समझतें हैं, जिन्होंने हर प्रकार से हमें इस पत्रिका को प्रकाशित करने में सहयोग दिया है | हम अपना आभार सम्पादक मण्डल के प्रति भी व्यक्त करते हैं कि उन्होंने एकाग्रता से और निष्ठापूर्वक हमारा साथ दिया |

सम्पादिकाएं :-

डॉ. रूबी जुत्शी एवं डॉ. ज़ाहिदा जबीन

श्रद्धांजलि

(स्वर्गीय डॉ. त्रिलोकी नाथ गंजू)

जीवन एक अनवरत–प्रवाह है | जीवन के रुकते ही यह प्रवाह भी रुक जाता है | डॉ. त्रिलोकी नाथ गंजू के जीवन का प्रवाह रुक गया | जिससे हिंदी प्रेमी शोकग्रस्त हुए | आप बहुप्रतिभा संपन्न व्यक्ति के स्वामी थे | उन्होंने कई पुस्तकें, शोध–पात्र, लेख, आलोचना और अनुवाद आदि लिखे हैं | एक समीक्षक के साथ–साथ एक अच्छे आचार्य भी थे | उनके निधन से कश्मीरी के हिंदी प्रेमियों को गहरा शोक हुआ | अतः कश्मीर

विश्वविध्यालय का हिंदी विभाग उनको भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं |

अनुक्रमणिका

1. समकालीन हिंदी का निहितार्थ

11-60

प्रो.मृत्युंजय उपाध्याय

2. निराला की परवर्ती कविताओं का वस्तुगत सौन्दर्य

61-66

सुनील कुमार धूबे

3. स्त्री विमर्श एक स्वस्थ दृष्टिकोण

67-77

डॉ. सचिन कुमार

4. हलाला और इस्लाम धर्म

78-83

रुमैसा नजीर

5. जूठन : एक समीक्षा **84-93**

डॉ. रूबी जुत्शी

6. कश्मीरी भाषा और साहित्य **94-110**

पर्वाज़ा अख्तर

7. हिंदी साहित्य को असगर वजाहत का योगदान
111-120
प्रो.जोहरा अफ़ज़ल / शाज़िया बशीर

8. नरेंद्र कोहिली के उपन्यास 'कर्म' का सशक्त पात्र :
121-125
एक विश्लेषण
सुरेश कुमार

9. हिंदी साहित्य में हनुमत काव्य में औचित्य 126-133
क्षेमेन्द्र भारद्वाज

10. देवनागरी लिपि का नामकरण एवं इतिहास 134-140
दवूद अहमद परे

11. झाँसी की रानी उपन्यास में राष्ट्र-गौरव 141-147
डॉ. दीपक कुमार

12. विवाह मेलापक में नाड़ी दोष विचार 148-157
डॉ. सुरेश शर्मा

13. प्रवासी हिंदी साहित्य 158-165
डॉ.स्कन्द जी पाठक

14. गीतांजलि श्री का कथा साहित्य में योगदान
166-175
वीणा मेहराज

15. हिंदी काव्य में तीर्थराज प्रयाग 176-179
डॉ.भारतेंदु कुमार पाठक

16. सुदामा पण्डे के प्रजातंत्र में नारी 180-199

निर्भय सिंह

17. चतुर्भुजदास कृत 'द्वादाश्यश' की प्रासंगिकता 200-219

डॉ. सुनीता शर्मा

18. प्रेमचंद की कहानी 'सद्गति' में सामाजिक यथार्थ 220-232

डॉ. वीरेंद्र सिंह बर्त्वाल

19. प्रेमाभिव्यक्ति से परिपूर्ण 'रोशनी दर रोशनी' 233-242

डॉ. मुदस्सिर अहमद भट्ट

20. पानी केरा बुदबुदा और नारी अस्तित्व 243-249

शोधार्थी, सबज़ार अहमद बट्टू

समकालीन हिंदी कविता का निहितार्थ

प्रो०मृत्युंजय उपाध्याय, डी० लिट

कविता के बारे में भले ही बीच–बीच में निराशावादी स्वर उठने लगे कि कविता मरती जा रही है पर जब तक जीवन धड़कता है साँसे चलती हैं, कविता जीवित रहेगी | प्रत्येक वर्ष भारत की ज़मीन पर कितने ही काव्य–संग्रह प्रकाशित होते हैं | कुछ चर्चित होते हैं | उनकी नोटिस ली जाती है |कुछ पर ध्यान जाता ही नहीं पर कविताएँ वहां भी हैं | अर्थायन, बिबग्रहण दोनों वहां हैं | यूनुस खान की कविताएँ जीवन की जटिलता पर छाए कुहासे की पर्त को एक तेजस्वी प्रकाश से बेधकर उधेड़ देतीं हैं | वह साफ़–साफ़ दिखाई देता है | वह आकाशवाणी से जुडी युवा प्रतिभा है | फिल्म और संगीत की परंपरा और उसके आधुनिक स्वरूप पर उनकी गहरी समझ है | उनकी कविताओं की भाषा तमाम विसंगतियों, प्रतिरोध और विषमताओं को भी एक सहज प्रवाह की तरह अभिव्यक्त करती है | यह एक ऐसा सरित प्रवाह है, जो गहन संवेदनों, सही शिल्प और सहजभाषा की कलकल संगीतमयी ध्वनियों के साथ पाठक के भीतर गहरे उतर जाता है | कविता में संप्रेषणीयता को समझना हो, तो 'साईकिल सीखती लड़की' देखि जा सकती है, जिसमें युवा कवि एक द्श्यबंध रचता है | वहाँ कविता पाठ और साईकिल चलाती लड़की के साईकिल सीखने के समांतर द्श्य के जरिए वह वर्तमान साहित्य जगत का पूरा सच ही सामने नहीं लाते बल्कि उसे साईकिल सीखनेवाली लड़की के समानांतर खड़ा कर देते हैं :

"कविताओं और लड़की ने शुरू किया है चलना एक साथ | देखना ये है कि कविताएँ आगे निकलती हैं लड़की से या लड़की पछाड़ देती है कविताओं को"|

(समावर्तन, जून २०१८, पृ. 27)

यहाँ 'घुसपैठ' 'बारिस' 'दोष तुम्हारा' 'छोटे शहर के लड़के' आदि भी मानवीय संवेदना की गहनाभिव्यक्ति हैं : "और भाई का चेहरा लगा दफ्तर सहकर्मी की तरह दोस्त कायर, डरपोक और कमीने लगे इस बार"| (इस बार)

संदीप नाईक की कविताएँ हैं 'मुंबई में प्रेम' (1,2,3,4,5,6) जहाँ सर्वत्र जोड़-तोड़, हिसाब-किताब यानी व्यवहार शास्त्र का गणित हल होता रहता है | एक कविता में लड़का दुबई जाना चाहता है ताकि इतना कमा ले कि नरीमन प्वाइंट पर ले पाए एक फ़्लैट | प्यार करनेवाली प्रेमिका सोचती है वह लौटे या नहीं लौटे या फिर किसी अन्य के साथ लौटे | तो फिर वर्तमान को भुना लिया जाए अच्छी तरह | लड़के को उसकी ईमानदारी में शक है | इधर लड़की वर्तमान लाभ को भला हाथ से कैसे जाने दे

लड़की कहती है एक बर्गर और खालूँ

पानी की बोतल से पानी ख़त्म हो गया है |

(समावर्तन, पृ. 30)

इसी में 'चीज़ें' कविता का कवि सोचता है कि सारी चीजें, माल असबाब, कपडे–लत्ते कितने करीने से संभालकर रखे गए हैं | कुछ पुराने अनुपयोगी जानकर अलग कर दिए गए हैं | कवि की उम्र का एक बड़ा हिस्सा गुज़र चुका है सामानों की हिफाजत करने में | कहीं वह भी चीज ही न हो जाए :

अब डर लगने लगा है / कि कहीं मैं भी / होकर न रह जाऊं चीज |

(उपरिवत् पृ. 31)

बाल कवि बैरागी (१० फरवरी १९३१–१३ मई २०१८) को श्रीराम देव ने समावर्तन (जून २०१८) में श्रद्धांजलि दी है | यह बालकवि जी ही थे, जिन्हें कविता का मंच सिद्ध था | मालवी और हिंदी के अनूठे गीतकार के साथ–साथ वह कहानीकार, निबंधकार भी ऊंचे दर्जे के थे | उनकी स्मृतियों को प्रणाम निवेदित करते हुए श्रीराम दवे ने उनकी ही पंक्तियों से उन्हें प्रणाम और श्रद्धांजलि अर्पित किया है :

जो कुछ भी हो रहा बिलकुल नहीं सुहाता

अपनी ही किरकिरी है सहनी पड़ेगी भाई |

जो बच सके बचालो–मुस्कान को संभालो

आँखें अगर भरी हैं सहनी पड़ेगी भाई |

(समावर्तन, जून २०१८, पृ. 65)

विषमता–विपरीतता के बीच संयम, धेर्य और सहिष्णुता से काम चलाना कितना कठिन हो जाता है, इसका क्षण–क्षण बोध होता है | पवन वर्मा की तीन कविताएँ हैं यहाँ : 'रोज की तरह' 'चीजें' 'यह इतना आसान नहीं' | मनुष्य विषमता, बाधाओं, विघ्नों से लड़ता–भिड़ता बढ़ता ही जाता है आगे और आगे | परन्तु एक दिन थक जाता है | हो जाता है पस्त और सारे हथियार देता है डाल | फिर उसके लिए आसान नहीं रहता कडवाहट पी जाना, पचाना और बदले में प्रेम और मिठास उगलना | तप्त मरुस्थल में अपनी प्यास पर नियंत्रण रखकर अपने हिस्से का जल बाँट देना | पथ–भ्रमित का पथ आलोकित करना और अपने–अपने मुखौटों को उतार फैंकना |

'गाँव गली सुनसान' (कुंअर उदय सिंह) में गाँव में तेज़ी से बढ़ता शहरी प्रभाव देखने को मिलता है | एक ओर चाक्यचिक्य है, चहल–पहल है और दूसरी ओर गाँव बैठकर रो रहा है आठ–आठ आंसू | कारण ये चमकतीं खुशियाँ बड़े दाम पर मिलीं हैं | गाँव को करना पडा है भारी त्याग :

गाँव शहर में खुल गए खुशियों के बाज़ार |

लाएं ख़ुशी खरीदकर भले बिकें घर बार ||

(समावर्तन, जून २०१८, पृ. 31)

'जगत बने मनमीत' : डॉ. देवेन्द्र आर्य में देश की ज्वलंत समस्याओं का चित्रण है | मूल्य संकट, असहिष्णुता, वोट के लिए हर तरह का तिकड़म, जातिवाद, फिरकापरस्त आदि के वर्णन के साथ कवि का आशावाद सर्वत्र मुखरित रहता है कि ऐसा वातावरण बनाया जाए कि सभी मित्र बन जाएँ | पारस्परिकता का विकास हो और हर हाल में मानवता सुरक्षित रहे | निराशा के विरुद्ध आशा का, असफलता के विरुद्ध सफलता का, यह प्रकल्प तभी पूरा होगा, जब रात-रात भर जागकर निरंतर प्रयत्न होगा | 'असंभव' शब्द को कोश से हटा दिया जाएगा | ध्यान रहे कि समय शिला पर घिस-घिस कर अनगढ़ पत्थर शालिग्राम बन जाता है | मंदिरों की शोभा बढाता है | वैसे ही हों हमारे प्रयत्न :

हार न अंतिम साँस तक, हार न मन के भाव |

बुझी बुझी सी आग पर, सुलगाओ कि अलाव ||

(पृ. 72)

जहाँ प्रेम, प्यार, अपनत्व, पारस्परिकता का राग है, वहां असफलता निराशा, पराजय फटकने का नाम भी नहीं लेगी | कर्म का दीपक अहर्निश जलते रहना चाहिए |

विहाग वैभव प्रतिरोध के कवि हैं | कभी वह प्रतिरोध एक बाह्य आवरण धारण करता है तो कभी उस भाव को आत्मसात कर लेता है | उसकी कविता क्रांति का एक उथल नाश न होकर परिवर्तन की वास्तविक आकांक्षा होती है | यह दूसरे प्रकार के युवा कवि हैं | इन्होंने सत्तातंत्र के प्रतिरोध को अपने भीतर जज़्ब कर लिया है और उसे रचना–प्रक्रिया के अनिवार्य अंग की तरह व्यक्त करते हैं | वहां निरर्थक गुस्सा, गालियाँ, चिल्लाहट, चीख या बौखलाहट नहीं मिलेगी जिसे सत्ता तंत्र के किसी चालाक, सेफ्टी वाल्व से भाफ की तरह उड़ाया जा सकता है | वहाँ एक सच्चे प्रतिरोध की दहकती आंच मिलेगी, जिसे विहाग ने अपनी संवेदन–प्रणाली बना लिया है | यह स्वयंसिद्ध है कि ऐसा स्वर सबसे ताकतवर होता है | कारण, यही परिवर्तन के लिए अनिवार्य मानस तैयार करता है | इस कवि की प्रतिभा विलक्षण है | दिलचस्प यह है कि इस कवि ने अपनी सहमती जताने के लिए एक नई भाषा ही नहीं, एक नई वर्णमाला इजाद की है, जिसे विहाग के अलावा कोई और नहीं कर सकता : “होंठ के रंग को करते हुए कत्थई से लाल / जिस भी चुंबन को जिया मैंने / उसी में विलखती रही भगत सिंह की प्रेमिका”| यहाँ घ्यातव्य है कि इतनी कम उम्र में भी इस कवि को शब्द और उसकी अर्थवत्ता का कितना गहरा अहसास है | इस समकाल में शब्दों का कितना चालाक इस्तेमाल किया जा सकता है– इसका कवि को पता है | इस देश की नागरिकता की नई अर्हताएँ में कवि

का देश की दुर्दशा, मूल्यक्षरण, मानवता की हत्या पर कितना करारा व्यंग्य है :

"अपने मस्तिष्क में / धर्म का धुआं भर लो इस कदर / तुम अपनी बेटियों, पत्नियों / और माओं के लिए / कुतिया रंडी और छिनाल / जैसे संबोधनों का / समर्थन कर सके / और सोच सको कि / मेरा–प्रधानमन्त्री इसके समर्थन में है / तो अवश्य ही अपूर्व गौरव की बात है"।

(समावर्तन, जुलाई २०१८, पृ. 20)

आमजन की पीड़ा का कैसा सहभोक्ता है कवि कि एक एक क्षण, घटना, क्रिया, प्रतिक्रिया का वह अनुभूत कथन कर देता है । "बोरे में भरे अन्न को देख किसान मालिक के समक्ष गिडगिडाया / हंसिया जेड हाथों को जोड़कर / अन्न और मालिक की प्रतिक्रिया थी कि योजना भर भभूत दे मारी उसके मुंहपर और कहा भभूत / शोषक की दानवता वहाँ जा सकती है, जहाँ तक शोषित की निरीहता जाती है । इसलिए दिनकर को कहना पड़ा था– "रण रोकना है तो उखाड़ विषदंत फेंको"।

श्री मोहन सपरा ने कविता को कई फ़ार्म में आजमाया है और उन्हें अपनी भाव संवेदना से मालामाल कर आलोचकों के लिए विमर्श का द्वार खोला है । उनकी कविता से संवाद एक संघर्षशील आम आदमी से रू–ब–रू होना है । वह अनागत को

सहज ही भाँप लेते है | उनकी कविता में आई तल्खी और विचारोत्तेजकता क्रत्रिम नहीं होकर कविता और समय की मांग है | इसी समय को कवि प्रश्न के निशाने पर लेकर युग धर्म की नब्ज़ टटोलते हैं :

"यह वक्त कैसा है / जब आपको दूर से आ रही / रंग-विरंगी आँधी का / रुख पहचानना है / उसकी नीयत भाँफना है / और समय से पहले / मुठ्ठियों को तानना है / आँखों को तरेरना है / शरीर को चट्टान बनाना है बनाओ / अब वक्त है"|

(समावर्तन, जुलाई २०१८, पृ. 34)

'अब वक्त है' में सपरा जी वक्त की नजाकत पहचानते हैं और बताते हैं कि समय ऐसा आ गया है कि हमें समय का मसीहा बनना होगा | प्रकाश को नहीं अन्धकार में अपना पथ-प्रशस्त करना होगा | समय ऐसा आ गया है कि नई झाड़ियाँ काट डी जाएँ | नई फसल के लिए ज़मीन तैयार हो | दूसरे देशों से आ रही रंगबिरंगी आँधियों को भी पहचानना होगा और उसकी नीयत को जानना भी | इसका नतीजा यह निकलता है कि समय से पहले अपनी मुठ्ठियों को तानना है | आँखों को तरेरना है और बनाना है शरीर को भारी चट्टान | कवि को सर्वत्र युद्ध ही युद्ध दीखता है | अँगुलियों, आँखों, मन-मस्तिष्क की गुफाओं में | यहाँ तक कि नदी सागर, पहाड़ के गिरते झरनों में भी युद्ध साफ़-साफ़ नज़र आता है | प्रसिद्द कवि स्व० जगदीश चतुर्वेदी

की एक टिपण्णी से मोहन सपरा की कवि–कर्म–व्याख्या पर विराम देता है |

“मोहन सपरा की बीच कविताएँ अत्यन्त मार्मिक, सटीक एवं गहन संवेदना से जन्मी है :”

“यह वक्त कैसा है / हथेलियाँ वैशाखियों पर / और मनुष्य एक लम्बी यात्रा पर निकल पडा है |”

यह आज के मनुष्य की समरगाथा है | वैसाखियों पर चलते हुए अनवरत युद्ध में लिप्त | यह संलग्नता कवि कविताओं में ऐसे प्रयोगों से रू–ब–रू कराती है, जो इधर विरल है |

(समावर्तन, जुलाई २०१८, पृ. 39)

दिनेश कुशवाहा की कविताएँ कहीं–कहीं प्रेम मनुहार, रोमान पर टिक जाती हैं तो सुकून मिलता है :

“पहले तो दौड़ी आती थी / अब किस्से कह पाती होगी |”

(अनुत्तरित, समावर्तन,वही, पृ.40)

विन्देश्वर विभाः डॉ. राहुल एक महाकाव्य है | इसमें आधुनिक युग के महानायक डॉ. विन्देश्वर पाठक के क्रियाकलापों का विशद और व्यापक वर्णन मिलता है | वैसे आचार्य नलिन विलोचन शर्मा ने उपन्यास (आलोचना, १९५६) पर विचार करते

हुए कहा था कि "समृद्धि और ऐश्वर्य सभ्यता महाकाव्य में अभिव्यंजना पाती है, जीवन की जटिलता, संघर्ष, जद्दोजहद उपन्यासों में।" परन्तु आधुनिक युग में ऐसे महानायक मिल जाएँ जो समाज के उपांत पर खड़े गरीबी, जहालत, भूखमरी में जीते हुए अछूतों मेहतरों के कल्याणार्थ अपना जीवन होम कर दें, तो क्या कहा जाएगा। ऐसा ही चरित्र है महानायक, विन्देश्वर पाठक का। महात्मा गांधी ने अवश्य ही अछूतों के प्रति सद्भावना व्यक्त की, उन्हें अछूतों की जगह 'हरिजन' की संज्ञा दी। हरिवंश राय बच्चन 'बापू के प्रति' कविता में इसकी घोषणा की है :

हिन्दू करते थे सदियों से,

जिसकी क्रूर अवज्ञा,

उन्हीं अछूतों को दी उसने

हरिजन की शुभ संज्ञा।

वहीं डॉ.पाठक ने उनके उपेक्षित जीवन की चर्चा कर उनके उन्नयन का मार्ग प्रशस्त किया– "वही उपेक्षित अज्ञानी बन/निज जीवन को ढोते हैं। सीलन–भरी रूग्णतापोषित/बन कालिख को पोते हैं"।

(पृ.65)

कितना कारुणिक, वीभत्स जीवन है अछूतों का, यह देखकर पाठक जी आश्चर्यचकित, ही नहीं हुए, उनके उद्धार का मार्ग तलाशा | उन्हें समाज में विकास की मुख्य धारा से जोड़ा | उनका संकल्प है :

करेंगे हम विकास अस्पर्श्यता–भाव मिटाकर

पशुता के दुर्गम जीवन से इनको मुक्ति दिलाकर |

नारी के प्रति उनकी आदर–भावना, प्रशंसा देखने योग्य है | आज नारी अपने पति, परिवार से ही उपेक्षित है तो समाज भला उसका आदर कैसे करेगा ? अपनी पत्नी अमोला के प्रति उनका उदगार नारी जाति का कितना बड़ा सम्मान है :

तुम्हीं लक्ष्मीरूप अमोला, तुम्हीं सरस्वती प्रतिमा |

तुम्हीं प्रतिष्ठा कर्म–साधना, तुम्हीं सिद्धि में अणिमा ||

(पृ.116)

उन्होंने दो गड्ढों वाला शौचालय बनाकर न केवल अछूतोद्धार किया, सिरपर मैला ढोने से उन्हें मुक्ति दिलाई, उन्हें

समाज, विकास की मुख्यधारा से जोड़ दिया | उन्हें प्रेरणा दी कि अपना विकास स्वयं करना होगा | उन्हें स्वाभिमान, प्रतिष्ठा के साथ जीना सिखाया | समाज में विकास की मुख्य धारा से जोड़ा |

सात रंग ज़िन्दगी डॉ.पुष्पा चौरसिया, थोड़ी यादें, थोड़ी बातें, थोड़ा डर, सुरेश पबरा, आकाशः वो अकेला (ग़ज़ल संग्रह) आदि भी विचारणीय हैं | जन जाति की बोलियों में सामाजिक, समसामयिक रचनाओं से बोलियों की रचनात्मकता सिद्ध हो रही है | इसमें जनजातियों की अस्मिता और स्वाभिमान का तीव्राक्रोश भी नज़र आता है | गोंडी कवयित्री श्रीमती उर्मिला कुमरे इस समय की प्रमुख रचनाकार हैं | वह लिखती है :

"दरिया ने झरना से पुछा/तुझसे समंदर नहीं बनना क्या? उसने बड़ी नम्रता से कहा/बड़ा बनकर खारा हो जाने से,बेहतर है/मैं छोटा रहकर मीठा ही रहूँ"|

कोहरे में सुबह : ब्रजेश कानूनगो (बोधि प्रकाशन, जयपुर) की प्रत्येक कविता के पार्श्व में उनकी वह दृष्टि है, जो अतीत और वर्तमान के पार जाकर वह सब देख लेता है, जहाँ कई लोग, समाज, पर्यावरण और परिवेश से भी अनभिज्ञ हैं | यहाँ की कविताओं में भूला बिसरा गाँव है | उसकी स्मृतियाँ हैं | अतीत की वर्त्तमान से तुलना करते हुए कवि दोनों के अंतर का अनुभव करने लगता है और समकालीनता से संबद्ध चिंतन भी : "पढता हूँ, अखबार में जब विकास की कोई नई घोषणा/एक

गाँव मेरे भीतर मिटने लगता है" | कम शब्दों में अपनी बात कहने का उनका अंदाज़ ही अपना है | यह कहते समय कवि का एक और चेहरा (प्रेम का चेहरा) सामने आता है, जो प्रेम के व्याकरण और गणित में निष्णात है | तभी उसकी अनुभूति की छलक ऐसी हो जाती है :

> प्रेम की बात हो तो हर मौसम/बसंत में बदल जाता है |

> राजेश सक्सेना की कविताएँ 'प्रवासी नागरिक' 'मधुमालती' 'नींद झुकी हुई टहनी है' भाव, भाषा और प्रभाव की दृष्टि से उल्लेखनीय हैं | तीसरी कविता सर्वाधिक ध्यानाकर्षक है कि किस प्रकार कवि रात का चित्रांकन करता है | कैसे उसे मानावभावसापेक्ष और सहभोक्ता बना देता है | नींद एक झुकी हुई टहनी की तरह उसकी आँखों के इर्दगिर्द लिपटी रही, यहाँ नींद और स्मृति के बीच सगी बहनों का रिश्ता है | कारण दोनों प्रेमी हैं स्वप्न के | दोनों चल जाते हैं प्रणय के सृष्टिलोक में | यहाँ मधुमालती में उसके रूप सौन्दर्य का व्यापक वितान ताना गया है "उनके सौन्दर्य में / एक प्रेमिल अभिव्यक्ति / एक समुच्चय की तरह / उनके प्राकृतिक गुण सूत्र / सिखाते हैं हमें विनम्रता" |
> (समावर्तन, मई २०१८, पृ.36)

पारूल तोमर की कविता 'नदी अब भी खुश रहती है' में नदी की आत्मकथा, आत्मस्वीकृति है | किस प्रकार उसने पर्वतों

पर उछलना छोड़ दिया | कारण, एक दिन झरने ने उसे टोका कि वह हो गई है बड़ी | अब उछल कूद, धमाचौकड़ी क्या मचाना | बचपना छोड़ देना चाहिए उसे | नदी हो गई मायूस और छोड़ दिया उसने पत्थरों से अलमस्त टकराना | बिना कारण व्रक्षों, लतावितानों से उलझ जाना | अब दुबली, पतली नदी छोडकर अपना स्वाधीन प्रवाह बहने लगी थी | पारूल तोमर बताती हैं कि नदी किनारों में हो पाई पूर्ण | जान पाई स्त्रीत्व की सार्थकता | जनकल्याण में चित्र लगाकर पा गई थी अपनी सार्थकता और वह अब और भी खुश रहने लगी थी |

किशन तिवारी की गजलों में अन्तर्द्वन्द और आत्मसंघर्ष का स्वर तेज है | मन यों तो बहुत चालाक था पर बन गया जाल की मछली और फडफडाता रहा | उसने फैसला करना चाहा पर करे तो क्या करे वह | कारण, वह झूठ की तराजू पर सच्चाइयाँ तौलता है | फिर निर्णय कैसे किया जाए कितना खरा है आदमी | मनुष्य की कथनी करनी में होगा गहन अंतर तो परिणाम कितना त्रासद हो सकता है, इसकी कल्पना सहज है : “शब्द में नायक बना हर जुल्म से टकरा गया / किन्तु व्यवहारों में उलटी धारणाएं क्या करें” |

(समावर्तन, मई २०१८,पृ.37)

देवेश पथ सारिया की कविताओं का वितान ग्लोबल है | एक ओर वह दुनिया के विभिन्न देशों, वहां के समाज और परिवेश को अपनी कविता का विषय बनाते हैं, तो वहीं दूसरी

ओर एक देसी खांटीपन भी उन्हें जकड़े रहता है | दुनियाभर में विचरण करते हुए भी उन्हें पगडण्डीयाँ, प्रेम,और स्थानीय सरोकार भुलाए नहीं भूलता | इसे दो विपरीतों के बीच सामंजस्य के कवि संवेदनों का विस्तार कहा जा सकता है | 'वोदका के तीन जाम' कविता में वह दोस्त के साथ शराब भर नहीं पी रहा बल्कि उसके क्रियाकलापों, दैहिक भाषा और संवादों से उसे नए सिरे से जान्ने, पहचानने की कोशिश भी कर रहा है | "क्रीमिया आने से पहले उसके ई मेल से/जितना नपा–तुला वह लगा रहा था/उससे एकदम अलग है | लिखे हुए से हम हर किसी को पूरा नहीं पहचानते" |

(निरंजन क्षोत्रिय, समावर्तन, अगस्त २०१८, पृ.22)

'वेलेंटाइन सप्ताह में लड़की' अजीब स्वप्न, अरमां, कामनाओं की दुनिया में सैर करती है | उसे डार्क चाकलेट का कडवापन पसंद आने लगा है | वह 'चाकलेट डे' पे एक अदद भेंट पाना चाहती है | सातों दिनों का वर्णन बड़ा रोमांटिक और मादक बन पड़ा है | इस दिवस को कल्पना का निस्सीम आकाश मिला है | इसका न कोई ओर है, न छोर :

"दासों दिशाएँ लालायित होकर ताकती हैं/लड़की को 'हग' और 'किसडे' पर / वह उछाल देती है / निस्सीम में चुंबन और आलिंगन" |

(समावर्तन, अगस्त,२०१८, पृ.23)

'वोदका के तीन जाम' 'तुर्की का व्यापारी' 'चिठ्ठी लिखने का सोंधापन' 'ताइवान' 'तारे और तुम' 'नींद से पहले' 'फटेहाल खजाना' 'वसुधैव कुटुंबकम' 'मास्को की लड़की' 'पहाड़ और पगडंडी' 'विदेश में शोक' की कुछ पंक्तियाँ दिए बिना मन नहीं मानता | इसलिए कि पगडंडीयाँ प्राणवान हो गई है | वे धमनियां और शिराएं है | इनसे गुज़रती हैं गीले और सूखे पत्ते लाती औरतें | सब्जियां बाज़ार ले जाते किसान | ससुराल जाती डोलियाँ | स्कूल जाते बच्चे | पलायन करते परिवार और युवक |

इसी अंक में सुधीर सक्सेना की कविताएँ हैं, जिनसे गांधी जी के संबंध में कवि का विचार जानना बड़ा सुखद प्रतीत होता है | गांधी के अनुसार कवि ने कभी सत्य को ईश्वर नहीं माना वरन अपने ईश्वर को ही सत्य माना | उनका स्वों था कि औरों के अच्छे दिन आएँ एक–न–एक दिन पर प्रतीक्षा का दौर चलता ही रहा | गांधीजी याद आते रहे पर आ कहाँ पाए अच्छे दिन | गोया मनुष्य प्रतीक्षा ही करता रह जाता है | इसकी, उसकी बातें भले ही रखें उसे भुलावे में |

रंजना श्रीवास्तव की तीन कविताएँ हैं–'उसने पन्नियों की कथा लिखी' 'लड़की चाहती है' 'तो चलो धूप की नोक से' | ये कविताएँ इतनी अमूर्त और अप्रस्तुत हैं कि सहज ही पल्ले नहीं पडती पर ध्यान देने से सब कुछ आरपार दिखाई देने लगता है

कि एक अच्छे सोच से बुने गए आदमी के पास बुरे वक्त का आइना नहीं होता | वह बस जीना जानता अहि और उसके धडकनों के साथ चलने लगती है पृथ्वी | लड़की चाहती है अपने स्त्रिपने के बीच की अस्थिरता | वह लोगों के इच्छानुसार ही बनी रही उसके भीतर की स्त्री | परन्तु वह हवा के झरोखे से हँसते हुए चाँद के बारे में सपने देखना नहीं छोड़ती | उसका मन फैला है आकाश की हथेली पर | फैले हुए मन की चमकीली दुनिया में अक्सर घूमती है लड़की |

ब्रजेश कानूनगो का कविता संग्रह है – 'कोहरे में सुबह' (बोधि प्रकाशन, जयपुर ३०२००६) | उनकी प्रत्येक कविता के पार्श्व में उनकी वह दृष्टि है, जो अतीत और वर्तमान के बीच पार जाकर वह सब देख लेती है, जिससे कई लोग, समाज, पर्यावरण और परिवेश भी अनभिज्ञ है |

"शेर/शेर नहीं होता केवल/कवि भी शेर होता है/शेर भी रोता है कभी–कभी की तरह"| ऐसा लगता है कवि आया है किसी पर्यटन पर गाँव | तरोताजा होकर कल लौट जाएगा | संग्रह की कई कविताओं में उसके भूले विसरे गाँव का चित्रं है | गाँव के अतीत और वर्तमान में आ गया है घर अंतर | ग्राम्य विकास की कोई योजना सुनकर उसके भीतर एक गाँव मिटने लगता है :

पढ़ता हूँ, अखबार में जब विकास कि कोई

नई घोषणा एक गाँव मेरे भीतर मिटने लगता है |

कवि का एक और चेहरा है, जो प्रेम के व्याकरण और गणित में निष्णात है | तभी उसकी अनुभूति कुछ यूँ छलकती जाती है :

"प्रेम की बात हो तो हर मौसम/वसंत में बदल जाता है"| प्रेम का इतना अमूर्त, भावात्मक वर्णन दुर्लभ होता जा रहा है : "सुंदर की तरह बजता है गणित प्रेम के राग में"|

अभी हाल में पोयट्री सोसाइटी ऑफ इंडिया और आइ० सी०के तत्वावधान में 'नरेंद्र मोहन : कविता संग्रह' का लोकार्पण हुआ | साथ ही नरेंद्र मोहन की कविता 'ज़िन्दगी का पर्याय' का भी | डॉ. रामदरश मिश्र ने पुस्ताकलोकार्पण समारोह में कहा कि उनकी कविताएँ प्रतिरोध और आत्मसंघर्ष की कविताएँ हैं | मुकेश भारद्वाज ने उनकी कविताओं को भाषा की प्रयोगशाला माना, जिसमें हर तरह के प्रयोग दिखाई पड़ते हैं | "आवाज़ शब्द और शक्ल तीनों में कोई रिश्ता क्यों नहीं है" का उद्धृत करते हुए वे उन्हें आज के मनुष्य को लोकसंग्रही विराट रूप के समकक्ष नारी को रखकर कवयित्री यह सन्देश देना चाहती है कि नारी समर्पण, सृजन, सेवा की साकार विग्रह है | उसे नदी की तरह ही बनना होगा : "नदी पूर्ण थी किनारों में/स्त्रीत्व की सार्थकता जाना/जीवन पा गई थी जनकल्याणों में/नदी अब और भी खुश रहने लगी थी"| उपासना झा की कविताएँ मुखर स्त्री विमर्श की कविताएँ न होकर एक अकेली उदास और अनमनी

स्त्री की कविताएँ हैं/कविताओं के मूल में है दुःख एकाकीपन, प्रेम | वे स्त्री मन के विभिन्न पक्षों को खंगालती हैं |

रामवृक्ष बेनपूरी ने 'नीव की ईंट' लेख में लिखा था कि जिसकी नीव में जितनी ही लाल–लाल सुर्ख ईंटें दफ़न होंगी, उसकी इमारत उतनी ही बुलंद होंगी | चाहिए पकी, लाल ईंटों का सात हाथ गहरे अन्धकार में दफ़न होगा | मनीषा जोशी ने 'हमारे देश की माटी' में कुछ ऐसा ही भाव व्यक्त किया है | उसने वीरों को ललकारा है | किसी भी विपरीत परिस्थिति में मुख नहीं मोड़ने का आह्वान किया है :

"समर में आत्मबल तेरा अकेले अग्निपुंज होगा अडिग होगा/ये बल तेरा भले ही कितना छल होगा" | (हमारे देश की माटी : मनीषा जोशी, चक्रवाक, नई दिल्ली, अक्टूबर–मार्च, २०१८, पृ.१०८)

भारतीय संस्कृति में नदियों का बड़ा महत्त्व है | यह सरसाती, हर्षाती है, तो तारती भी है (सगर सुमन सठ सहस परस जल्मात्र उधारिणीः गंगावर्णनः भारतेंदु हरिश्चंद्र) डॉ. राजेन्द्र मिलन की कविता हा 'प्राण रमते हैं नदी में' (चक्रवाक उपरिवत) नदी की पूजा, अर्चना है | उसके गुणों का बखान करते हुए "प्राण रमते हैं नदी में | अटकल नहीं/मानिए संजीवनी ये/कलकल नहीं" | (पृ.१२०) इसी अंक में पंडित सुरेश नीरव की कविता है दर्द गुनगुनाते हैं, जिसमें निरंतर बढ़ते प्रदूषण, ओजोन की परत के छटने, छीजनें पर चिंता व्यक्त की गई हैः

टूटती ओजोन परतों ने किया सूरज को बेबस

आतिशी समंदर में प्यास के तराने हैं |

(पृ.84)

मूल्यक्षरण, मानवता की पगपग पर हत्या, भ्रष्टाचार, दुराचार से व्यथित कवि नीरव साही फरमाते हैं कि हवा में ही जहर घुला हो तो इलाज क्या करेगा | फिर हमदर्द के मिजाज के बारे में पूछने पर भला क्या उत्तर होगा | नेता जहाँ धनवान हो, जनता फटेहाल, उस देश को भगवान् ही बचाएँ |

अस्मुरारीनंदन मिश्र की कविताओं से पता चलता है कि कवि ने यह परिपक्वता और समझ अपने आत्मसंघर्ष, अध्यवसाय और जिजीविषा के द्वारा प्राप्त किया है | मौसम का पहला आम हमारे इस अस्संग समय में शुष्क औए एकांगी होती जा रही रसानुमूति के दौर में एक रसज्ञ के पहले की कविता है | यहाँ बेमौसम टपके आम की संभावित मिठास की उम्मीद है, जो सुगवा और स्वाद की अंतर्क्रिया से पैदा हो रही है :

“मेरे सामने मौसम का पहला आम है/और मेरे सामने है/रस और परिपक्वता को/पहले–पहले पहचान लेनेवाले/किसी

अज्ञात की सुदृष्टि/मैं उठाता हूँ उस डान को" |

(समावर्तन,मार्च २०१८,पृ.20)

अन्य कविताएँ हैं 'कलाकृतियाँ' 'चौथा प्रेम' 'कवि जी' 'वे जब भी हमें देशद्रोही कहते हैं' 'पत्थर' 'अकेले तो मौत तक नहीं आती' और 'एकल कुछ नहीं होता' | अकेला तो हर कोई है पर समय परिस्थिति, मौसम उसे अकेला रहने कहाँ देते हैं ? उसके मरने के कई कारण एक साथ उभरने लगते हैं | पहले मरती है उसकी उम्मीद | फिर मरते हैं उसके बैल | उसके पहले मर जाती है फसलें, जिससे उठ जाता है मौसम पर से विशवास | मरने के साथ साथ वह साफ़-साफ़ देखता है मरे हुए नारे, साँस उखड़ी योजनाएं | सूखकर अकड़ी संवेदनाएँ | आखिर मरते-मरते वह अपने मरने के कारण जान जाता है | नेताओं की नाकामी, मूर्खता, निर्लज्जता परन्तु सत्ता के प्रभाव के कारण सर्वत्र आवभगत देखते ही बनती है | नेता जी के अधोवायु-निष्कासन पर कवि का व्यंग्य बड़ा धारदार है, साथ ही प्रजातंत्र की शल्यक्रिया भी है : "अहादेवता धन्य हुए हम/तब अपां वायु से/ निश्चय ही अब खिल जाएंगे | सब नूतन आयु से" |

(पृ.23)

सब कोई जो जवानी पार कर चुके हैं, पता नहीं क्यों बच्चा बनना चाहते हैं | वह हेनरी वॉन की कविता 'रिट्रीट' हो या सुभद्रा कुमारी चौहान की कविता 'मेरा बच्चपन' या फिर दुर्गा प्रसाद झाला की 'मुझे बच्चा बना देना' और मैं खोज में हूँ' |

सर्वत्र एक भाव व्यापता है | मनुष्य को शायद चिंता और लज्जा है कि बच्चे तो परी की पीठ पर सवार हो असीम यात्रा पर निकल सकते हैं | उसकी आवभगत में खड़े हैं सारे देवदूत– "सारे देवदूत अपनी–अपनी पलकें उसके रास्ते पर बिछा देते हैं" |

(समावर्तन,मार्च २०१८, मुझे बच्चा बना दो न, पृ.26)

उस अजनबी की याद कितना व्याकुल, तनहा बना देती है | उसकी छुअन में भला कौन–सा–जादू है | कुछ है कि शब्दों का रेशमी जाल बोदा हुआ जाता है | फिर भी उस नाज़ुक छुअन की याद बनी रहती है साँस–साँस में फाँस चूमती है रोजलीन |

(समावर्तन,मार्च २०१८,पृ.17)

अशोक गीते के दो गीतों (उम्र कैलेंडर, फैला है ज़हर) में आधुनिक युग की भागदौड़ चिल्ल पों क्षिप्रता का मार्मिक वर्णन है | पावों में बिवाई, डगर–डगर पर शूल से चुभनवाले काँटे,

धुन्धभरा दिन उद्देश्य हीन, व्यर्थ, बेमतलब | आखिर आदमी करे तो क्या करे, जाए तो कहाँ जाए ? इस शहर ने रुकना भला कहाँ सीखा है | नतीजा सामने है :

"दौड़ी गाड़ी गूंजे आवाज़ें/कोई घायल बिखरा खून/म्हणत करते नहीं दौड़ते/खिन चढ़ा है जूनून" |

(फैला है जहर, पृ.27)

कृष्णा बैनर्जी 'मेरी माँ' की याद में अतीत से वर्तमान को मिलाकर देखती है | उसका 'स्व', अस्तित्व, अस्मिता उसी की देन है, इसे भला वह कभी भूल सकती है क्या ? एक-एक घटना, दृश्य उसके समक्ष सिनेमा की रील तरह घूमता जाता है और वह अतीत-वर्तमान की संधि रेखा पर खड़ी सोच रही है :

"चोट लगने ना देती/पीड़ा अपने ऊपर ले लेती/अपने आँचल में मुझे समा लेती/तुम्हारा आँचल खुशियों का/तुम्हारा सलोना रूप-देवी दुर्गा का" |

(पृ.52)

अभिलाषा भट्टाचार्य तो माँ से आज भी लगता है नाभि–नाल जुदा हुआ है | इससे उसे सुकून, सहारा और सुरक्षा का बोध होता है :

"तुम्हारे वृक्ष में सिमटा/आज भी/उसी तरल संसार में/सुकून पाटा हूँ" |

(समावर्तन,अप्रैल २०१८)

भारत सरकार उपांत की आबादी हित योजनाएं कई बनाती है | मसलन निश्शुल्क शिक्षा, विद्यालय में दोपहर का भोजन मुफ्त | फिर क्या है | उपस्थिति शत–प्रतिशत हाजिरी लगाने तक | फिर तीन चौथाई बच्चे भाग खड़े हुए अपने घर के काम में | मसलन, लकड़ी जलावन के अन्य सामान इकठ्ठा करना, बकरी चराना | फिर भोजन के समय भागकर भोजन करना | प्रो० मृत्युंजय उपाध्याय की दो कविताएँ इसपर आधारित हैं– 'पढ़ाई–लिखाई' और 'देश का भविष्य' | पहली कविता का प्रारंभिक अंश देखा जाए– "सुगिया बोढनी दौड़ भागकर लगाती है, हाजिरी/मिड दे मील के लोभ में/फिर खेत–खेत भटकती हैं/जलावन जुटाती है/पर खाना खाना कभी नहीं भूलती हैं" | दूसरी कविता में ऊंघ रहा है शिक्षक टूटी कुर्सी पर बैठा | बच्चे रट रहे है पहाड़ | अकचकाकर देखता है पहले कुर्सी के पाए | फिर फटकारता है छड़ी बच्चों पर | यही हो रही है सबके लिए शिक्षा और भारत का प्रजातंत्र पाल पोसकर बड़ा किया जा रहा है

| लगभग सभी सहकर्मी का वही खैया है | तब इस डूबती नैया का भगवान् ही खेवैया है |

अनुराधा प्रकाशन, नई दिल्ली से प्रकाशित इन काव्य–संकलनों पर भी विचार किया जा सकता है | काव्य कलश साझा काव्य संग्रह, प्रधान संपादक, मनमोहन शर्मा शरण, राहगीरः अक्षय कुमार सिंह, मेरे ख्व्वाबों का शहरः आर० के० सिन्हा, तिनका एक सफरनामाः संजीव दीक्षितः बेकल मुझे कुछ कहना हैः देवेन्द्र कुमार मिश्र, मरीज़ ए मुहब्बत (ग़ज़ल संग्रह)ः मदनमोहन शुक्ला, पीहू पुकारः रवीन्द्र जुगरान, तन दोहामन मुक्तिकाः विश्वंभरनाथ शुक्ल, अंतर्मनः अर्चना भारद्वाज, आनंद सागरः निशिबंसल, आवाज़–ए–दिल (ग़ज़ल संग्रह)ः मदन मोहन शुक्ला, इश्क ए जाविदानी (ग़ज़ल संग्रह)ः मदन मोहन शुक्ला, अपरिचित राहेंः हिमांशु अधिकारी, अधूरे एहसासः श्रेया आनंद, उम्र जैसे नदी हो गयीः विश्वंभर शुक्ल | 'उत्कर्ष मेल'ः संपादक मदन मोहन शर्मा नई दिल्ली, में ये विवरण उपलब्ध हैं | इस पत्रिका में प्रकाशित कुछ कविताओं पर टिपण्णी हो जाए | डॉ.सुधीर सिंह, अवकाशप्राप्त इंसान की व्यथा कथा सुनाते हैं की किस प्रकार विकास की मुख्य धारा से उन्हें अलग क्र दिया गया है | फलतः अकेलापन, बेगानापन उन्हें यदा–कदा घेर लेता है | तब जीवन भार, व्यर्थ लगने लगता है | वैसा बेतुका व्यवहार भी होने लगता है :

दिल से प्यार करता सभी रिश्तेदारों को |

कभी बेमतलब ही डांट देता किसी को ||

(उत्कर्ष मेल, १६ जून–३१ जुलाई, पृ.7)

ग़ज़ल के उत्स, सृजन के किरणों पर डॉ. संजीव दीक्षित की पंक्तियाँ सार्थक हैं | बस इश्कहकीकी और इश्कमजाजी का आलम है :

करता हूँ तुझे याद तो ग़ज़ल बनती है |

होता हूँ जब मैं बर्बाद तो ग़ज़ल बनती है ||

प्रो० मदनमोहन शुक्ल किसी की याद में खोए हैं | बेइंतिहा चाहते हैं उसे | प्रकृति से उपमान जुटाकर कैसा समां बाँध देते हैं :

उमड़ घुमड़कर बादल भी दे रहे हैं पैगाम |

आज किसी के होने में, सहरन है रुसवाई ||

नीरज त्यागी को सर्वत्र उनकी प्रेयसी ही दिखाई देती है : “तुम अंधेरों में उजाले की उस किरण सी हो, जो पड़ जाए जहाँ, वहां फ़ैल जाए उजाला” |

डॉ.श्याम सिंह शशि ने ‘रोमा पुत्री के नाम’ उपन्यास में कई जगह कविताओं का प्रयोग किया है | ये कविताएँ

उपन्यासानुरूप वातावरण, घटना, परिवेश को उजागर करती हैं तो पात्र की मनोदशा में भावन भी करती हैं :

दुनिया की यह रीति है | डू गुड एंड फारगेट.....

(पृ.30)

विदा की वेला का मनोभाव कितना कारुणिक हो जाता है | शायद फिर मिलें या न मिलें | कवी को अपने प्रयत्न, संघर्ष, जद्धोजहद में पूरा विशवास है | लोगों को प्यार लुटानेवाला सदा प्यार पाता है :

"इतिहास के अक्षर हमें/सत्कार देंगे सब जगह/हम प्यार लेते बांटते/अलमस्त से चलते रहे" |

(पृ.32)

सधे हाथों की थापः त्रिलोक मोहन पुरोहित का कवि किसी वाद–विवाद, जंजाल में नहीं फंसता | कवि की दृष्टि अन्धकार में चक्कर नहीं लगाती बल्कि वह कविता में प्रकाश को इस तरह से स्थापित करता है की पाठक आश्चर्यचकित हो जाता है | इसका कवि मनुष्य जीवन के संकटों सामाजिक, सांस्कृतिक, अंतर्संबंधों की पड़ताल करते हुए वर्तमान संबंधों को नवीन युगीन यथार्त बोध के साथ अभिव्यक्त करता है |

जिंदा हूँ मरने के बादः रेवती रमण शर्मा में बताया गया है की सृष्टि का सब जड़, चेतन मृत्यु–धर्मा है | आज या कल सबकी मृत्यु निश्चित है | परन्तु एक सर्वांत जाग्रत, सचेत कवि यह कहता है की 'ज़िंदा हूँ मरने के बाद' तो वास्तु सत्य को जानने की आकांक्षा स्वाभाविक है | तात्पर्य यह व्यक्त करना है की समय, समाज, तंत्र और देश की स्थितियां अत्यंत मारक हैं | कई लोग कई कारणों से आत्महत्याएं कर रहे हैं | अकारण मर रहे हैं | पूँजी, धर्म, अध्यात्म तंत्र से जुड़े हैं | उससे लाभ उठा रहे हैं | जो जीवित हैं, वे भी मरे के समान ही हैं |

अभिनव संबोधनः मधुसूदन पांड्या के जुलाई–सितम्बर २०१८ अंक में हबीब कैफ़ी की दो ग़ज़लें हैं | नींव की ईंट का नामलेवा कोई नहीं होता भले ही वह सात हाथ गहराई में पूरी इमारत का बोझ संभाले अँधेरे में घुट रही हो |

"तुम्हारे महल की बुनियाद में दफ़न/मगर कोई भी महल में लेता हमारा नाम नहीं"| दोस्ती के नाम पर दुश्मनी कैसा–कैसा खेल खेलती है, यह उनकी दूसरी ग़ज़ल से पता चलता हैः

आएगा मुझसे दोस्ती करने,

जब वो नाखून तेज़ कर लेगा |

भावों की गहराई, किसी को महत्व देने का जज्बा यहाँ देखा जा सकता हैः "जब तुम आओं/नहलाएँ तुम्हें स्वाति बूँदें/महकाएँ तुम्हें शमीमी पवन/मेरे संग निहारे तम्हारे, गगन |

मधुमती,(उदयपुर, जुलाई–अगस्त २०१८) के मुख्य पृष्ठ पर बालकवि बैरागी की 'हिंदी अपने घर की रानी' हिंदी के महत्व, उसकी सर्व–व्यापकता, सार्वजनीनता पर बेबाक उदगार हैः "भूख नहीं है इसे राज की/प्यास नहीं है इसे ताज की/करती आठों पहर तपस्या/रचना करती नव समाज की" |

अंत में सुरेन्द्र सिंह राव 'मृत्युंजय' के दोहे (हिंदी को समर्पित दोहे) भी हिंदी की महत्ता का परचम लहराते हैः

जितनी भाषा जगत में, हिंदी उन सब तह |

वैज्ञानिक अरु सरल है, जन प्रबुद्ध मन तह ||

ये कविता–संग्रह भी उल्लेखनीय हैं | यों स्थान सीमा के कारण सबके उदाहरण आदि देना संभव नहीं है | घिस्सी चप्पल की कीलः भारतरतन भागवे, साजिश के चलते : सदाशिव कौतुक, रिश्तों की बूँदें : सुदर्शन व्यास, मेरा गाँव की सुबह : नर्मदा प्रसाद कोरी, मनके मौसम : राधारानी चौहान 'मानवी' आदि पर चर्चा अपेक्षित है |

सोनी पाण्डेय की कविताएँ स्त्री विमर्श की कवितायेँ हैं |इसके दो पक्ष हैं | पहला पक्ष थोडा तल्ख़ और हिम्मती है जबकि दूसरा भारतीय स्त्री की परम्परा विवशता, बेचैनी और उदासी को प्रकाशित्क्रता है | मुक्ति की आकांक्षा यहाँ भी है परन्तु उसका स्वर थोड़ा मंद है | इससे उसका महत्व कतई कम

नहीं होता | सोनी पाण्डेय दुसरे पक्ष की हिमायती है | वः भारतीय समाज की स्त्री की वास्तविक स्थिति और मुक्ति की आकांक्षा के साथ व्यवहारिक अनुभव को नज़रंदाज़ नहीं कर पाती | अतः वः किसी अति के पक्ष में न जाकर एक स्वाभाविक परिवर्तन की आकांक्षा है | 'तीसरी बेटी का हलफनामा' में उनका स्वर अन्य कविताओं की अपेक्षा तल्ख़ है | यहाँ परिवार की इस बेटी को उपेक्षित मान लिया गया है | लगभग अमावस की तरह | वः अपने पिता से तीखे, ज्वलंत प्रश्न पूछती है | कविता में उसके आत्मविश्वास का उजास परम्परागत अँधेरे को चीरकर अपने लिए एक स्पेस की मान करता है :

"सुनिए बाबूजी/मेरे अंदर जो दहकता हुआ बहता है/गर्म लावा/वो मेरी उपेक्षा का दंश/और बेटियों की प्रतिभा का/दमघोंटू सन्नाटा है/जहाँ जलता है भभककर/ सभ्यता का उत्कर्ष/उसका स्वाभाविक जोर लडकी के सपनों पर है, जिसे न देखने और न साकार करने का अवसर दिया जाता है | लड़की को लेकर परिवार में प्रचलित धारणाएँ उनके कथित चाल चलन के पैरामीटर्स को लेकर सोनी चिंतित है | इन बाह्य अवरोधों दबावों के बावजूद उनका बलाघात लड़की के स्वप्नों पर है | इसी तरह सोचकर वः स्त्री–मुक्ति के मर्म तक पहुँचती है" |

"सबसे बड़ा पहरा/हमारे स्वप्नों पर है | और मेरे प्रिय कवि पाश कहते है | सबसे बुरा है/हमारे सपनों का मर जाना" |

(समावर्तन,सितम्बर,२०१८,
पृ.19)

कहा गया है की दर्द का बेहद से गुज़रना उसका इलाज हो जाता है | परन्तु इससे बेहतर है उससे दोस्ती कर ली जाए | तद्रूपता, तादात्म्य की सीमा तक :

"इसलिए दर्द से दोस्ती है मेरी/अब दर्द की डोर थामें/घूम आती हूँ, दर्द के हिमालय तक" |

(प्रेमःसमावर्तन,सितम्बर २०१८,पृ.122)

तुम्हारे जाने के बाद कृष्णकांत निलोमे की दुःख की जड़ से उपजी कविताएँ हैं | इसका पोषण हुआ है, विषाद की गोद में | कवि की अपनी पत्नी के बारे में अपूर्व कल्पना है | विराट, उदार, मर्मस्पर्शीः "वः पहले रूप थी/आकार थी/शैनः शैनः वः विचार की तरह/आत्मस्थ होने लगी" |

पत्नी का विचार के रूप में आत्मस्थ हो जाने का यह बिम्ब सर्वथा नया है और विचार ऐसी संज्ञा होता है, जो कभी शून्य में विलीन नहीं होता |

शब्दों के परेः त्रिलोक महावर में अपने आस-पास, मनुष्यों और प्रकृति को समझने की अद्भुत क्षमता है | अनुभव विचार का रूप ग्रहण कर ले, इसकी यह प्रतीक्षा एक हद तक करते हैं | भाषा के आडंबर की अपेक्षा भाव की सघनता इनकी कविताओं की विशेषता है | शब्दों से परे की कविताएँ हमे

आश्वस्त करती है कि कवि के पास पर्याप्त अवकाश और स्पेस है | जीवन को समग्रता में जानने वाला कवि हड़बड़ी में नहीं होता |

इधर जो हमारी नागर सभ्यता विकसित हो रही है, वः टेक्नोलोजी और अधुनातन विज्ञान से भले ही संपन्न हो लेकिन उसने हमें गांवों, पहाड़ों, वनों से निर्ममता से काट दिया है | भलें ही इसे हम आंकें उपलब्धियों के तौर पर परन्तु कवि को हर पल अपने मूल से अलग होने का दर्द होता है :

"कदम के पेड़ के नीचे नारियल के दरख्त पर/सूरज सुस्ताता था/शाम को घर लौटने के पहले/वहां अब है कंक्रीट का जंगल/ट्यूब्लाईट की जगह सोडियम वेंपरलैंप ने ले ली है" |

पुनीता जैन की तीन कविताएँ हैं, जो अमूर्त भावात्मक हैं पर हैं प्रभावोत्पादक | "वायु में जो रहती है वायु–सी/उसी लिपि में उसने लिख दिया मौन" | सपनों के दौर में सैर कराते हैं वेद हिमांशु | जो स्वप्न लिपिहीन, रूपहीन, शब्दहीन है, बिलकुल खामोश हैं, उसे वह नींद के समान मानते हैं | आदमी सोचता है नदी के बारे में फिर उदास सपनों में खो जाता है | स्वप्न ख़ुदकुशी भी करते हैं, थ भाव है 'ख़ुदकुशी करते स्वप्न' का | सपने गोपनीयता, सनसनी पैदा नहीं कर सकते, उनकी ज़िन्दगी मर जाती है और स्वप्न भी ख़ुदकुशी कर लेते हैं | बाईस वसंत पार कर चुकी लड़की स्मृतियों की जुगाली भले कर ले यह जानते हुए कि अब सारे स्वप्न अर्थहीन हैं |

'मनमीत मेरी' राम मिलन प्रसाद की कविता है, जिसमें कवि अपने मनमीत के नाना गुणों, प्रसंगों की भावुकतापूर्ण अभिव्यक्ति करता है | वह सुख–दुःख के ताने–बाने बुनती रहती है | कभी अनसुलझी अबूझ पहेली–सी लगती है | परन्तु कवि इस बात से निराश, उदास हो जाता है | पता नहीं वह कब इसका हाथ छुडा चली जाए नेपथ्य में | डॉ. प्रेम बाजपायी अपने गाँव की नाना विशेषताओं का बखान करते हैं | यों वह रहते हैं– कोलाहभरे शहर में | परन्तु गाँव उनके समक्ष सदा घूमता रहता है | वहां प्रकृति, प्रेम, खुलेपन का सौन्दर्य देखते ही बनता है | एक नदी को कितनी व्याकुलता रहती है सागर से मिलने की जैसे अल्हड़ युवती दौड़े, प्रिय को गले लगाने को | वहां श्रांत, क्लांत मन, विराम पाता है | मिटटी की खुशबू उसके मन में बसी है | वहां प्रेम की धारा कलकल निरंतर बहती रहती है |

(नबनिकष, कानपुर,जन–मार्च,२०१८)

वैसे रोहिताक्व अस्थाना ग़ज़ल के पंडित हैं | परन्तु उनके प्रीती के दोहे सहज ही ध्यानाकर्षण करते हैं | अलग–अलग दोहों में प्रीति के नए–नए रंग हैं तो नायिका के सहस्र गोनों का खुलकर बखान हैं :

चन्दन जैसा रंग तब,सघन केश की छाँव |

कृश काया कमनीय बहू, हल्दी जैसे पाँव ||

संतिश कुमार झा की दो कवितायेँ प्रभावक हैं 'कितना मुश्किल होता है' और किस्से कहूँ वेदना' | कोई आया प्रेमी, प्रेम के रंग बिखेर गया | रग–रग प्रेम में समा गया | फिर वह चला गया, तो इसे सहना कितना मुश्किल हो जाता है | कवि धर्मसंकट में पड़ जाता है | अपनी वेदना कहे तो किस्से कहे | कौन सुनेगा उसके आंतरिक अवसाद, दुःख को | कोई आया, प्रेम के तराने से मन प्राणों को मिंगो गया, फिर चला गया | उसे रोका न जा सका :

"हिय में विदाई की अगन, है अश्रुपूरित थे नयन, मन क्यों न चाहे रोकना किस्से कहूँ मैं वेदना" |

(संकल्य, हैदराबाद, जन–मार्च २०१८)

इस अंक 'संकल्य' 'में पर्यावरण संरक्षण' पर प्रो० सी० बी० श्रीवास्तव 'विदग्ध' के दोहे बड़े भावपूर्ण और प्रासंगिक हैं | उत्तरोत्तर बढ़ती आबादी के कारण जंगल, वृक्ष, पहाड़, तालाब का दृश्य से लिप्त होते जाना बहुत बड़ा संकट है | भूकंप, बाढ़, सूखा, प्रलय प्रकृति की उपेक्षा के कारण है | नियमों, कानूनों को टाक पर रखकर खुलेआम हो रहा है प्रकृति का शोषण | परिणाम समक्ष है– बाढ, सुखाड़, भूंकप, अतिवृष्टि, अनावृष्टि | फलतः मानव पर टूट गया विपत्ति का पहाड़ है | विश्वकल्याण के लिए विज्ञान का मत है, "विश्व के कल्याणहित विज्ञान का है एक

मत, आत्मसंयम, प्रकृति पूजन, प्रकृति प्रति आभार है" |

(संकल्य, जनवरी–मार्च २०१८, पृ.22)

मुहम्मद कुरैशी 'निर्मल' गजलों के माध्यम से बूढ़े, बुज़र्गों की व्यथा का बयान करते हैं | यों उनके घर में नहीं है कोई कमी | परन्तु उनकी माँ ले रही है उधार | बेटा बन गया है भले ही मंडलाधिकारी परपिता की विवशता तो यथावत है :

बेटा बने है मंडलाधिकारी

पर बापू को लाचार देखा |

मत्स्येन्द्र शुक्ल को आदिम जन जाति की चिंता रही है | भारत का इतना विकास हो गया | संचार माध्यम इसका प्रचार करते नहीं अधाता है फिर भ उनके विकास पर सर्वत्र प्रश्नों की तलवार तनी है :

वन–प्रांत की असम खुरदुरी ज़मीन पर/छतरीनुमा पात पत्ती समय काट रहे आदिम जन/खनिज गुफाओं में भूखे भेडियों का जंग पशुतुल्य हो चुका है मनुष्य का जीवन |

(देश के नागरिक सोंचे, संकल्य, जन–मार्च,२०१८, पृ.27)

सत्या सिंह को इसी की चिंता है कि अपने स्वार्थ की सिद्धि के लिए लोग किस प्रकार दंगे करवाते है |

(सरसीछंद, संकल्प, जन–मार्च २०१८, पृ.28)

नारी विमर्श, वृद्धविमर्श का आन्दोलन उत्कर्ष पर है | परन्तु उनकी दयनीयता, विवशता पर अंकुश कहाँ लग पाया है | जब तक भार सहेंगे देखो बाबूजी के कंधे : योगेन्द्र प्रताप मौर्य पठनीय और विचारणीय है | रमेश मनोहरा अपनी गजलों में कई शाश्वत और ज्वलंत समस्याओं पर प्रकाश डालते हैं | कुछ लोग कभी सकारात्मक दिशा में सोंचते ही नही हैं | नकार उनका है मुख्य स्वर | जो यात्रा नकार से प्रारम्भ होगी, वह भला कभी साकार तक पहुँच सकती है ?

"पूछ उनसे कैसे भी सबल सवाली बनकर/मगर उनके पास नकारात्मक जवाब होते हैं" | गुंडों, लफंगों बदमाशों की खूब चलती है | कारण, नियम, क़ानून को धता बताना उनके लिए एकदम आसान है | शासन, व्यवस्था उनका कुछ बिगाड़ नहीं पाती :

क़ानून भी उनका कुछ नहीं बिगाड़ सकता है

गुंडे जब खुद ही क़ानून की किताब होते हैं

'नेह की चंचल नदी' में मंजु श्रीवास्तव का उदगार है कि प्रेम, सौहार्द्र अपनत्व जहाँ है, वहां किसी प्रकार का मनोमालिन्य, विकार, भेद का निषेध है | यह नदी किनारा छोड़कर अलग-थलग बहने लगती है | कारण, इसके सीने में खर, पतवार उग आते हैं |

मोहनी पाण्डेय 'आखिर क्यूँ ?' में चिंतित और व्याकुल इसलिए हैं कि चारों ओर महाभारत छिडा है | अर्जुन बढे तो आखिर बढे कैसे | उनका पथ शकुनि, दु:शासन अवरुद्ध कर देता है | घृणा, महत्वाकांक्षी, अनीति से विजय-लालसा का भाव जब तक छाया रहेगा, सत्य, विवेक हारता ही रहेगा | कवयित्री का मारक प्रश्न है- "कब बुझेगी ये मृगतृष्णा की प्यास ? / कब तक सुलगेगी ये घृणा की आग ? "झूठे, अहंकार, महत्वाकांक्षा, सत्ता की लालसा मनुष्य को भरमाते रहेंगे और वह उसके पीछे बंदर-सा नाचता रहेगा | उसके हाथ निराशा, हताशा, पराजय के सिवा कुछ नहीं आएगी |

दोहा संगम (संपादक, डॉ.विपिन पाण्डेय, गिरधारी सिंह गहलोत) इलाहाबाद से प्रकाशित १० दोहाकारों का संकलन है | इसमें झारखंड, मध्यप्रदेश, राजस्थान, उत्तराखंड, उत्तरप्रदेश और महाराष्ट्र के चर्चित कवियों के १००-१०० दोहे और हर कवि का सचित्र परिचय प्रकाशित किया गया है | इन दोहों का प्रतिपाध्य है- वर्तमान जीवन की त्रासदी, दुर्व्यवस्था, खेत-खलिहान, मजदूर की दशा-दुर्दशा, अपराध, भ्रष्टाचार, हिंसा,

अशिक्षा, भ्रून्हात्य आदि | बड़ी बात यह है कि दोहे के छंद-विधान का विधिवत वर्णन है | संख्या के आधार पर दोहों के २३ प्रकार निर्धारित किये गये हैं | रहीम ने इसकी विशेषताओं का दो पंक्तियों के एक दोहे में सटीक वर्णन किया है | कितना सरल, कितना अर्थवान :

दोहा दीरध अरथ के, आँखर थोरे आन्हि |

ज्यों रहीम नटकुंडली, सिमटी कूदि चलि जांहि ||

(हिंदी प्रचारक पत्रिका, जुलाई २०१८, पृ.12)

विश्वनाथ प्रसाद की कविता १९४०-४१ में छपी थी 'माँ' पर | प्रारंभिक पंक्तियाँ थी :

सब देवदेवियाँ एक ओर,

ऐ माँ मेरी तू एक ओर |

माता को देव देवियों से महान माना गया था | यहाँ डॉ. रामवृक्ष की कविता है 'माँ' जिसमें माँ के सारे दर्द, दुःख, विवशता, पराधीनता एक साथ मूर्त हो उठे हैं | अंतिम पंक्तियाँ कहने के लिए आत्मा विवश कर देती है :

बच्चे खूब सयाने होकर माँ को सीख सिखाते हैं |

कोड़ी के मुहताज रहे जो लाखों लाल कमाते हैं |

बड़े हुए इतने अब माँ को माँ कहते शरमाते हैं |

गाँव–गाँव अपने बच्चों के गुण ही लेकिन गाती माँ |

इतना सब करती है, लेकिन बदले में क्या पाती माँ |

(चक्रवाक, नई दिल्ली, अप्रैल–जून २०१८, पृ.76)

कैसी विडंबना है | नियति का कैसा मजाक है कि सबका बोझ उठानेवाली माँ स्वयम बोझ कहलाने लगती है | बहुओं की कतरन से काम चले या जामाता की फटकार मिले, वह रहती सदा संतुष्ट | संतान हित समर्पित | प्रभू से उनके योगक्षेम की अहर्निश प्रार्थना करते हुए | माँ के त्याग विराटता का यह कैसा आख्यान है |

सुरीति रघुनन्दन की कविता है 'प्रेम' (भाषा, जुलाई–अगस्त २०१८) | इसमें आधुनिक युग की वैज्ञानिक पद्धति द्वारा प्रेम प्रस्ताव देना, स्वीकृति मिलना, विबाह फिर मधुयामिनी आदि का जीवंत वर्णन है | कहना नहीं होगा कि प्रेम पर वैज्ञानिकता का कितना व्यापक प्रभाव पडा है | नकारात्मक पर विचार किया जाए, तो यही पक्ष प्रबल है | प्रेम, मधुयामिनी आदि का सीधे व्यावसायीकरण हो गया है :

"कमाल का हुनर है आज की पीढ़ी में/भावनाओं का व्यावसायीकरण हो गया/प्रेम तो दिल के गुब्बारे के रूप में/नित नए प्रारूप में शो–केस में रखा/दुकानों की शोभा बढ़ा रहा है" |

(भाषा, जुलाई–अगस्त २०१८, पृ.174)

स्मार्ट फोन ने हिंदी की ही नहीं, अंग्रेज़ी की भी दुर्गति कर दी है | पारस्परिक वार्तालाप शून्य की कगार पर आ गया है | मोबाइल बना है मध्यस्थ |ऐसा प्रतीत हो रहा है कि एक दिन मानव बोलना ही भूल जाए | यह बाजारवाद, भूमंडलीकरण का प्रभाव है |

'मुड़िया पहाड़' मारीशस के पल पल के इतिहास का साक्षी रहा है | उसने देखा है इस देश के शरीर क यातना भोगते, पीड़ा सहते और कोड़ों की मार खाते | उसे खून के आँसू बहाते देखा है | इस पहाड़ ने यहाँ के लोगों को अपने आत्मबल,देशप्रेम, स्वाभिमान के लिए पलपल संघर्ष करते देखा है | दिनकर ने हिमालय से युग के ज्वलंत प्रशन पूछे थे | हिमालय ने उत्तर भले ही नहीं दिया हो पर उसका मौन बहुत कुछ कह गया था | इसी प्रकार यहाँ मुडिया पहाड़ को सारा दुःख दर्द सुनाया जाता है और उसका मौन उत्तर मानो सारी समस्याओं का समाधान देता है :

"धड़कता रहा हूँ, हर ख़ुशी में/सहमत रहा हूँ हर दर्द में/पिघला हूँ पल-पल के आघातों से/धधता हूँ जुल्म के आघातों से/हाँ मैं मुड़िया पहाड़" |

(भाषा, जुलाई-अगस्त २०१७, पृ.176)

वह देश की हर ख़ुशी, उपलब्धि, जय-पराजय से संबंध रखता है, जिसकी जीवंत अभिव्यक्ति इस कविता की मूल चेतना है |

भागलपुर से प्रकाशित 'सुस्भाव्य' (संपादक दयानंद जायसवाल)में कई कविताएँ, ग़ज़ल है | उनकी चर्चा वांछनीय है | अशोक मिजाज, अमरेश सिंह भरोदिया, उत्कर्ष अग्निहोत्री की गजलों पर संक्षिप्त टिप्पणी है यह | मिजाज कोई बनावट स्वीकार नहीं करता-"हम बनावट को तो स्वीकार नहीं कर सकते" | अमरेश ने सदियों से नहीं देखि है हंसी अपने होठों पर | वह तो आंसुओं का उपहार ढो रहा है | वक्त की हिमायत के लिए सर झुकाकर उत्कर्ष ईमान गिराता है |

माँ की महानता विराटता का व्यापक वितान ताना है, डॉ. प्रतिमा माही ने 'वो तो माँ है मेरी' में | वह लाख दूर हो पर संतान के निकट रहती है सदा | कोई उसपर प्रहार करे, झट वह कवच बन जाती है | उसे लाख दर्द हो, संतान को इसका भान नहीं होने देती है | सदा मुस्कुराती रहती है :

कब कोई चोट आकर लगाता मुझे

हाथ उसका कवच बन बचाता मुझे

(नव निकष, कानपुर, सितम्बर २०१८, पृ.15)

वीरभद्र कार्की ढोली को चिंता है कि क्यों उसका गाँव शहर बन गया : "टुकड़े-टुकड़े खेतों पर सड़क बन गए/जोतने वाले मेहनतकश हाथ पत्थर तोड़ते, कोलतार बिछाने में व्यस्त हैं आजकल" |

(नव निकष,सितम्बर २०१८)

द्वीप लहरी (संपादक डॉ.व्यासमणि त्रिपाठी) पोर्टब्लेयर से नियमित प्रकाशित होती है | आठ दस कविताएँ हर अंक में रहती हैं | 'विश्वमय नववर्ष' में पारस्परिक प्रेम, मिलन अपनत्व की ऊष्मा है :

"विश्वभर में फैले एक आदर्श गले से गले/बिछड़े-पिछड़े भी मिले सहर्ष" |

जगदीश नारायण राय 'मानते या नहीं' में स्वीकारते हैं प्यार है | अपनत्व है / बिना इसे स्वीकार किए, जीवन में उतरे इसकी अनुभूति नहीं हो पाती है :

प्यार हीं प्यार है आंगने-आंगने |

प्यार को तुम मानते या नहीं ||

"ऐसी ही माँ है / आपकी जो माँ है / वही मेरी माँ है" : यह स्वीकार बिना प्रेम, सौहार्द्र विकसित नहीं हो पाते |

भाषा (मई–जून २०१८) में कुछ कविताएँ हैं, जो अर्थवान, प्रेरक और अनुभूतिसंपन्न हैं | ग्वालियर के प्रसिद्द कवि महेंद्र भटनागर कला को अपनी कविता में व्यख्याचित करते हैं | कविता आज के ज्वलंत प्रासंगिक प्रश्नों के उत्तर दे | कहीं अन्धकार नहीं हो | निराशा के बादल नहीं छाए रहें | व्यक्ति कहीं कराह नहीं रहे हों | सर्वत्र आशा, विशवास, पारस्परिकता की बंशी बजती रहे :

व्यक्त सिर्फ आज के सवाल चाहिए

तम नहीं प्रभात लाल लाल चाहिए

व्यक्ति की करुण कराह है उतारनी

आग जो दबी उसे पुनः उभारनी

सव कुरीतियाँ मिटें, प्रहार जलजला |

'स्व', अस्मिता, स्वाभिमान की आग निरंतर जलती रहे | इसी से होगा मानवता का कल्याण |

ए० कीर्तिवर्धन चाहते हैं मनुष्य का प्रकृति से तादात्म्य हो | प्रातः काल चिड़ियों का जागना, चहचहाना और खुले गगन में विचरण करना हमें प्रभावित नहीं कर पाया, तो हमारा जीवन मानव का जीवन नहीं है | एक स्थाणु (ठूँठ) भर है | यह कोई भावना,कोंपल नहीं फेंक सकता |

यह किसी क्रान्ति (जिहाद), आन्दोलन का कतई लक्षण नहीं है कि धर्म–परिवर्तन के नाम पर लोगों को डराना, धमकाना खून की होली खेलना | संप्रदायवाद के संकीर्ण दायरे में रहकर जाति–भाषा, मजहब के नाम पर दंगे करवाना और उस आग में अपने स्वार्थ की रोटी सेंकना | तारिक असलम तसनीक की यह जिहाद नहीं है–कविता इसी भाव को अभिव्यक्त करती है | मजहब बदलने से कुछ नहीं होगा–

“ज़रूरी है कि / उसकी प्रत्येक जायज़ बातें / सुनी जाएँ / जमीन से आसमान तक एक ही पगडंडी चुनी जाए” | (यह जिहाद नहीं है तस्नीम)

इसी अंक में भगवान वैद्य प्रखर की कविता है ‘बोलो न पापा’ जिसमें चिड़ियों के साथ घुलने–मिलने, उनके समान स्वछंद, उन्मुक्त विचरण करने का भाव है :

“बागवानी के समय वह आपको ऐसे निहारती / जैसे उसकी अपनी बगिया में काम करनेवाले माली हों आप” |

(पृ.216)

पक्षियों की तदाकारिता की सुंदर व्यंजना है यहाँ |

प्रसिद्द व्यंग्यकार यज्ञदत्त शर्मा के परलोक गमन पर उनकी कुछ कविताएँ 'व्यंग्य यात्रा' (जुलाई–सितम्बर) में आई हैं– 'बेटे के लिए' , 'चींटी काटती है' , 'धुप बहुत खुश हुई' , 'अनाया के लिए' , 'पेड़ 1,2,3,4,5,6,7' | बेटे के रूप–सौन्दर्य का वर्णन कितना सरल, सहज और मनभावक है :

"गोल–गोल छोकरा है / फलों का टोकरा है / गालों में सेब है / होठों में गुलाब" |

(पृ.5)

अपनी बच्ची की ख़ुशी का प्रकृति के साथ तादात्मय कितना मनिभावन है :

"एक दिन / मेरी बच्ची / अचानक खिलखिला पड़ी / उसके पास धूप आकर हो गयी खड़ी" |

(उपरिवत, पृ.15)

प्रकृति के प्रति यज्ञदत्त शर्मा का कैसा लगाव है, उसका सौन्दर्य उन्हें कितना भाता है, यह इन पंक्तियों से पता चलता है :

"जब जब पेड़ / सौन्दर्य प्रतियोगिता में / भाग लेता है | लडकियां हड़ताल कर देतीं हैं" |

(व्यंग्य यात्रा, जुलाई–सितम्बर २०१८, पृ.16)

सत्या सिंह घूस और बेईमानी की कमाई पर कितना मारक व्यंग्याघात करती है : "कर लो काली लाख कमाई / कर लो लाख फरेब / अंत समय सब रह जाना है / नहीं कफ़न में जेब" |

(संकल्य, जनवरी–मार्च २०१८, पृ.26)

क़ानून के चिकने मुहावरों, शब्दों को हवा में उड़ाकर एक दिन आदिम जन उठेंगे, तब देश के नागरिक ज़रा सोच लें क्या होगा तब संसद का हाल ?

इसी अंक में वीरेन्द्र सिंह विद्रोही का व्यंग्य बड़ा मारक बन पड़ा है, जो भोथरी चमड़ी को छेद दें और पत्थर दिल को सोचने के लिए विवश करें : "निजाम ध्रितराष्ट्र सत्ता में बैठे / फिर क्यों न फिरें दुर्योधन ऐंठे" |

(संकल्य, जनवरी–मार्च २०१८,पृ.24)

सूर्य प्रकाश मिश्र जिद में अपने बच्चपन की ओर लौट चलते हैं और तब तक के जिद का बड़ा व्यापक वितान तानते है

"अपनी चर्खी में धागे भराने की जिद / आसमां में पतंगे उड़ाने की जिद / छोटे हाथों में भारी–सी चर्खी लिए / ठान लेना सभी को हारने की जिद" |

(नवनिकष, मई २०१८, पृ.43)

आज पर्यावरण, धरती, जीवजंतु क्या मनुष्य के अस्तित्व पर ही प्रश्नचिन्ह लग गया है | कारण, धरती उसके वृक्षों जीव–जंतुओं, तालाबों का दिन–प्रतिदिन शोषण, क्षरण हो रहा है तो भला मानव का अस्तित्व कभी सुरक्षित रहेगा ?

प्रजातंत्र की परिभाषा है जनता का, जनता द्वारा जनता के लिए शासन | परन्तु इसकी गिरती हालत, मतदाताओं, विधायकों, सांसदों की खरीद–फरोख्त को ध्यान में रखकर प्रो० जुराज ने इसकी परिभाषा इस प्रकार दी हैं : Government of the cattle by the cattle and for the cattle- मवेशी का, मवेशी द्वारा, मवेशियों पर शासन | इसी तथ्य को थोड़ी शिष्टि भाषा में सुरभी सुरेन्द्रन 'शतरंज' कविता में व्यक्त करते हैं :

"यह पहले था राजाओं का खेल / हो गया अब नेताओं का खेल" | ये लोग जनता को आपस में लड़ाकर तंत्र का मजा लेते हैं– "इस खेल में धर्म रहा दलाल / पूँजी रहा खजांची / नारी रहा मसाला / सत्ता पर कब्ज़ा रखने के लिए दल बदल की नीति" |

(नवनिकष, फरवरी २०१८, पृ.69)

शौकत इकबाल साहब का जगप्रसिद्ध तराना है "सारे जहाँ से अच्छा हिन्दोस्तां हमारा / हम बुलबुले हैं इसके, यह गुलसिताँ हमारा" |

उन्होंने ही प्रजातंत्र की दयनीयता पर टिप्पणी करते हुए कहा था– "यहाँ वोट दिया नहीं जाता है, खरीदा जाता है" | फिर भारत के प्रजातंत्र का नग्न सत्य छिपा कहाँ है किसी से ?

प्रत्येक आतंकवादी देश का नाश ही चाहता है | वह भला विकास, सृजन, उन्नति क्यों चाहेगा ?

कहाँ करना है बमों की बरसात, वह जानते हैं

हरेक आतंकवादी के यही ख़्वाब होते हैं |

योगेन्द्र प्रताप 'मौर्य' को 'बाबू जी के कंधे' की चिंता है | बाबूजी के कंधे बच्चों की बेरोज़गारी, प्रजातंत्र की वायदाखिलाफी, सांप्रदायिकता की आड़ ले जगह–जगह भड़काए दंगों का बोझ कब तक सह पाएँगे भला ? रोज़गार–सृजन के वायदे खूब करती है सरकार | परन्तु निराशा, जनजन की ख़ुशी की हत्या कर रही है दिनदहाड़े | चारों ओर अत्याचार, व्यभिचार, दुराचार का बोलबाला है | फिर यहाँ कौन अमन चैन की वंशी बजाएगा | रामराज्य की कल्पना आकाश कुसुम बनकर रह गई | कारण घृणा, द्वेष, वैमनस्य की आग में सब स्वाहा हो गया |

मोहनी पाण्डेय ठीक ही कहते हैं– "शकुनि की चालों में फंसा हर वीर है / एक नहीं कई–कई दुःशासन खींच रहे चीर है" |

(मोहनी पाण्डेय, नवनिकष, फरवरी २०१८, पृ.37)

कहने को तो सब कुछ कुशल है पर यह आत्मवंचना है | कारण, कुशलता कहीं नहीं है | दूर–दूर तक निराशा, हताशा का रेगिस्तान पड़ा है | इसे ही डॉ. सुरेश उजाला व्यक्त करते हैं कि आज के वातावरण में विष घुला हुआ है | जहाँ जाएँ, तड़प, विवशता, पराजय, विश्वासघात :

कशमकश में ज़िन्दगी ओंधी पड़ी है

प्रश्न बनकर सामने बिटिया खड़ी है

रास्ते में बेड़ियाँ हैं छलकपट की

हौंसले के हाथ बांधे हथकड़ी है ||

(प्रगतिवार्ता, साहिबगंज, पृ.41)

उमाश्री (प्रोत्साहन : महिम सेतपाल, मुंबई) को इसलिए क्रोध और झल्लाहट है कि जो देश को आजीवन लूटते रहे, उनके मरने पर परचम झुकाना क्या उसका अपमान नहीं है ?

जिन्होंने लूटा है देश को उनके मरने पर

क्यों मेरे देश के परचम झुकाए जाते हैं |

इतना हीं नहीं, ये पीर पैगंबर, मंदिर, मस्जिद है मजहबों की दुकानें |जब चाहो, जहाँ चाहो, आसानी से दंगे कराए जाते हैं :

ये मजहबों की दुकानें है, यहाँ पै ठेके से

जहाँ कहो, वहीँ दंगे कराए जाते हैं |

विडंबना, विसंगति ऐसी है कि जो नेता उड़ाते थे शान्ति कपोत, वही बंगले में उसे भोज में उड़ाते हैं | शान्ति कपोत कैसे हो जाता है पेट कपोत | उमाश्री देश की दुर्व्यवस्था, मूल्य– संकट, मूल्य– क्षरण, बेटियों की कुर्बानी, किसानों की आत्महत्या आदि पर धारदार व्यंग्यबाण बरसाती है :

देश सेवा की राहें कड़ी हो गइ

कुर्सियां आदमी से बड़ी हो गई |

डॉ. एक्टन ने लिखा है की सभी सत्ताएं भ्रष्टाचार करती हैं | निरंकुश सत्ता निरंकुशता से भ्रष्टाचार फैलाती हैं–

All power corrupts and absolute power corrupts absolutely. धर्म, मज़हब, मंदिर, मस्जिद भी विघटन, दंगों की भूमि बन गए है :

नकाब धर्म का चेहरे से उड़ गया ऐसे

कि संत थानों में जेलों में पाए जाते हैं |

यह मूल्यक्षरण, नीति, नियम, मर्यादा का हनन आखिर मनुष्य का कितना हित साध सकेगा ?

प्रगति गुप्ता की चार कविताएँ हैं– 'अल्हड़–सा सृजन' , 'काल की माँग' , 'रीले वासन' | पहली कविता में हवा के अल्हड़पन को व्यक्त किया गया है | वह अनपढ़, अल्हड है, मासूम–सा है और उसका व्यवहार ? "इनकी मदमस्ती में देखिए / कैसे पत्ते, फूल और / उनसे जुड़े रंग / हर पल / सब विखरने को तैयार" / ऐसी ही चाहतें होती हैं निरा मासूम | कुछ–कुछ अल्हड़ हवाओं की तरह | हम उसी में बंधे, फँसे लीन निरंतर चलते रहते हैं | एक मोहक बंधन में बंधे, फँसे फिर भी प्रसन्न, मस्ती में लीन | सृजन में पक्षी शावक होते हैं | माँ उसे अधपचा दाना खिलाती है | एक दिन वह बड़ी हो जाती है | सीमाहीन गगन में विचरने लगती है |

"कलरव का सर्वत्र फैलकर / आकाश हो जाना देखते जनक..... / खुश होते पुनः स्वयं को समेट / नव नीड की नींव रख" |

(मधुमती, मई २०१८, पृ.38)

जब पूरे ब्रह्माण्ड में एक ईश्वर ही था, कुछ नहीं था, तो वह भी अकेले अकेले ऊब गया | उसने घोषणा की "एकोड़हम् बहुस्याम" | मैं एक हूँ अनेक हो जाऊँ | सृजन कायही भाव है |

काल की माँग में मनुष्य की चाह मिटती ही नहीं है । एक इच्छा पूरी हुई, दूसरी सामने खड़ी है । फिर उसकी पूर्ती में लग गए– "हर काल की होती है छोटी–सी माँग.....! हर इंसान विवश / इसी मांगे और पूर्ती और पूर्ती के चक्र में उलझा हुआ" ।

(मधुमती, मई २०१८, पृ.38)

दिनकर ने उर्वशी में लिखा है कि मनुष्य जो पा लेता है, भोग लेता है, उसके प्रति विरक्त हो जाता है । फिर नए के संधान में लग जाता है ।

वश में आई हुई वस्तु से,

उसको तोष नहीं है,

जीत लिया जिस को,

उससे संतोष नहीं है ।

गले में लाख सुगन्धित माला हो, वह आकर्षित नहीं करती है, क्योंकि वह प्राप्त हो गई है । जिसको जीत लिया, उससे विकर्षण उत्पन्न हो जाता है और मनुष्य इसी चक्र में घूमता रहता है आजीवन नितनूतनता की चाह लिए । यही है काल की माँग । हर इंसान विवश है । इसी माँग और पूर्ती के चक्र में उलझा हुआ रहता है आजीवन / कभी मुक्त नहीं जो पाटा है / और यही जीवन है । यही सत्य है ।

कवयित्री ने मनुष्य की तुलना खाली वर्तन से की है | ज़िन्दगी की चिल्लपों, भागदौड़ में इंसान इंसान होकर भी तटस्थ नहीं रहता | भावों से भरा इंसान हो या भोज्य से भरा वासन– दोनों एक समान हैं | अग्निपुराण में बताया गया है :

अपारे काव्य संसारे कविरेव प्रजापति |

यथास्मै रोचते विक्रै तथास्मै सृज्यते ||

यहाँ कवि कभी अक्षर की खेती करता है, तो कभी शब्दों के वस्त्र बुनता है | स्वर–व्यंजन के बाग़ लगाकर मात्राओं की कलियाँ चुनता है– "मैं कवि कृषक के जैसा / करता खेती कविताओं की / और कभी बुनकर के / ढकता आब नरवनिताओं की |

(मधुमती, मई २०१८,पृ.41)

सुदामा कृष्ण से आशा करता है, यह वाजिब नहीं है | यह उसके मान की हत्या है | सुदामा में भी एक चिंगारी छिपी है | काश, इसे वह समझ पाता और कर सकता अपने मान की रक्षा | संजय नायक शिल्प की कविता है 'कान्हा से क्यों आस सुदामा' | यह सुदामा को उसकी पहचान कराने का प्रयास है | मनुष्य अपनी शक्ति, सामर्थ्य पहचान पाए, उसे उजागर करने में लगा दे अपनी पूरी शक्ति, तो उसकी विजय निश्चित है | यह प्रयास

परमुखापेक्षित के विरुद्ध 'स्व' की पहचान और आत्मविश्लेषण का है | 'अगले युग में' (विश्वंभर पाण्डेय व्यग्र) महाभारत का कारण बताया गया है कि अपनों की उपेक्षा सदा महाभारत कराती है | इच्छामृत्यु का वरदान बड़ा अभिशाप बन जाता है |

यह सर्वेक्षणात्मक लेख काव्य की अंतर्यात्रा भले नहीं हो, उसकी प्रदक्षिणा अवश्य है | शरशय्या पर पड़े भीष्म की स्थिति का बोध कर वाणी को विराम देता हूँ : "जो करे नियति जैसा / काल न कर पाता है / सत–असत अंधे हो जाते, पथिक भ्रम जाता है / मौन तपस्या कभी–कभी, घातक बन जाती है / जीवन की ये घाडियाँ पातक बन जाती हैं" | ईश्वर न करे कोई निष्ठा, कर्तव्यपरायणता और प्रतिज्ञा के द्वंद में आजीवन पड़ा रहे पर सत्य–संधान न कर पाए | यह यक्ष प्रश्न पता नहीं कब तक अनुत्तरित रहेगा | पंडित सुरेश नीरव कहते हैं :

संसद में नोट, नोट में संसद भी देखि है

बापू तुम्हारे ख्व्वाब का सौराज कैसा है |

प्रो० एवं अध्यक्ष हिंदी विभाग, विनोभाभावे–
विश्वविध्यालय,हजारीबाग, झारखंड |

फोन.नम्बर :– 09065197429

निराला की परवर्ती कविताओं का वस्तुगत सौन्दर्य

डॉ. सुनील कुमार धूबे

आपने प्रारंभिक रचनाओं में कल्पना, आवेग, रूढ़ियों आदि का वर्णन प्रमुखता से करते दिखाई पड़ते हैं, परन्तु अपनी परवर्ती रचनाओं तक आते–आते कवि निराला का स्वर अत्यंत व्यंग्यपूर्ण हो जाता है | वह निराला से विद्रोही निराला बन जाते है | कवि 'तुलसीदास' की आध्यात्मिक एवं सांस्कृतिक भवभूति से देश की दयनीय स्थिति का अवलोकन करके कवि का हृदय दग्ध हो उठा जिसके फलस्वरूप कवि निराला का स्वर अत्यंत व्यंग्यात्मक हो जाता है, वे समाज के कार्यों को देखकर के विद्रोही बन जाते हैं | उनकी पहली परवर्ती रचना 'कुकुरमुत्ता' है जिसमें कवि एक सांकेतिक कथा के माध्यम से गुलाब और

कुकुरमुत्ते को प्रतीकात्मक रूप से ग्रहण किया गया है | उन्होंने गिलाब को पूंजीपतियों का प्रतीक बनाया है एवं कुकुरमुत्ते को शोषितों का प्रतीक बनाया है | इस कथा का स्थान कम नहीं है, सभी अपनी–अपनी जगहों पर श्रेष्ठ हैं |

'कुकुरमुत्ता' समाज के निम्न वर्ग का द्योतक हैं, वह गुलाब से अपने विषय में कहता हैं :–

'तू हैं नकली, मैं हूँ मौलिक' |[1]

माली की पत्नी गोली तथा नवाब की पत्नी बहार में मिलती हैं, एक दिन गोली अपने यहाँ बहार को कुकुरमुत्ते का कबाब खिलाती हैं | जो बहार को बहुत पसंद आता है, बहार अपने पिता से अपने घर पर कबाब बनवाने के लिए कहती है तो नवाब अपने नौकर से बनाने के लिए कहता है तब नौकर कहता है :–

'फरमाएँ मआफ़ खता

कुकुर्मुता अब उगाये नहीं उगता' |[2]

यही इस कथा का मूल तत्व है जो इन दो पंक्तियों में आ गया है | सामान्य वर्ग के व्यक्ति का अपना महत्त्व हैं एवं बड़े व्यक्ति का अपना महत्त्व है, किसी एक का महत्त्व किसी से कम नहीं कहा जा सकता है |

कुकुरमुत्ता की भाषा सहज एवं चुटीली हैं | व्यंग्य तथा विनोद भी हैं किन्तु यह घृणारहित हैं | कवि ने सामाजिक

विडम्बनाओं से मुक्ति का आह्वान किया है जो इनके ओज पौरुष तथा मानवता प्रेमी होने का सुंदर उदाहरण प्रस्तुत करता है |

कुकुरमुत्ता के बाद कवि अणिमा की रचना करते–करते यह देखता है– यह पूरा संसार दिव्तीय विश्व युद्ध की अग्नि में जल रहा है भारत उससे अलग नहीं हैं | ऐसी अवस्था में कवि निराला का हृदय विषाद रेखा से भर जाता है | जिसके फलस्वरूप कवि का गीत कहीं भक्तिपरक, कहीं रहस्यात्मक और कहीं व्यक्तिगत पीड़ा से भर गया है | कवि निराला ऐसे समय में भगवान् से प्रार्थना करते हैं :–

'दलित जन पर करो करुणा |

दीनता पर उतर आये |

प्रभु तुम्हारी शक्ति अरुणा' |[3]

कवि निराला अपने 'अणिमा' काव्य संग्रह में अपने आत्मीय तथा लोक–कल्याणकारी महापुरुषों का प्रशस्ति गान प्रस्तुत किया है – 'भगवान् बुद्ध के प्रति' , 'संत कवि रविदास के प्रति' आदरणीय प्रसाद जी के प्रति आदि | ये प्रशस्तियाँ संबोधन गीत के रूप में रची गई हैं | अपने इस काव्य संग्रह से निराला के सामाजिक यथार्थ का चित्र प्रस्तुत किया हैं –

'चूँकि यहाँ दाना हैं

इसलिए दीन हैं, दीवाना हैं,

लोग हैं, महफ़िल हैं,

नग्में हैं, साज हैं, दिलदार हैं और दिल हैं,

शम्मा हैं, परवाना हैं,

चूँकि यहाँ दाना हैं' |4

कवि निराला ने इन यथार्थ चित्रों को प्रस्तुत करने के लिए जिस भाषा का प्रयोग किया है वह अत्यंत ही सहज हैं अतः अणिमा की गीत, लय–गति एवं छंद की दृष्टि से अत्यंत समृद्ध हैं |

विद्रोही कवि निराला की रचना 'बेला' में अलग–अलग बहरों की गजलों का सुंदर प्रस्तुतीकरण किया गया हैं | 'बेला' की रचना करते समय कवि का हृदय अत्यंत शान्तावस्था में था, वह संसार की असारता से परिचय पा चूका था कवि यह समझ चुका था कि व्यक्ति के प्रत्येक कार्य तथा सम्बन्ध के पीछे स्वार्थ ही छिपा हुआ हैं :–

किनारा वह हमसे किये जा रहे हैं,

दिखाने को दर्शन दिये जा रहे है' |5

समाज में चारों तरफ भ्रष्टाचार, अत्याचार, पूँजीवाद के कारण जनता की दुर्दशा हो रही हैं, गरीब लोग गरीब होते जा रहे हैं और अमीर लोग लगातार अमीर होते जा रहे हैं जिससे समाज में एक खाई पैदा होती जा रही है | कवि निराला इसका खुलकर विद्रोह करते हैं एवं कहते हैं :–

भेद कुल खुल जाय वह सूरत हमारे दिल में हैं,

देश को मिल जाय जो पूँजी तुम्हारे मिल में हैं' |[6]

'नये पत्ते' काव्य संग्रह में कवि निराला पुनः यथार्थ की दुनिया का वर्णन प्रस्तुत करते हैं | उनकी रचनाओं में व्यंग्यबाण तेज चलने लगे है | कवि जन साधारण की भावनाओं से अपना तादात्मय स्थापित करने का सार्थक प्रयास किया है | 'नये पत्ते' काव्य संग्रह में भी शोषितों के प्रति सहानुभूति तथा पूँजी–पतियों के प्रति अपने व्यंग्यबाण की वर्षा की है | नये पत्ते में निराला ने ग्रामीण जीवन के विभिन्न चित्र प्रस्तुत किये हैं |

'आराधना' भी महाप्राण के भक्ति को आगे बढाने वाली कड़ी हैं | जैसा कि इसके नाम से ध्वनित हो रहा है, इसमें कवि का आराधक रूप और अधिक मुखरित हुआ है |

कवि अपनी इन्द्रियों को वश में कर अपनी पशु प्रवृति पर विजय प्राप्त करके वह भगवान् के चरणों में अपने आप को प्रस्तुत करता हुआ दिखाई पड़ता है | अतः आराधना में कवि का आराधक रूप ही ज्यादा मुखरित हुआ है | लोकभाषा को

साहित्यिक सौष्ठव प्रदान किया गया है | ये गीत सहज एवं सरल है | अधिकाँश गीतों में लोकधुनों का भी विधान किया गया हैं |

गीताकुंज में आते–आते कवि निराला के अंदर स्वकल्याण एवं जनकल्याण दोनों की भावनाओं का बड़ा ही सुंदर समन्वय स्थापित किया गया है | प्रस्तुत रचन में कवि का आनंदमय स्वरूप दिखलायी पड़ता है तो कहीं उनकी वेदना भी स्पष्ट रूप से परिलक्षित हो जाती है | 'जिधर देखिये श्याम विराजे' वरद हुई | शारदा जी हमारी आदि में भक्तमन उस असीम को पुकार उठा हैं | कवि के हृदय में उस अज्ञात सत्ता के प्रति प्रेम, समर्पण, त्याग आदि भावनाएं आ गयी हैं |

महाप्राण निराला जीवन भर समाज में लड़ते रहे मगर समाज कभी भी बदल न सका | उन्होंने समाज को सब कुछ प्रदान कर दिया मगर समाज ने उन्हें दुःख के अलावा कभी कुछ नही न दे पाया | कवि निराला समाज से ऊब जाते हैं मगर समाज अपने जीवन की अंतिम आस्था आ जाने पर वे पुनः कह उठते हैं :–

'पुनः सवेरा एक और फेरा हो जी का' |[7]

संदर्भ ग्रन्थ सूची :–

1. कुकुरमुत्ता, पृष्ठ. 41
2. वही. पृष्ठ. 61
3. आणिमा, पृष्ठ. 6

4. वही. पृष्ठ. 86
5. बेला, पृष्ठ. 68
6. वही. पृष्ठ.75
7. संध्याकाकली

डॉ.सुनील कुमार धूबे,

असिस्टेंट प्रोफेसर–पं. महावीर प्रसाद त्रिपाठी,
महाविद्यालय, मीरजापुर

स्त्री विमर्श एक स्वस्थ दृष्टिकोण

डॉ. सचिन कुमार

पिछली शताब्दी के प्रौद्योगिकीय एवं आर्थिक परिवर्तनों के कारण न केवल सुस्थापित कार्य प्रणाली ही बदली बल्कि सोचने और कार्य करने की प्राचीन प्रवृतियाँ भी समाप्त–सी हो गई, परिणामस्वरूप 'स्त्री दृष्टिकोण' और 'स्त्री के प्रति दृष्टिकोण' में भी बदलाव आया, उसकी 'स्व' की अवधारणा को भी बल मिला, नारीवाद रचना दृष्टि आधुनिक युग की कुछ ऐसी ही स्थितियों की उपज है, यूं तो विश्व में महिला मुक्ति का लंबा इतिहास है, लेकिन १९वीं शताब्दी में यह विश्वव्यापी आन्दोलन बन गया और अमेरिका तथ यूरोप से शुरू यह आन्दोलन भारतीय समाज तक भी पहुँचा, भारत में स्वाधीनता आन्दोलन, विभिन्न समाज सुधारकों की कोशिश तथा पश्चिम में रचना विचार और अनुभूति के स्तर पर महिलावादी दृष्टि के साथ संपर्क ने इसका विस्तार ही किया, जिसके परिणामस्वरूप भारत में स्त्री की संघर्ष प्रक्रिया का आरम्भ हुआ, स्त्री की इस संघर्ष प्रक्रिया का पहला मोर्चा उसका अपना आंतरिक जीवन व समाज था तो दूसरा सामंतवाद, पूँजीवाद, उपभोक्तावाद, बाजारवाद आदि बाह्य शक्तियों के खिलाफ आक्रोश व विद्रोह भी था |

नारीवाद अथवा स्त्री विमर्श पिछली शताब्दी का एक गंभीर विचार केन्द्रित मुद्दा रहा | नारीवाद पुरुष विरोधी झंडा लेकर आगे चलने वाला नकारात्मक आन्दोलन नहीं बल्कि एक स्वस्थ मानवीय दृष्टिकोण है, इसकी व्यापकता, विस्तार, विचार और

आकार को स्पष्ट रूप से विवेचित सिद्ध और स्थापित करने वाली कई चर्चित कृतियाँ इस बीच आई हैं जो नारीवाद अथवा स्त्री विमर्श के बारे में भ्रांतियों को दूर कर उसके सत्य को स्थापित करके नारीवाद अथवा स्त्री विमर्श की स्वस्थ व्याख्या करती हैं |

अरविन्द जैन कृत 'औरत होने की सज़ा' :- साहित्य, समाज, राजनीति आदि लगभग सभी क्षेत्रों में तो स्त्री परिधि पर है ही, परन्तु स्वतंत्रता व समानता का पक्षधर हमारा संविधान भी पुरुष सत्ता के हाथ का खिलौना बना हुआ है | 'औरत होने की सज़ा' स्त्री को प्राप्त संवैधानिक अधिकारों की सच्चाई खोल कर पुरुष के अनुकंपा भाव की धज्जियाँ उदा देती है, अपने आप में यह पुस्तक इसलिए भी महत्वपूर्ण हो जाती है कि एक पुरुष यहाँ अपने ही पेशे की खामियों को उजागर कर स्त्री पुरुष के लिए समान नागरिक अधिकारों की वकालत करता है, चलिए एक बार फिर ही सही, यह प्रमाणित तो हो गया कि नारीवाद कोई भ्रमक धारणा नहीं बल्कि एक मानवीय दृष्टि है जो स्त्री या पुरुष किसी की भी हो सकती है | अरविन्द जैन विवाह, बलात्कार, संपत्ति, तलाक, निकाह आदि के विभिन्न केसों के माध्यम से क़ानून की कमियों और उनके एकांगीपन को उजागर करते हैं शायद इस समय बच्चों के साथ यौन उत्पीडन व बलात्कार सबसे बड़ा मुद्दा है परन्तु हमारा संविधान बिलकुल सामंती अंदाज़ से 15–16 वर्ष की बालिका के साथ हुए बलात्कार को भी कहकर न्यायसंगत बना देता है कि यह पहले से संभोग कर चुकी है | इसी प्रकार भंवरी देवी बलात्कार काण्ड में जज यह कहकर सहज ही पल्ला

झाड लेता है कि समाज के प्रतिष्ठित लोग ऐसा घिनौना कृत्य नहीं कर सकते | अधिकार जब शोषण का तांडव करने लग जाए तो समाज व स्त्री का भविष्य क्या होगा स्वयम ही सोचा जा सकता है |

सरला माहेश्वरी कृत 'समान नागरिक संहिता' :- सरला माहेश्वरी एक देश में रहने वाले सभी संप्रदायों के लोगों के लिए समान नागरिक संहिता की माँग करती हैं, सरला माहेश्वरी राजनीतिज्ञों के खोखले दावों और झूठों की पोल खोलकर रख देती हैं जो शब्दों में तो महिलाओं को समान अधिकार देने की वकालत करते हैं, परन्तु व्यवहार में वह वोट पाने भर का एक नुस्खा मात्र होते हैं | आज़ादी के ५२ सालों में 'हिन्दू कोड बिल' तथा शाहबानों प्रकरण के माध्यम से समान नागरिक संहिता की आवाज़ बुलंद करतीं हैं | वह स्पष्ट करती हैं कि समान नागरिक संहिता का मुख्य उद्देश्य "स्त्रियों के हक में निजी कानूनों को समाप्त करना भर नहीं बल्कि औरतों के आर्थिक लाभ व कानूनी दृष्टि से उत्थान भी है" |

कात्यायनी कृत 'दुर्ग द्वार पर दस्तक' :- सरला माहेश्वरी की मूल चिंता का विषय यदि समान नागरिक संहिता है तो 'दुर्ग–द्वार पर दस्तक' में कात्यायनी की चिंता का विषय–पूंजी पर पुत्राधिकार के कारण, साम्राज्यवादी पूंजी पुत्रों द्वारा स्त्री के श्रम व शरीर पर उत्पीडन को रेखांकित करना | एक तरफ कात्यायनी नारी मुक्ति आन्दोलन को दबाने वाले दमनकारी पुरुषों को आड़े

हाथों लेती हैं तो दूसरी तरफ बहुराष्ट्रीय कंपनियों के उस आर्थिक तंत्र को भी खोलती हैं जो तीसरी दुनिया की स्त्रियों के सस्ते श्रम का दोहन कर रहा है और विश्व बैंक जैसी संस्थाएं इनको पोषित कर रही हैं | घरेलू गुलामी यदि पारिवारिक स्तर पर स्त्री का शोषण कर रही है तो बाह्य स्तर पर पूंजीपतियों के षड्यंत्र में स्त्रियाँ खट रहीं हैं, अर्थात भीतर व बाहर नारी सुरक्षा के घेरे में कहीं नहीं आती इसलिए कात्यायनी नारी मुक्ति के गंभीर सवालों पर विचार–विमर्श की अनिवार्यता को रेखांकित करती हैं |

तसलीमा नसरीन कृत 'औरत के हक में' :- देश, भाषा, संस्कृति, सभ्यता भिन्न भिन्न हो सकते हैं, परन्तु जो भिन्न नहीं है वह है स्त्री और स्त्री का भाग्य चाहे वे हिंदू हो या मुस्लिम, भारतीय हो या बांग्लादेशीय सिर्फ वातावरण व स्थान बदल जाने मात्र से स्त्री का भाग्य नहीं बदलता, यह भाग्य पितृसत्तात्मक समाज की चारदीवारी में बंद ही रहता है, तसलीमा नसरीन ने बचपन से लेकर वर्तमान तक निर्मम नग्न घटनाओं को बेलाग रूप में प्रस्तुत कर उस पुरुष प्रधान परंपरागत सोच व विकृत सभ्यता के गाल पर बड़े ही व्यंग्यात्मक अंदाज़ में थप्पड़ मरा है जो स्त्री होने को 'चरम लज्जा' की चीज़ समझता है | अपने दैनिक जीवन के छोटे–छोटे लेकिन तल्ख़ अनुभवों के माध्यम से वह नारी अस्मिता से जुड़े सवालों को नए सिरे से उठाती हैं |

पूरी पुस्तक में उनकी कोशिश यही बताने की है कि स्त्रियों को धर्मशास्त्रों, सामाजिक रूढ़ियों, पुरुष की निरंकुशता और

नीचता को ध्वस्त कर अपनी शक्ति खुद पहचाननी चाहिए | क्योंकि जननी होकर 'खंडित चूर्ण–विचूर्ण' होना उसका भाग्य नहीं | लेकिन सच्चाई और भी है, यह वह भली–भांति जानती है कि घर की चारदीवारी से बाहर निकलते ही नारी को अपने नारीत्व की कुछ न कुछ कीमत चुकानी ही पड़ती है, "कही दृष्टि, कहीं स्पर्श, कहीं मुस्कान और कहीं आह्लाद" के द्वारा, लेकिन इस सबके बावजूद लेखिका क़ानून व धर्मशास्त्र की बेड़ियों को ध्वस्त करने की सलाह देती है, चाहे बेड़ियाँ इस्लाम ने डाली हो या हिंदू धर्मशास्त्रों ने, बेड़ियाँ तो बेड़ियाँ ही होती हैं चाहे वह कही व कैसी ही क्यों न हों |

अनामिका कृत 'स्त्रीत्व का मानचित्र' :- वर्त्तमान समय में स्त्री विमर्श अथवा नारीवाद ने एक शास्त्र का रूप धारण कर लिया है | इस शास्त्र को जीवन के लगभग हर क्षेत्र में विश्लेषित करने का श्रेय अनामिका को जाता है | समाज व स्त्री व्यवस्था द्वारा निर्मित व पोषित सभी प्रकार की धारणाओं से मुक्त होकर अनामिका स्त्री मुक्ति के क्रमिक विकास की व्याख्या करती हैं और पूर्ण मुक्ति की वकालत करते हुए मानती हैं कि यह असंभव नहीं, इस विकास के अभाव में परिवार व समाज की प्रगति कुंद हो जाएगी | स्त्री व पुरुष दोनों ही इस परिवार व् समाज की इकाइयाँ हैं और दोनों ही इस पितृसतात्मक, सामाजिक व्यवस्था का शिकार हैं लेकिन विडंबना है कि इसमें भी एक शिकार है, एक शिकारी लेकिन "दौष पुरुषों का नहीं, उस पितृसतात्मक व्यवस्था का है जो जन्म से लेकर मृत्यु तक पुरुषों को लगातार

एक ही पाठ पढ़ाती है कि स्त्रियाँ उनसे हीनतर हैं उनके भोग का साधन मात्र हैं" |

स्त्रीवाद आन्दोलन पश्चिम की उपज है परन्तु पश्चिम का होने भर से उसे खारिज नहीं किया जा सकता बल्कि उसे तीसरी दुनिया की स्त्रियों के संदर्भ में विश्लेषित करने की आवश्यकता है | इसलिए अनामिका अपनी पुस्तक के छठे प्रकरण में एक तरफ भारत में स्त्री केन्द्रित आन्दोलनों की उपलब्धियों और सीमाओं की चर्चा करती हैं तो दूसरी तरफ इन आन्दोलनों से उत्पन्न नैतिक साहस की सराहना करती हैं जो पहाड़ व पर्यावरण जैसे मुद्दों के मूल में विद्यमान है |

मृणाल पांडे कृत 'परिधि पर स्त्री' :- मानव की स्वस्थ परंपरा को सुरक्षित रखने में स्त्री की केन्द्रित भूमिका होने के बावजूद आज भी स्त्री विशेषकर निम्नवर्गीय कामगार स्त्री किस प्रकार 'समाज की परिधि' पर दोयम दर्जे का जीवन जीने को विवश है इसकी यथार्थ खोज मृणाल पांडे ने तर्कों, आंकड़ो, शोध पत्रों की रपट का हवाला देते हुए की है और मानवीय दृष्टि से उस पर विचार करने की सलाह भी डी है, कुल २१ निबंधों के इस संकलन में दलित भंवरी के संघर्ष, आंध्रप्रदेश के एक जिले की लक्षम्मा की जागरूकता, सेवा जैसी महिला संगठनों की प्रतिबद्धता आदि के द्वारा लेखिका ने नारीवाद सोच को आक्रामक तेवर के साथ प्रस्तुत किया है, लगभग सभी निबंधों में लेखिका के चिंतन का मुख्य केंद्र सौन्दर्य के परंपरागत प्रतिमानों से नारी को

मुक्त करवा के उसके श्रम सौन्दर्य को उजागर करना रहा है, क्योंकि इस देश की लगभग नब्बे प्रतिशत कामगार महिलाएं कारखानों में मजदूरी करके अपनी रोजी–रोटी कमाती हैं, 'स्व–अस्तित्व', उन्मुक्त स्वतंत्रता जैसी बातों से उनका कोई सरोकार नहीं, क्योंकि उनकी मूल समस्या तो अर्थार्जन और काम की तलाश व उनसे जुड़ी अन्य चिंताएं है, मृणाल पांडे इसी वर्ग की समस्याओं पर ध्यान केन्द्रित रखती हैं |

मृदुला गर्ग कृत 'चुके नहीं सवाल' :- कहते है कि साहित्य समाज का आइना होता है और शायद इसलिए मृदुला गर्ग ने इस साहित्यिक आईने में नारी के बदलते स्वरूप का अक्स देखने की कोशिश की है और नारीवाद की नई परिभाषा गढ़ी है, इसे वह 'देसी नारीवाद' कहती हैं, वैसे आज आवश्यकता भी इसी की है कि पूर्णतः भारतीय परिप्रेक्ष्य में स्त्री विमर्श किया जाए | इसलिए 'नारी चेतना', 'सत्ता और स्त्री' तथा 'देशी फेमिनिस्ट' आदि लेखों में समसामयिक समाज संस्कृति पर उन्होंने बेवाक व गहरी टिप्पणी की है तथा समाज के अंतर्विरोधों, विसंगतियों, जटिलताओं और विषमताओं का चित्रण किया है, इसके अतिरिक्त 'भोपाल गैस कांड', 'एक चिड़िया नहीं चह्चहाएगी', उदासीनता का जहर, कालिदास का विरही मेघ आदि लेखों में मानवीय करुणा का सामंजस्य देखने को मिलता है |

संपादक राजकिशोर कृत 'स्त्री के लिए जगह' :- पारिवारिक सामाजिक संस्थाओं में स्त्री की क्या जगह है ? वरिष्ठ

पत्रकार राजकिशोर द्वारा संपादित पुस्तक 'स्त्री के लिए जगह' यही तलाश करती है, राजकिशोर फ्रायड के उस कथा की चर्चा करते हैं जिसके अनुसार दो–दो स्त्रियों के संपर्क में आने के पश्चात भी वह यह नहीं जान पाए कि 'स्त्रियाँ आखिर क्या चाहती है' , फ्रायड की इस तलाश को राजशेखर ने शुरू में तीन आत्म्वृतान्तों का चयन करके मुकम्मल किया ताकि यह जाना जा सके कि स्त्रियाँ चाहती क्या है ? माना कि वैज्ञानिक प्रगति से समाज में परिवर्तन आया हैं, परन्तु सामान्य धरातल पर नारी के प्रति कमोबेश नजरिया आज भी लगभग वैसा ही है जैसा आज से कई साल पहले तक था, पुरुष तो पुरुष स्वयम स्त्रियों की सोच में भी कोई ख़ास परिवर्तन नहीं आया, स्वतंत्रता, समानता आदि अभी भी स्त्रियों के लिए अपरिचित अनुभव हैं, यह तीनों आत्मवृतांत इसका मुख्य कारण हज़ारों सालों की पराधीनता को ठहराते हैं जिसके तहत आज भी स्त्री अपनी स्वतंत्रता के बारे में सोचने से पहले दस बार समाज के बारे में ज़रूर सोचेगी |

इसका यह अरथ नहीं कि स्त्री बदली नहीं है– स्त्री बदली है उसके प्रति दृष्टिकोण में भी परिवर्तन आया है, परन्तु आज भी पारिवारिक सामाजिक स्तर पर दहेज, बलात्कार, यौन उत्पीड़न ने स्वयम संस्थाओं का रूप ले लिया है और स्त्री की नियति और प्राप्त स्वतंत्रता पर प्रश्न चिन्ह लगा दिया है, अलका सरावगी और विनोद भारद्वाज के लेख उस उपभोक्तावादी समाज व संस्कृति को रेखांकित करते हैं जिसने स्त्री को बाजारू 'वस्तु' में तब्दील

कर महत्वाकांक्षी की अंधी गलियों में भटकने के लिए छोड़ दिया है |

क्षमा शर्मा कृत 'स्त्री का समय' :- समय–समय पर समाज में घटित होने वाली घटनाओं की प्रक्रिया स्वरूप पिछली शताब्दी में कुछ ऐसी पुस्तकें भी प्रकाश में आई जो दो टूक शैली में महिला संगठनों, सरकारी नीतियों, कानूनों, दावों व इरादों की पोल खोल कर रख देती हैं, यानी 'कथनी और करनी' के इस मूलभूत अंतर को प्रकट करती हैं जिसने नारी के जीवन को अतीतगामी बनाया, छोटी–छोटी बातों को मुद्दा बनाकर लड़ने वाले राजनीतिज्ञ, हल्ला करने वाले महिला संगठन लगभग उस समय मौन धारण कर लेते है जब 'अमीनों सेंटेसिस टैस्ट' के नाम पर हज़ारों भ्रूण हत्याएँ हो रही हैं या पांचवें वेतन आयोग की सिफारिशों के नाम पर तीसरे बच्चे के जन्म के समय स्त्री के प्रसव अवकाश पर प्रतिबन्ध लगाया जा रहा होता है, मानो सारा दोष स्त्रियों का ही है, अपने समय संदर्भों में जन्म लेने वाले कुछ ऐसे ही नारी अधिकारों की और उन सभी सवालों के जवाबों की माँग क्षमा शर्मा 'स्त्री का समय' में करती हैं जिन सवालों को सुनकर अक्सर पुरुष सत्ता अपना मुंह छिपा लेती है, वह कहती हैं, "आखिर आदमियों को यह हक क्यों होना चाहिए कि वे ये बताएं कि औरतें किस तरह का आचरण करें" क्षमा उदारवादी दृष्टिकोण से स्त्री सत्ता और स्त्रीवादी विचारधारा का पक्ष भी लेती हैं क्योंकि वह मानती हैं कि इसी नारीवाद विचार ने स्त्री को पूज्य होने के भाव की धज्जियां उड़ा दी, वह स्पष्ट कहती हैं– "स्त्रीवाद

विचार ने और किया सो किया, पूज्य होने के विचार की धज्जियां उड़ा दी, पहली बार स्त्री को पता चला कि देवी होने के जिस अभिमान से वह मरी जा रही थी वह दरअसल उसकी मागनता का आख्यान नहीं, मर्दों द्वारा सदियों से बनाया गया ऐसा विचार भर था जिसने कभी पूजकर तो कभी पीटकर अपनी सत्ता कायम कर रखी थी" | लेकिन त्रासदी यह है कि इस पूज्य भाव से मुक्त होने के पश्चात भी श्लील–अश्लील, संस्कृति–अपसंस्कृति की सारी परिभाषाएँ स्त्रियों के लिए हैं, ऐसे में ही प्रश्न दरअसल प्राप्त अधिकारों व स्वतंत्रताओं को पुनः परिभाषित करने की वकालत करते हैं ताकि सती प्रथा समाप्त होने के पश्चात भी सती होने का उन्माद या विवशता बनी रह पाये |

सारांश यह कहा जा सकता है कि स्त्री विमर्श अथवा नारीवाद पुरुष और स्त्री के बीच नकारात्मक भेद–भाव की जगह स्त्री के प्रति सकारात्मक पक्षपात की बात करता है वस्तुतः इस रूप में देखा जाए तो स्त्री विमर्श अपने समय और समाज के जीवन की वास्तविकताओं तथा संभावनाओं को तलाश करने वाली दृष्टि है, यह दृष्टि एक ओर संपूर्ण सामाजिक जीवन को देखने और रचने का माध्यम बनाती है तो दूसरी ओर साहित्य में स्त्री जीवन की जटिल वास्तविकताओं और अनुभूतियों की अभिव्यक्ति की शक्ति भी है, राजी सेठ भी कहती हैं कि– "स्त्री की चुनौती अपने समीकरण को छोड़कर पुरुष के समीकरण को पाना नहीं बल्कि अपने सत्य में से वृहत सत्य की परिधि तक जाना है" | वर्तमान में जो भी स्त्रीवादी साहित्य रचा जा रहा है

वह तन्मयता, गहरी संलग्नता और ईमानदारी से रचा जा रहा है उसमें स्त्री जीवन का यथार्थ इतनी बारीकी से झलकता है कि वह हर पाठक को स्त्री जीवन पर सोचने के लिए विवश कर देता है, क्योंकि नारीवाद अथवा स्त्री विमर्श एक स्वस्थ दृष्टिकोण है जो एकांगी नहीं है, यह पुरुषों का नहीं बल्कि उनकी मानवीयता घटाने वाले उस छद्म मुखौटे का प्रतिकार है, जो मर्दानगी के नाम पर गढा गया है और जिसके पीछे झूठी अहमन्यता और उत्पीड़क प्रवृत्ति के अलावा कुछ नहीं |

संदर्भ एवं सहायक ग्रन्थ :-

1. औरत होने की सज़ा, अरविन्द जैन, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली |
2. समान नागरिक संहिता, सरला माहेश्वरी, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली |
3. दुर्ग द्वार पर दस्तक, कात्यायनी, परिकल्पना प्रकाशन, दिल्ली |
4. औरत के हक में, तसलीमा नसरीन, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली |
5. स्त्रीत्व का मानचित्र, अनामिका, सारांश प्रकाश प्रा० लि०, दिल्ली |

6. परिधि पर स्त्री, मृणाल पांडे, राधाकृष्ण प्रकाशन प्रा० लि०, नई दिल्ली |

7. चुकते नहीं सवाल, मृदुला गर्ग, सामयिक प्रकाशन, कानपुर, उत्तर प्रदेश |

8. स्त्री के लिए जगह, सं० राजकिशोर, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली |

9. स्त्री का समय, क्षमा शर्मा, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली |

10. विभिन्न पत्र–पत्रिकाएँ एवं समाचार–पत्र |

हलाला और इस्लाम धर्म

शोधार्थी: रुमैसा नज़ीर

कश्मीर
विश्वविध्यालय
हजरतबल श्रीनगर

हम इस बात से भलि भांति अवगत है कि आज सम्पूर्ण भारत में 'ट्रिपल तलाक' और 'हलाला' का हल्ला मचा हुआ है और सब इसके विरुद्ध अपनी आवाज़ बुलंद कर रहे हैं परन्तु क्या आपको पता भी है यह हलाला क्या चीज़ है? 'हलाला' यानि तीन तलाक़ के बाद यदि स्त्री अपने पति के पास वापस जाना चाहती है तो उसके लिए उसे पहले किसी दूसरे पुरुष से अस्थाई विवाह करना होगा और फिर यदि यह पति उसे तलाक़ दे या उसकी मृत्यु हो जाए तब जा के वो अपने पूर्व पति के लिए हलाल होगी और उसके साथ पुनः निकाह कर सकती है | इस प्रवृति को लेकर आज जोरो शोर से राजनीति चल रही है | धर्म के चंद ठेकेदारों ने अपने आपको मान्यता देने के गर्ज़ से इसमें परिवर्तन किया है | उन्होंने इस हलाला प्रक्रिया को एक नये ढंग से प्रस्तुत किया है कि यदि स्त्री को तलाक दिया जाए, वह तब तक अपने पति पर हलाल नहीं होगी जब तक उसका किसी दूसरे व्यक्ति से हलाला न करा दिया जाए | यदि एक बार हलाला हो गया तब जाके वह अपने पूर्व पति पर हलाल होगी परन्तु यह सब गलत है | मुस्लिम समाज में तीन तरह के तलाक देखे जा सकते हैं :–

1. ***तलाक-ऐ-बिद्दत*** –एक साथ तीन तलाक |

2.***तलाक-ऐ-हसन*** –तलाक दिया फिर एक माह तक रुको फिर दूसरा तलाक फिर एक माह तक रुको और फिर तीसरा तलाक |

3.***तलाक-ऐ-अहसन*** – तलाक दिया फिर तीन माह तक रुको, उसके बाद दूसरा तलाक फिर तीन माह तक रुको और अंत में तीसरा तलाक और इस तरह दोनों मियां–बीवी एक दूसरे से अलग हो जाते है |

इनमें से तीसरा यानि '***तलाक ऐ अहसन***' के बारे में कुरआन की दूसरी सूरह यानि सूरह 'अल बकरा' की २२८ वीं आयत में लिखा हुआ है कि जब भी आप तलाक देंगे तो तीन माह की इद्दत अर्थात तीन 'हैज़' अर्थात तीन मासिक धर्मचक्र की समय विधिके पश्चात आप दूसरा तलाक दे सकतें है इसी तरह दूसरे तलाक के बाद भी तीन माह की इद्दत/अवधि है फिर तलाक | परन्तु हमारे उलामा में इसको लेकर मतभेद है, कि कौन सही है और कौन गलत | लेकिन इस्लाम धर्मग्रंथ 'कुरआन' पर चलना मुसलमान का कर्तव्य है और कुरआन की दूसरी सूरह – सूरह बकरह की २२८ से २४० तक की आयतें और कुरआन की सूरह ६५ यानि सूरह तलाक की १ से ७ तक की आयतों में तलाक के संबंध में कहा गया है कि यदि कभी किसी बात को लेकर पति–पत्नी में अनबन होती है तो उन्हें बैठ के आराम से सुल्जाने का और सुलह कर लेना चाहिए ना कि तलाक दे क्योंकि कुरान में साफ़–साफ़ लिखा गया है कि सब से नापसंद चीज़

अल्लाह ने तलाक़ को माना है | इसी प्रकार सुरह 'अल निसा' की ३५ वीं आयत में कहा गया है कि दोनों के बीच में गवाह रखना चाहिए और यदि तलाक होता है तो तीन माह तक रुको यदि इस बीच आपको लगे की अलग होना है तब दूसरी तलाक होगी इसी तरह तीन तलाक की इद्दत तीन माह है, इसके बाद आप दोनों अलग रहे | परन्तु यदि कुछ वर्षों बाद या कुछ समय बाद वो दोनों इरादा करें कि उन्होंने अलग होक गलत किया और अब वह अपनी गलती सुधारना चाहते हैं तो उन्हें ना रोके बल्कि इसके लिए उन्हें नया निकाह और नया मेहर रखना होगा परन्तु कुछ उलमा का मानना है कि इसके लिए हलाला करना जरूरी है जो कि कहीं से प्रमाणित नहीं है | इसके लिए प्रत्येक मुसलमान को चाहिए कि वो स्वयं कुरआन पढ़े और समझे | हलाला के बारे में इब्न ऐ कसीर में लिखा है कि–"सय्दिना अब्दुल्ला बिन उमर हलाला को जिनाह कहते थे"1| इसी तरह एक और रिवायत है कि "अगले खावंद की' नये निकाह करने वाले की' या औरत की अगर नियत हलाला की है तो यह निकाह बातिल है और वह पहले खान्वंद के लिए यह औरत हलाल न होगी"2| अर्थात हलाला को हर तरह से गलत करार दिया गया है | इसी प्रकार कईयों का मानना है कि यह हलाला केवल पुरुषों पर लगाम कसने के लिए था क्योंकि जब इस्लाम में शराब पीने की मनाई नहीं थी और जब पुरुष नशे की हालत में घर आता था तो अपनी पत्नी के साथ असहनी व्यवहार करता और उसे तलाक देता बाद में जब उसे होश आता तब वह अपनी ना समझी पर

पश्ताता और दोबारा निकाह करना चाहता, इसके लिए हलाला प्रक्रिया रखी गई ताकि पति ऐसी गलती दोबारा ना करे क्योंकि कोई भी पति यह नहीं चाहेगा कि उसकी पत्नी किसी दूसरे पुरुष के साथ संबंध रखे | इसी तलाक को रोकने के लिए हलाला रखा गया था परन्तु आज इसे गलत तरीके से व्यवहार में लाया गया है और इसके लिए हमारा मीडिया जिमेदार है जो बड़ा चड़ा कर लोगों को गुमराह कर रहा है | इसी प्रकार कहा जा सकता है कि यह सब पूर्ण रूप से सही नहीं है और हमे आगे आ कर इसे रोकना चाहिए जो सत्य है उसे लोगों के समक्ष रखना चाहिए | इसी तीन तलाक को आधार बना कर लिखा गया उपन्यास 'हलाला' में भगवानदास मोरवाल जी ने इस तलाक ऐ बिद्दत को केंद्र में रख कर इसकी रचना की है जिसमें नज़राना नामक पात्र को अपना पति एक साथ तीन तलाक देता है और कुछ समय के पश्चात उसके पति नियाज़ को यह आभास हो जाता है कि उसने जो कुछ भी अपनी भीवी के साथ किया वो नियायपूर्वक नहीं था इसलिए वो उसे घर वापस लाना चाहता है परन्तु किसी मोलवी के कहे अनुसार नज़राना का पहले हलाल होना जरूरी है | इसके लिए कोई ऐसा पुरुष चाहिए जो हलाला के लिए तैयार हो और बाद में नज़राना को तलाक दे परन्तु ऐसा कोई ना मिलने पर उन्हें पड़ोसी गाँव का डमरू नामक व्यक्ति मिल जाता है जिससे नज़राना का निकाह कराया जाता है जो रंग रूप से काले सांड जैसे दीखता है परन्तु मोलवी के कहे अनुसार यह सब कराना आवश्यक है इसलिए बिना कुछ सोचे समझे निकाह करा दिया जाता है यहाँ तक कि नजराना की रजामंदी भी नहीं पूछी गई |

शादी होने के पश्चात डमरू नज़राना की तरफ आँख उठा कर भी नहीं देखता और नियाज़ की अमानत समझ कर उससे दूर रहने लगता परन्तु जब तलाक देने का समय आता है तब नज़राना अपने अस्तित्व को बचाने के लिए आवाज़ उठती है और तलाक देने से इनकार कर यह कह देती है कि "हम कोई लत्ता – कपडा हैं के जब जी करे पहर लेओ और जब जी करे अन्ने उत्तार के फेंक देओ"3 | इस तरह भगवानदास मोरवाल जी ने नजराना के द्वारा मुस्लिम स्त्री के मन की पीड़ा को अभिव्यक्त करते हुए कहा है कि इस पुरुष प्रधान समाज में उनका जीवन अभिशाप बन चुका है और नारी होने की सज़ा भुगतती है | आज भी समाज में यह सब देखने को मिलता है कि गलती पुरुष करे और सज़ा स्त्री को भुगत्तनी पडती है | आज प्रत्येक नारी की यही गुहार है कि यदि गलती पुरुष करता है तो सज़ा स्त्री को क्यों पुरुष को क्यों नहीं ? नारी को इस तरह के खोखले समाज को हरा कर अपनी अस्मिता तथा अपनी रक्षा के लिए स्वयं आगे बढना होगा और इन झूठे मोलवियों के चेहरे से नकाब उतार कर फैंकना पड़ेगा जो हलाला को मान्यता देते है और धर्म को बदनाम कर रहे है, हमें आगे आ कर इस कुप्रथा का खातिमा करना होगा और नारी के लिए वैसे ही जीने की आज़ादी दिलानी होगी जैसे वो चाहती है, साथ ही एक सभ्य समाज का निर्माण करना होगा और यदि स्त्री यह संकल्प ले कि वो एक स्वास्थ्य समाज की स्थापना करेगी तो इसके आड़े आने वालों को मुंह तोड़ जवाब देना भी जानती है |

सन्दर्भ ग्रन्थ :-

१.हबील ,अबुशर.***हलाला की छुरी***, दारुल सफ़ा पुब्लिकेशंस, सं.जनवरी 2001 ,पृ.85 |

२.वही .पृ.89|

३.मोरवाल ,भगवानदास .***हलाला*** , वाणी प्रकाशन,2016,पृष्ठ.175 |

जूठन : एक समीक्षा

डॉ. रूबी ज़ुत्शी

वरिष्ट –

प्रध्यापिका

कश्मीर विश्वविध्यालय

श्रीनगर

जूठन ओमप्रकाश वाल्मीकि की आत्मकथात्मक कृति न होकर एक आत्मवृत है क्योंकि आत्मकथा का स्वरूप भिन्न होता है | यह प्रायः वृद्ध लोगों द्वारा लिखी जाती है और जीवन में बड़ी सफल उपलब्धियों को प्राप्त करने वाले लोगों पर लिखी जाती है, जिससे पाठक प्रेरित होते हैं | आत्मवृत प्रायः युवा संघर्षरत लेखकों के आत्मीय अनुभव पर आधारित है जो अपनी मंजिल की खोज में होते हैं और आत्मीय अनुभव जातीय अनुभव से ओतप्रोत है | आत्मकथात्मक लिखना अति कठोर भी है क्योंकि अगर हम

अपनी आत्मकथा सच्चाई से लिखेंगे ति कहीं हमे अपनी प्रतिष्ठा खोने की संभावना भी होती है क्योंकि लोग उस चीज़ से परिचित होते हैं जिससे वह अपने हाथों से लिख डालता है और अपनी ही लेखनी से लोगों को परिचित कराता है जिसका जीवंत उदाहरण जूठन आत्मकृतात्मक कृति है | यही कारण है कुछ लोग इसे आत्मकथात्मक समझते हैं | देखा जाए तो यह आत्मवृत है |

'जूठन' शीर्षक का सुझाव श्रद्धेय राजेन्द्र यादव जी ने सुझाया है | इसके अतिरिक्त कँवल भारती, डॉ. श्योराज सिंह 'बेचैन' तथा अशोक महेश्वरी जी की सहायता के बिना यह आत्मवृत लिखना ओमप्रकाश वाल्मीकि के लिए संभव नहीं था | यह दो खण्डों में विभाजित है | अपने आप को विकीर्ण सोच वाले कहने के उपरान्त भी हम कहीं न कहीं सवर्ण और अवर्ण के दायरे में बंट ही जाते हैं | इस आत्मवृत कृति को केंद्र बिंदु का दायरा यही है | सन् १९९४ में राजकिशोर 'हरिजन से दलित पुस्तक लिखने की योजना कर रहे थे तो उन्होंने ओमप्रकाश जी को कुछ पन्ने लिखने के लिए विवश किया और उन्होंने विवशता में कुछ पन्ने लिख ही डाले और राजकिशोर के पास भेज दिये, उपरोक्त किताब का शीर्षक 'एक दलित की आत्मकथा' जिसको दलितों ने बहुत ही सराहा और लेखक को प्रोत्साहित करते रहे जिससे ओमप्रकाश तत्पश्चात निरंतर लिखते रहे |

अगर जाति–व्यवस्था की बात करें तो भारतवर्ष में चार जातियाँ थीं– ब्राह्मण, क्षेत्रीय, वेश्य एवं शूद्र | उस समय केवल

शूद्र को ही दलित अर्थात हरिजन माना जाता था किन्तु धीरे–धीरे यह धारणा परिवर्तित हो गई | हरिजन से दलित, दलित का अरथ है जिन लोगों का समाज में दलन होता है | उनको हम दलित के भीतर रख सकते हैं क्योंकि आरक्षण का फल केवल हरिजन को ही नहीं बल्कि अगर उच्च जाति का भी कोई दरिद्रता झेलता होगा, खाने की सुविधा नहीं होगी तो उनको भी आरक्षण का पूरा–पूरा लाभ मिलना चाहिए, यही कारण है आज दलित के संदर्भ में वे सभी परिवार आते हैं जो गरीबी रेखा से नीचे (बी.पी.एल, below poverty line) के अंतर्गत आते हैं |

आज आरक्षण के भीतर वह लोग भी होते हैं जिनके पास अपनी ज़मीनें नहीं हैं, निम्न सत्ता के लोगों को संसार में किसी भी प्रकार का आदर–सत्कार नहीं मिलता है | जो बहुत बड़ी विडम्बना है | सवर्ण अवर्ण लोगों के साथ सदा अन्याय करते आये हैं "उम्र में बड़ा हो तो 'ओ चूहड़े' या उम्र में छोटा हो तो 'अबे चूहड़े' के" |1उच्चजाति तथा पूंजीवादी लोग मुर्गी, कुत्ते तथा बिल्ली को पाल सकते हैं, अपने बिस्तर पर लेटा सकते हैं, उसकी सेवा कर सकते हैं तब न उनके बर्तन झूठे होते हैं और न घर किन्तु अगर निम्नवर्ग का जन उनके घर में बिस्तर या बर्तन का प्रयोग करेगा तो उसको जलाया जाता है और बर्तन को घर से बाहर रखा जाता है– "काम पूरा होते ही उपयोग ख़त्म इस्तेमाल करो दूर फेंको" |2 स्वतंत्रता से पूर्व उनकी स्थिति अति बिगड़ी हुई थी किन्तु स्वतंत्रता के बाद ही सबसे पहले गांधीजी ने ही सरकार में अछूतोद्वार खोले थे किन्तु अगर यह अच्छे कपडे

स्कूल पहन कर जाते थे तो त्यागियों (मुसलमान/हिंदू) का व्यवहार उनके प्रति सही नहीं होता था | ताने मार–मार के उनके भीतर तक छेद कर डालते थे– "अबे चूहड़े का, नये कपड़े पहनकर आया है | मैले–पुराने कपड़े पहनकर स्कूल जाऊं तो कहते, 'अबे चूहड़े के दूर हट, बदबू आ रही है" |3 उस उच्च जातीय या ब्राह्मण का क्या अर्थ है जो समाज को बनाने से बिगाड़ ही दे क्योंकि शिक्षक वह है जिसमें सहानुभूति, सहनशीलता, नम्रता तथा ज्ञान हो और सभी छात्रों को एक समान समझ रखे जिसके मन में भेदभाव एवं घृणा न हो और हाथ में शमशेर लेकर चौबीस घंटे खड़ा रहे वह शिक्षक नहीं जल्लाद है– "एक दिन मास्टर ने सुखन सिंह को पीटते समय उस फोड़े पर ही एक घूँसा जड़ दिया, सुखन को दर्दनाक चीख निकली, फोड़ा कूट गया था उसे तड़पता देखकर मुझे भी रोना आ गया था" |4 ब्राह्मण को न गाली देने का अधिकार है और न किसी को मारने का अधिकार बल्कि समाज को परामर्श देकर सुधारने का काम करना चाहिए | आज सरकार ने तरह–तरह के क़ानून बनाए उससे लोगों की आँखें खुल गई | आज हर किसी के लिए एक व्यवस्था बनी हुई है | उस व्यवस्था का अगर कोई उल्लंघन करे तो उसी समय उसको कारावास की मार खानी पड़ती है क्योंकि देखने एवं जांचने के लिए एक–एक कमेटी बनी हुई है | अंधाक़ानून तथा अन्धाराज कब का समाप्त हो चूका है | एक युग यह भी था जब "सुंदर लड़के के गाल सहलाते थे उन्हें अपने घर बुलाकर उनसे वाहियातपन करते थे" |5 आज बालिका भी अपने देह की रक्षा

करने में सतर्क है देखा जाए तो माँ के पेट में कोई भी धर्म तथा जाति से भिग्य नहीं होता है इस भूमि पर पैर रख कर हमें जाति तथा धर्म से बांधा जाता है | जिस धर्म एवं जाति की माँ होती है उस धर्म तथा जाति से बच्चा भी सम्बंधित होता है | अब उन्हीं बच्चों को सताए क्यों– "पूरे स्कूल कू ऐसा दे जैसा सीसा | तेरी तो यो खानदानी काम है" |6 हेडमास्टर उच्च जाति का होने के कारण उनकी भाषा चूहड़ जाति वालों से अच्छी नही थी बात से पहले ही वह उनको गाली से पुकारते थे– " मादरचोद कहाँ घुस गया...अपनी माँ..." |7 इस संसार में एक माँ का अस्तित्व बहुत ऊँचा एवं पवित्र है | इससे असभ्य कौन हो सकता है जो किसी की भी माँ को अपशब्द कहने में चूक न करे |

अगर निम्नजाति के लोगों को उच्च–जाति के लोग सहयोग प्रदान न करें तो उनको ऊपर उठाने का कोई भी अवसर नहीं मिलेंगे विशेषतौर पर पढाई के क्षेत्र में– "तीन दिन से रोज़ झाड़ू लगवा रहे थे | कक्षा में पढ़ने भी नहीं देते हैं" |8 जब तक हम सभी प्रधान संगवा सिंह त्यागी नहीं बनेंगे तब तक समाज–सुधार नहीं होगा | विडम्बना की बात यह है कि चना की कटाई बहुत ही कष्टदायक होती है क्योंकि चना के पत्तों पर खटाई होती है | काटने पर पूरे शरीर में चिपक जाती है | यह चिपचिपाहट नहाने से भी कम नहीं होती है तो सवर्ण यह स्वयं न काट कर इसकी "कटाई करने वाले अधिकतर चूहड़ या चमार हो होते हैं" |9 कारण केवल जाति तथा दरिद्रता है वर्ना सबका शरीर एक जैसा है |

इस आत्मवृत का शीर्षक एकदम सही एवं सटीक है क्योंकि "दोपहर से प्रत्येक घर से एक बच्ची–खुच्ची रोटी, जो खासतौर पर चूहडो को देने के लिए आते में भूसी मिलाकर बनाई जाती थी | कभी–कभी जूठन भी भंगन को टोकरी में डाल दी जाती थी" |10 दिन–रात मर खपकर भी हमारे पसीने की कीमत मात्र 'जूठन' ही होती है किन्तु इस जूठन से वह अपनी जीविका चलाते थे | अगर इनको यह 'जूठन' भी नहीं मिलती तो उनके लिए खाने–पीने का कोई भी साधन नहीं होता था | जूठन इनके लिए गंगा नहान जैसे था | 'जूठन' से भी इनके घर पलते थे | 'जूठन' खाने पर भी हिन्दू इनको लताड़ते थे और इनको अपमानजनक होना पड़ता था "टोकरी भर तो जोथान ले जा रही है...ऊपर से जाकतो (बच्चों) के लिए खाणा मांग रही है ? अपनी औकात में रह चूहड़ी" |11 जसबीर और जनेसर माँ को काम में हाथ बंटाते थे इस दिन जब सुखदेव सिंह ने इनकी माँ पर हाथ उठाने की हिम्मत की तो वः दुर्गा बन कर जवाब देकर निकल पड़ी और कभी भी उनके दरवाज़े पर नहीं गई और उसी दिन से जूठन का सिलसिला भी समाप्त हुआ |

पहले गाँव की बेटी को सारे गांवों वाले अपनी बेटी समझ कर उसके प्रति विशेष ध्यान देते क्योंकि बेटी का सम्मान गाँव का सम्मान माना जाता था बेटी की शादी का मतलब गाँव भर की इज्ज़त का सकल था | किन्तु आज इतना विनाशशील परिवर्तन आया है आज उसी गाँव में लड़के अपनी ही गाँव की लड़की का

बलात्कार करने में कोई हिचक नहीं करते हैं | यह विनाशकारी विकास नहीं तो और क्या है |

पहले गाँव में लोग अधिक शिक्षित न होकर अपनी अशिक्षित सोच के कारण काले जादू-टोने-टोटकों के प्रति अधिक जागरूक होते थे जिससे अपने बच्चों को किसी दूसरी जगह न कमाने भेजते थे न घर से ही बाहर निकलने का परामर्श देते थे | इसी कारण वह अपनी गरीबी दूर नहीं कर पाते थे बल्कि उसको अपने घर में ही गरीबी पाल लेते थे जिससे आर्थिक विकास न के बराबर होता था | समय के साथ-साथ हर तरह का विकास तथा परिवर्तन होता आया है | लोगों की मानसिकता में परिवर्तन आया है | आज नौकरी तो क्या पढ़ाई के लिए भी बच्चों को घर से दूर भेजते हैं |

आज निजी नौकरी करने का प्रचलन चल रहा है | इक्कीसवीं सदी के युवक बड़े शौक तथा उत्साह के साथ निजी नौकरी करना पसंद करते हैं क्योंकि काम बेशक अधिक है बल्कि वेतन तिगुणा होता है | सरकारी नौकरी में आराम अगर अधिक है किन्तु वेतन भी उसी मात्र में होता है | लेकिन आज के बच्चों को इस शाश्वत सत्य की पहचान नहीं है | निजी तथा सरकारी नौकरी में घोर अंतर यही है "बंधी-बधाई आमदनी व्यक्ति को हौसला देती है | उसमें आत्मविश्वास पनपने लगता है" |12 किन्तु निजी नौकरी में यह चीज़ें नहीं होती है न ही बंधी-बंधाई आमदनी ही होती है न ही आत्मविश्वास ही जागृत होता है

क्योंकि कभी भी वक्त निजी कर्मचारी को नौकरी से निकाल सकते हैं और दुर्भाग्यवश अगर किसी समय बीमारी का शिकार हुआ तो खोटे सिक्के की भांति बेकार ही जाता है और ज़िन्दगी उसके लिए बोझ बन जाती है जो कि सरकारी नौकरी में नहीं है | वह मरते दम तक सरकार के कन्धों पर सवार होता है | मन्नू भंडारी की कहानी 'खोटे सिक्के' भी इसी समस्या को लेकर लिखी गयी है |

आज से कुछ साल पहले एक ही अध्यापक जो केवल मैट्रिक पास होने के उपरान्त भी सारे विषय पढ़ाते रहते थे चाहे उसको विभिन्न विषयों पर ज्ञान होता था या नहीं, फिर भी एक ही टीचर स्कूल में हुआ करता था जो प्रत्येक विषय का ज्ञान देता था किन्तु समय का बदलाव इस विषय में भी आया है | आज हर विषय के लिए अपना–अपना विशेषग्य होता है जिससे बेरोज़गारी भी दूर होती है और बच्चे सही ज्ञान की प्राप्ति भी करते हैं |

उच्च जातीय की उपेक्षा निम्न जातियों में रिश्ते बड़े ही मूल्यवान होते हैं | वह अपने किसी भी रिश्ते के लिए कोई भी मूल्यवान चीज़ बेचने में और दूसरे रिश्ते की ज़िन्दगी बनाने में सक्षम होते हैं | चाहे वह ससुराल का ही सदस्य क्यों न हो "ना बहू...इसे ना बेच...मैं कुछ न कुछ कर के इसे स्कूल भेजूंगी | तू फ़िक्र ना कर...एक यही तो चीज़ है तेरे पास....उसे भी बेचे दे, रख ले उसे" |13 जसबीर भाभी से लिपट कर रोया और आस–पड़ोस की औरतें मेरी भाभी के इस स्नेह को देखकर अभिभूत हो

गयी | अम्बेडकर ने सही कहा है First education, then organize and then agitate क्योंकि पढाई से मानव में आत्मविश्वास उत्पन्न होता है "अर्धवार्षिक परीक्षा में मैं अपने सेक्शन में प्रथम आया था | इस परिणाम ने मेरे भीतर आत्मविश्वास जगा दिया" |14

दरिद्र लोग पांच सौ रुपए एक किलो बकरी का मांस लेकर अपने परिवार को बड़ा तथा स्वादिष्ट खाना नहीं खिला सकते है इसलिए पहले से ही यह प्रावधान रखा गया है कि ऐसे मांस को हलाल बना दिया है जो दरिद्र लोग अपने परिवार जनों के लिए ला सकते हैं और उनको भी बड़ा खाना खिला सकते हैं किन्तु इसका फायदा सवर्ण भी धर्म का आवश्यक अंग मानकर इसको खा लेते हैं किन्तु इन छोटे लोगों को अपने से कमत्तर मानकर उन्हें भला–बुरा कहते हैं– "अबे चूहड़ के सूअर खाता है" |15 तब इन छोटे लोगों को याद आता है यह सवर्ण परदे के पीछे क्या करते हैं जब यह अँधेरे में छुप–छुप कर गोश्त खाते हैं |

निष्कर्षतः इस आत्मवृत में कई और सामाजिक समस्याओं को भी प्रस्तुत किया गया है जो वर्तमान समय की जीवंत समस्याएँ हैं |

संदर्भ ग्रन्थ सूची :-

१. ओमप्रकाश वाल्मीकिः आत्मकथात्मक उपन्यासःजूठनः पृष्ठ 12 पहला खंडःराधाकृष्ण नयी दिल्ली, इलाहबाद कोलकत्ता

२. वही पृष्ठ 12

३. वही पृष्ठ 13

४. वही पृष्ठ 14

५. वही पृष्ठ 14

६. वही पृष्ठ 15

७. वही पृष्ठ 15

८. वही पृष्ठ 16

९. वही पृष्ठ 18

१०. वही पृष्ठ 19

११. वही पृष्ठ 21

१२. वही पृष्ठ 25

१३. वही पृष्ठ 26

१४. वही पृष्ठ 29

१५. वही पृष्ठ 30

१६.दलित आत्म्वृतों में समाज समीक्षाः चमनलाल गुप्त, पृष्ठ 1. परिशोधः पत्रिकाः हिंदी विभाग पंजाब विश्वविद्यालय, चंडीगढ़

कश्मीरी भाषा और साहित्य

शोधार्थी:- परवैज़ा अख्तर

संस्कृत विभाग:

कश्मीर विश्वविद्यालय श्रीनगर

भारत के संविधान में अन्य प्रादेशिक भाषाओं के समान ही कश्मीरी भाषा को भी राष्ट्री मान्यता दी गई है | कश्मीरी भाषा कब और कैसी उभरी इस पर किन किन भाषाओँ का प्रभाव है, यह आज तक विवादित प्रश्न रहा है | इस विषय में विद्वानों के बीच काफी मतभेद रहा है | फिर भी समय समय पर विद्वानों ने इस विषय में अपनी मान्यतायें प्रस्तुत की हैं | ग्रियर्सन महोदय आदि विद्वानों का विचार है कि कश्मीरी दरद परिवार की भाषा है जो कि भारत–ईरानी की उपशाखा है | प्रसिद्ध विद्वान प्रो० पृथ्वीनाथ पुष्प इसे पैशाची का विकसित रूप मानते हैं |1 अब्दुल अहद आज़ाद के मतानुसार कश्मीरी का उद्भव इब्रानी भाषा से है क्योंकि प्राचीन काल में सीरिया (शाम) से यहूदियों के कुछ समूह कश्मीर में आकर बस गए | यह समूह अपने साथ अपनी भाषा भी लाये थे | इन की भाषा इब्रानी थी जिसका प्रभाव

कश्मीरी भाषा पर पड़ा |2 डॉ. सुनीताकुमारी चटर्जी का विचार है कि संस्कृत का सब से अधिक प्रभाव कश्मीरी भाषा पर पड़ा |3 कुछ विद्वान कश्मीरी का उदगम संस्कृत नहीं अपितु यह इब्रानी संतति मानते हैं | यदि एतिहासिक दृष्टि से देखा जाये तो यहाँ का प्राचीन इतिहास संस्कृत भाषा में ही लिखा गया है जो हमारे पास आज भी विद्यमान है | कश्मीरी भाषा का उदगम कहाँ से हुआ | इस विषय पर शोध हो रहा है और अधिकाँश विद्वान इस निष्कर्ष पर पहुंचे हैं कि कश्मीरी भाषा संस्कृत से विकसित हुई है | कश्मीरी भाषा में लगभग अस्सी प्रतिशत शब्द संस्कृत भाषा से ही उद्भूत हैं |

कश्मीरी साहित्य का आरम्भ कब हुआ कैसे इसका विकास हुआ निश्चित रूप से कुछ कहा नहीं जा सकता है | कहा जाता है कि कश्मीर में 13वीं शताब्दी तक संस्कृत भाषा का प्रधान्य था | कल्हण, बिल्हण, वासुगुप्त, अभिनवगुप्त जैसे विद्वानों ने संस्कृत साहित्य को अमूल्य देन दी हैं | कुछ विद्वान शितिकंठ के 'महानय प्रकाश' को ही कश्मीरी की प्रथम रचना मानते हैं | प्रो० जियालाल कौल 'महानय प्रकाश' को कश्मीरी की प्रथम कृति मानते हैं | उनके अनुसार इस कृति की भाषा शुद्ध कश्मीरी है |4 केवल इतना कहा जाता है कि रचना लल्लद्यद के सौ वर्ष पूर्व लिखी गई है | यद्यपि कश्मीरी साहित्य का प्रारंभ लल्लद्यद से पूर्व शितिकण्ठ के 'महानय प्रकाश' से होता है परन्तु 'महानय प्रकाश' की भाषा उतनी समीप की वृत्ति

नहीं जितने लल्लद्यद के वाख | लल्लद्यद की कश्मीरी वर्तमान कश्मीरी के काफी निकट है | इनका वाख–साहित्य कश्मीरी साहित्य की अमूल्य निधि है | कश्मीरी भाषा में विकास की दृष्टि से लल्लद्यद और नुन्द ऋषि का महत्वपूर्ण स्थान है |5

कश्मीरी की साहित्यक परम्परा को विद्वानों ने विभिन्न कालों में विभाजित किया हैं | अब्दुल अहद आज़ाद, प्रो० पृथ्वीनाथ पुष्प, प्रो० जियालाल कौल, अवतार कृष्ण रहबर आदि का नाम उल्लेखनीय हैं |

प्रो० जियालाल कौल6 की दृष्टि से कश्मीरी साहित्य का काल विभाजन :–

1. प्रथम काल	१५५५ तक
2. द्वितीय काल	१५५५–१७५२
3. तृतीय काल	१७५२–१९२५
4. चतुर्थ काल	१९२५–१९४७

अब्दुल अहद आज़ाद ने कश्मीरी साहित्य को चार कालों में विभाजित किया है7 :–

1. प्रथम काल	१३२५–१४२२
2. दूसरा काल	१५९६–१८४८
3. तीसरा काल	१८५५–१९००
4. चौथा काल	१९००

प्रो० पृथ्वीनाथ पुष्प ने कश्मीरी साहित्य को पाँच कालों में विभक्त किया है8 :–

1. आदिकाल १२४०–१४००
2. प्रबन्धकाल १४००–१५५०
3. गीतकाल १५५०–१७५०
4. प्रेमाख्यान काल १७५०–१९००
5. आधुनिक काल १९००

अवतार कृष्ण रहबर ने अपनी पुस्तक 'कश्मीरी अदबच तारीख' में कश्मीरी साहित्य का विभाजन इस प्रकार दर्शाया हैं :–

1. प्रारम्भिक अथवा निर्गुण–भक्तिकाल १२००–१५५५
2. मध्यकाल या गीतकाल १५५५–१७५७
3. संधिकाल अथवा भक्ति–श्रृंगारकाल १७५७–१९२५
4. आधुनिककाल १९२५–१९४७

आधुनिक काल (१९२५) को श्री रहबर ने दो खण्डों में पुनः विभक्त किया है, १९२५ से १९४७ तक तथा १९४७ से अब तक |

इसी प्रकार अनेक विद्वान इस दीर्घकालीन साहित्य को चार कालों में विभक्त करके इस प्रकार दर्शाते हैं :–

अध्यात्मि-काल :- कहा जाता है कि इस काल के सर्वप्रथम लेखक दार्शनिक विचारधारा के प्रसिद्द विद्वान शितिकण्ठ हुए है 9 | कश्मीरी साहित्य में इस विचारधारा को आगे ले जाने में लल्लद्यद एवं नुन्द ऋषि का विशेष योगदान रहा हैं | कश्मीरी इतिहास का अध्ययन करके हम इस निष्कर्ष पर पहुँचे हैं कि 14वीं शताब्दी के पूर्वध में प्रसिद्द कवयित्री लल्लद्यद का जन्म हुआ | इतिहास इस तथ्य का साक्षी है कि लल्लेश्वरी का जन्म हिंदू जाति के कश्मीरी पंडित घराने में हुआ है | लल्लद्यद को प्रारम्भिक शिक्षा-दीक्षा अपने कुल-गुरु सिद्वमोल से प्राप्त हुई 10 | लल्लद्य्द का प्रत्येक वाख दार्शनिक चेतना का आगार है | जिस पर मुखतः शैव, वेदान्त तथा सूफी मत का प्रभाव भी देखने को मिलता है | उसने शिव को परमतत्व माना है | वह निर्गुण निराकार है | शिव सर्वव्याप्त है तथा सर्वशक्ति मान है |

शिव छुई थलि थलि रोज़ान

मो जान ह्युन्द त मुसलमान

त्रुक अयि छुक ति पान परज़िनाव

सोयि छायि साहिबस ज़ानि ज़ान

अर्थात शिव कण कण में व्याप्त है | आपस में हिंदू एवं मुसलमान का भेदभाव भूल कर उसकी शरण में जाओ, यदि बुद्धिमान हो तो मेरी बात समझ लो, यही वास्तव में ईश्वर की पहचान है |

लल्लद्य्द ईश्वर से एकस्थित होकर पूर्ण लगन के साथ प्रेम और उसे अपने में विद्यमान पाया था |

(पंडित पननि गरे |

वूछुम शिव त शक्ति मिलीथ) ||

परमतत्व में लीन होने के लिए गुरु उपदेश आवश्यक है | स्वयं लल्लद्य्द इस बात की ओर संकेत करती हैं :–

गोरन वनुनम कुनुय वचुन

न्यबर दोपनम अन्दर अचुन

तवय ह्योतूम नंगय नचुन |

गुरु ने मुझे एक अध्यात्मिक बात बताई–संसार के मोह बंधन को छोड़ और अपने अंतर को खोज | उसी कथन को मैंने अपने लिए उपदेश समझा और इस कारण मैं विवस्त्र नाचने लगी |

काव्य सौन्दर्य की दृष्टि से भी 'लल्लवाख' श्रेष्ठ है | इस महान कवयित्री की भाषा मूलतः निष्ठ है इसी कारण वाखों में संस्कृत शब्दों का प्राचुर्य है |

लल्लद्यद के पश्चात प्रसिद्ध संत कवि शेख नूर–दीन वली हुए हैं | नुन्द ऋषि का जन्म कब हुआ था इस पर विद्वानों के

भिन्न भिन्न मत है और मरण तिथि पर भी अधिक विवाद है | शेख नूर–दीन वली की जीवन संबंधी जो सामग्री मिलती है, वह मुख्यतः विभिन्न ऋषिनामों पर आधारित है | बाल्यकाल में ही इनका विवाह हुआ था और कुछ ही समय पश्चात् ग्राहस्थिक जीवन से निराश होकर वे गुफ़ा में रहने लगा 11 और उसी गुफ़ा में बारह वर्ष तक कठिन तपस्या की | इन्द्रियों को शेख ने एक शत्रु के रूप में माना है जिन से वह सतर्क रहने का बार–बार उपदेश देते हैं |

नफसय मोरुस तु वाय

खटिथ रूदुम गटे

अथि हय यिहम तु हाय

करतल छुनहस हटेय |

अर्थात मुझको नफस ने मार ड़ाला, वह अंधेरे में मुझ से दूर बैठा है न जाने कहाँ | यदि वह मेरे हाथ आता तो मैं उसका गला तलवार से काट देता |

शेख नूर–दीं वली सदाचार, पारस्परिक सद्भाव ज्ञान तथा ईश्वर भक्ति पर अधिक जोर दिया है उनके श्रुकों अथवा श्लोकों

में ज़ात-पात का विरोध लक्षित होता है | वे हिंदू और मुसलामानों को एक ही माता-पिता का संतान मानते हैं |

उत्थान काल :- कहा जाता है कि सन् १३३९ ई.१५५५ 12 तक विभिन्न शाहमीरी सुलतान कश्मीर पर राज करते रहे | जिन में सुलतान शमसुद्धीन, सुलतान कुतुबुद्धीन, सुलतान शहाबुद्धीन, सुलतान सिकंदर बुतशिकन, सुलतान जेनुलआबिदीन, सुलतान हसन शाह आदि के नाम उल्लेखनीय हैं | इस वंश के सर्वाधिक लोकप्रिय सुलतान में यहाँ की हिंदू एवं मुसलमान जनता को समान अधिकार प्राप्त हुए | उनके शासन काल में कला एवं साहित्य की विशेष उन्नति हुई | बडशाह के राज्यकाल में कश्मीरी भाषा तथा साहित्य का सर्वागीण विकास हुआ | उन्होंने कश्मीरी भाषा में लिखी कई पुस्तकों का अनुवाद फ़ारसी में करवाया और संस्कृत व फ़ारसी की कुछ ग्रंथों का कश्मीरी में अनुवाद करवाया | जनता के हित में किये उसके कार्यों के कारण कश्मीरी इतिहास में उसे बड़शाह अर्थात महान शासक कहा जाता है 13 |

उनके शासनकाल में जिन कवियों ने कश्मीरी में काव्य रचना की उनमें उल्लेखनीय है :- श्रीवर, सोमपण्डित, बाबा नसीउद्धीन, बाबा बामुद्धीन, योधभट्ट आदि |

शाहमीरी वंश का अंत होते ही चक नरेशों ने कश्मीर पर राज किया | इस काल में रानी हब्बाखातून का जन्म चंदहार गाँव के एक सामान्य कृषक के घर में हुआ था | इनका नाम ज़ून

(चंद्रमा) था | एक जनश्रुति है कि ज़ून सचमुच चाँद जैसी सुंदर थी | प्रारंभिक शिक्षा प्राप्त करने के पश्चात इनके माता-पिता ने इनका विवाह करने का निर्णय किया | दुर्भाग्य से यह रिश्ता अधिक दिनों तक न चल सका, क्योंकि अज़ीज़ लोन मुर्ख एवं कठोर हृदयी था | एक दिन अपनी सखियों के संग खेत पर काम करते हब्बाखातून गीत की कुछ पंक्तियाँ अपनी मधुर कण्ठ में गुनगुना रही थी | इसी बीच राजा युसुफशाह शिकार की खोज में उधर से गुज़रा | यूसुफ़शाह उसके संगीत-कौशल को देख कर उस पर मुग्ध हो गए और कुछ समय के पश्चात अज़ीज़ लोन से तलाक दिलवाकर यूसुफशाह ने हब्बाखातून के साथ विवाह किया 14 | हब्बा के जीवन में एक अन्य महान घटना हुई | यूसुफ़शाह मुगलों द्वारा बंदी बनाए जाने के कारण उनका सम्पूर्ण हृदय फूट पड़ा और अपने प्रियतम के विरह में तड़पती रही | इस युग में उन्होंने अपने प्रेमी के वियोग में जो गीत गाये, वह कश्मीरी साहित्य की एक अमूल्य निधि है |

च कम्यू सोनि म्यानि ब्रम दिथ न्युनखो

च किहोज़ी गायि म्या न्य दुय

चख़ त्राव वुय मलाल व् वंद छुय न यिवान

च किहोज़ी गायि म्या न्य दुय

अर्थात तुझे मेरी किस सौत ने भरमाया जो आप नफरत करने और विरक्त रहने लगे मुझसे पिया | मेरे पिया छोड़ दे यह

मलाल यह गुस्सा, तुझे मैंने कब से बसा लिया | मैं आश्चर्य हूँ कि तुझे मेरे साथ क्यों नफरत होने लगी |

हब्बाखातून कश्मीरी प्रेम गीतों की जननी मानी जाती है | उनके गीतों में जो दर्द है वह शायद कहीं ओर मिलना मुश्किल है | कश्मीरी संगीत को सर्वप्रथम संपादित करने का श्रय उन्हीं को दिया जाता है 15 |

हब्बाखातून के पश्चात एक ओर महत्वपूर्ण कवयित्री अरणीमाला है | इनका जन्म जिला बारामुला के पल्हालन गाँव के एक हिंदू परिवार में हुआ था | अपने जन के बारे में कवयित्री एक स्थान पर स्वयं संकेत करती हैं :–

सोन ही फोजखय वनन त क्रडजालन

पलहालन माल्युन छुय 16 |

रे यासमन के सुनहरी फूल तू जंगलों एवं झाड़ियों में खिल उठा 'पलहालन' में तेरा पीहर है | कहा जाता है कि इनका विवाह युवावस्था में ही उस समय के एक प्रसिद्ध विद्वान भवानीदास काचरू के साथ हुआ था | भवानीदास काचरू एक दरबारी कवि थे, वे दरबारी रंगा रंग में इतना अधिक खोए कि विवाह के कुछ समय पश्चात ही उन्होंने अरणीमाला को त्याग दिया | अरणीमाला के लिए यह एक गहरा घाव था जिसने उसे कवि बना दिया | अरणीमाला न जाने क्या क्या सपने क्या क्या उम्मीदें और कल्पनाएँ आँखों में बसाकर गई होगी पर वह सब उस निष्ठुर पति ने राख कर दिये थे | इसके अतिरिक्त भी वे अपने पति को प्रिय पुरुष मानती रही कि शायद कभी न कभी वह मेरे पास आएगा | पति द्वारा त्याग दिए जाने के बाद वे अपने

पिताग्रह में रही | उसका दिल जीतने में कोई कसर नहीं छोड़ी, फिर भी इसका कोई प्रभाव उसके पति पर नहीं पड़ा | उनके गीतों में जो दर्द अभिव्यक्त है उसकी मार्मिकता तथा सुन्दरता का कश्मीरी लोकमानस पर अधिक प्रभाव पड़ा है |

ख्वाजा हबीब का जन्म नोशहरा में हुआ था | पिता का नाम शमस गनाई बताया जाता है | पिता के कहने पर नमक का व्यवसाय करते थे लेकिन इस व्यापार से इनका जी नहीं लगा | इसके लिए प्रसिद्ध है कि इन्होने कभी तराजू को हाथ नहीं लगाया | ग्राहक स्वयं सौदा तोल के ले जाते है, क्योंकि वे कुरआन–पाक का अध्ययन करने में व्यस्त रहते थे | इन्होने अधिक फ़ारसी भाषा में ही कहा तथा कश्मीरी में इनके कलाम की मात्रा बहुत कम है | मौशहरी के गीतों में सूफीयत का रंग अधिक देखने को मिलता है |

च रोसतुय दिन क्योह बरयो मदनो

म्यानि मदनो लदयो दानपोश त ही

छारान लूस स कोह नो वदयो

दपतो च कम्यू प्रज़ छय

हावतम दीदार छम चान्य ला दिनो

म्यानि मदनो लदयो दानपोश त ही |

अर्थात ऐ मेरे प्यारे मैं तेरे बिना दिन कैसे बिताऊँ तो आ, मैं तुझे आनार तथा जूही पुष्प दूं | तुझे ढूंढते ढूंढते मैं ढलते सूर्य की सदृश्य क्षाम हो गई | अब बता तू कहाँ चला | अपना दीदार तो दे, मैं कब से तेरी आस लगाए बैठा हूँ | आ, तुझे अनार तथा जूही के पुष्प दूं |

साहब कौल इस युग के एक ओर महत्वपूर्ण कवि रह चुके हैं | इनका जन्म श्रीनगर के हब्बाकदल इलाके में हुआ था | इन्होने कश्मीरी तथा संस्कृत दोनों में कवितायें की | संस्कृत में रचित इनकी काव्य रचनाएं 'देवी विलास', 'शिव–सिद्ध–नीति', 'गुरुव्रत–चिंतामणि', 'गीता–सार', आदि | कश्मीरी में रचित इनकी दो काव्य रचनाएं हैं 'कल्प–वृक्ष', और 'जन्मचरित' | कहा जाता है कि कल्पवृक्ष एक कलापूर्ण कृति है | जिसमें कश्मीरी के अतिरिक्त संस्कृत, फ़ारसी से लद्दाखी तक के शब्दों का प्रयोग किया गया है |

'जन्म्चरित' के बारे में कहा गया है कि यह इनकी प्रसिद्द काव्यवृति है और लम्बी कविता भी है | जिसमें ज़िन्दगी अपनी कथा स्वयं कहती है | इस कविता के मुख्य विषय यही है कि वह कहाँ से आया, कश्मीर कैसे पहुंचा, उस पर किन किन सम्प्रदायों का प्रभाव पड़ा | उनकी अन्य दो कश्मीरी रचनाओं 'कृष्णावतारचरित' एवं 'आत्मचरित' का भी उल्लेख मिलता है |

रूपभवानी (अखिलेश्वरी) :- संत परम्परा को आगे ले जाने वाली में रूपभवानी का नाम भी उल्लेखनीय है | इनका जन्म

भिन्न भिन्न विद्वानों ने भिन्न भिन्न माना है | निश्चित रूप से इतना कहा जाता है कि इनका जन्म श्रीनगर के हिंदू जाति माधवराम (दर) के घर में हुआ था | अपने पिता से ही गुरु शिक्षा ग्रहण की थी | उन्होंने घर में ही संस्कृत एवं फ़ारसी की शिक्षा भी प्राप्त की थी | रूपभवानी का विवाह अल्प आयु में ही हुआ था | इन्हें भी लल्लद्यद के ही समान ससुराल में अपनी सास का कुव्यवहार सहन करना पड़ा | परिणामस्वरूप यही हुआ कि कुछ समय के पश्चात ही पति के घर को छोड़ के अपने पिताग्रह चली आई और कहा जाता है कि वे मायके में भी संतुष्टि से नहीं रह पाई | घरबार छोड़ कर चश्मासाहबही, मनिगाम, लार तथा वाकुर आदि स्थानों में वर्षों भटकने के बाद कवयित्री ने जीवन के अंतिम वर्ष अपने मायके में ही व्यतीत किए | इनके पद कश्मीरी के अतिरिक्त संस्कृत, फ़ारसी तथा हिंदी भाषा में भी मिलते हैं18 |

'महमूद गामी' भी एक महत्वपूर्ण कवि है | इनका जन्म अनंतनाग तहसील में डूरूगाँव के पास हुआ था | यह वह युग था जब कश्मीर में फ़ारसी राजभाषा थी, और कश्मीरी में लिखना एक साहस का काम था | उन्होंने अपनी कविता कश्मीरी में ही अधिक लिखी तथा फ़ारसी में कम | महमूद की कृतियों में 'लैला मजनून', 'यूसुफ ज़ुलेखा' और एक अन्य श्रेष्ठ मसनवी 'शेखसेना'19 |

इस युग के दुसरे प्रसिद्ध कवि वली उल्लाह मतु हुए है | मतु के जन्म और मरण तिथि पर निश्चित रूप से कुछ नहीं कहा

जा सकता है | इतना ज्ञात है कि वे बडगाम कसबे के बुहन गाँव के रहने वाले थे और मृत्यु मदीने में हुई | उन्होंने कश्मीरी भाषा में मसनवी 'हीमाल नागराय' और दो अन्य कृतियाँ 'चिहिल–असर' एवं 'ज़रूरियाते दीन' लिखी20 | मुहम्मद योसुफ़ टंग का कहना है कि 'मसनवी हीमाल नागराय' एक ऐसा कथन है जिसकी कथाभूमि कश्मीर है जो यहाँ की उपज है | मतु अपने इस मसनवी के लिए प्रसिद्ध है |

महमूद गामी के समकालीन में एक ओर प्रसिद्ध कवि मकबूलशाह क्रालवारी | क्रालवार गाँव में मकबूलशाह उत्पन्न हुए थे | उनका जीवन दुखों से भरा हुआ है उन्होंने सारी ज़िन्दगी सदमे एवं तकलीफों को सहते हुए बिता दी और इस दर्द को अपने कविता में व्यक्त किया | 'गुलरेज़' उनकी सर्वोत्कृष्ट काव्य कृति मानी जाती है | इसके अतिरिक्त उन्होंने अन्य काव्य ग्रंथों की भी रचना की है, जिनमें 'बहारनामा', 'ग्रीस्तनामा', 'पीरनामा', 'आबनामा', 'बेबूझनामा', और 'नारनामा', लेकिन ये आज उपलब्ध नहीं हैं |

प्रेमाख्यान काल:– इस काल का संपूर्ण काव्य मुख्यतः दो वर्गों में विभक्त होता है | प्रथम भाग के अंतर्गत वह काव्य आता है जिस का मूलाधार सूफी दर्शन है | इस काव्य–वर्ग के प्रेममार्गी कवियों ने उनके सूफी काव्यों की रचना की | इन में प्रमुख हैं :– न्याय साहिब, शाह–गफूर, रहमान ड़ार, वाज़ा महमूद, शमस फ़कीर, अहमद बटवारी, स्वछक्राल, समदमीर,

अहद ज़रगर आदि |दूसरे के अंतर्गत वह काव्य आता है जिसका मूलाधार राम भक्ति एवं कृष्ण भक्ति है | इस काव्य वर्ग के कवियों ने राम तथा कृष्ण सम्बंधित चरित काव्यों को कश्मीरी में काव्य रूप देने में विशेष सफलता प्राप्त की है | प्रकाशराम, कृष्णराज़दान, परानंद, लक्ष्मण रैना बुलबुल आदि के नाम उल्लेखनीय हैं 21 |

आधुनिक युग :- इस काल का प्रारंभ आज़ाद, महजूर और दीनाथ नादिम की रचनाओं से होता है | इस युग के प्रसिद्ध कवियों में महजूर लोकप्रिय है | इनका जन्म पुलवामा तहसील के मित्रिगाम में हुआ था | वे आरम्भ में फ़ारसी भाषा में लिखने लगे लेकिन तुरंत ही देशी भाषा की ओर आकृष्ट हुए | इनके गीतों को खेतों में काम करनेवाले किसान, पाठशालों में पढ़ने वाले छात्र सभी एकरूप से गाते हैं |

महजूर के समकालीन एक ओर सर्वश्रेष्ठ आधुनिक कवि अब्दुल अहद आज़ाद | इनका जन्म रंगर नामक गाँव में हुआ था | उन्होंने पंद्रह सोलह वर्ष की आयु में ही कश्मीरी में अपनी पहली ग़ज़ल की रचना की, लेकिन बाद में उर्दू में लिखने लगे थे | आज़ाद एक महान कवि होने के साथ साथ एक विद्वान भी थे | दुर्भ गय से उनकी मृत्यु अल्प आयु में ही हुई |

पण्डित दीननाथ नादिम एवं मास्टर जिंदा लाल कौल भी इस युग के प्रसिद्द कवि माने जाते थे | प्रो० रहमान राही भी

कश्मीरी भाषा के एक प्रसिद्द कवि है | राही साहब कश्मीरी भाषा के एक प्रगतिशील लेखक माने गए हैं |

निश्चय रूप से कहा जाता है कि अनेक अन्य कवियों ने इस क्षेत्र में उत्तम योगदान दिया, जिनमें प्रसिद्द है– गुलाम रसूल नाज़की, नूर मुहम्मद रोशन, गुलाम नबी फिराक, अमीनकामिल, नंदलाल अम्बारदार, मक्खन लाल, चमन लाल चमन, प्रेमनाथ, गुलाम नबी ख़याल | कश्मीरी भाषा में गद्य का विकास आधुनिक युग में ही हुआ | कश्मीरी साहित्य में उपन्यास तथा कहानियों की रचना भी बहुत मिलती हैं |

कश्मीरी भाषा में 'भोंगवेश' एवं 'गुलरेज़' दो पत्रिकाएँ कुछ समय तक प्रकाशित होती रही | आज कल कश्मीर विश्वविध्यालय में कश्मीरी विभाग के संरक्षण में 'अनहार' पत्रिका प्रकाशित हो रही है और कलचरलअकादमी द्वारा 'शीराज़ा' प्रकाशित हो रही है | जम्मू कश्मीर अदबी मरकज़ कामराज़

निसंदेह कश्मीरी भाषा और साहित्य का भविष्य बड़ा कान्तियुक्त है | राज्य सरकार की ओर से भाषा की उन्नति के लिए अधिक प्रोत्साहन दिया जा रहा है एवं सहायता भी मिल रही हैं | अपनी भाषा की उन्नति के लिए आज का विद्वत समाज तन, मन एवं धन से लगा है |

संदर्भ ग्रन्थ सूची :-

1. कश्मीरी भाषा और साहित्य, पृष्ठ.29. डॉ.शिबन कृष्ण रेणा, प्रकाशक संमार्ग प्रकाशन दिल्ली,१९७२
2. कश्मीरी जुबान और शायरी भाग 1,पृष्ठ.28. अब्दुल अहद आज़ाद, प्रकाशक कलचरल अकादमी जम्मू कश्मीर श्रीनगर,२००५
3. 'कश्मीर' खण्ड चार, पृष्ठ.७५
4. लिट्रेचर इन माडर्न इन्डियन लैंग्वेजज़, पृष्ठ. ९६
5. कश्मीरी भाषा और साहित्य, पृष्ठ.२३
6. स्टडीज़ इन कश्मीरी, पृष्ठ.२८–२९
7. कश्मीरी ज़बान और शायरी भाग 2, पृष्ठ.५६–१०३
8. हिंदी साहित्य कोश,भाग 1, पृष्ठ.२३२
9. भारतीय भाषाओं के साहित्य का संक्षिप्त इतिहास, पृष्ठ.१०७, डॉ. गोपाल शर्मा, १९७४
10. कश्मीरी भाषा और साहित्य, पृष्ठ.५६
11. कश्मीरी ज़बान और शायरी, भाग 2, पृष्ठ.१६३
12. का'शरी अद्बुक तवारीख, पृष्ठ.१८१, अवतार कृष्ण रहबर
13. वही
14. कश्मीरी जबान और शायरी, भाग 2, पृष्ठ.२०४
15. भारतीय भाषाओँ के साहित्य का रूप दर्शन, पृष्ठ.१६५, गौरो शंकर पंडया
16. कश्मीरी जबान और शायरी, भाग 2, पृष्ठ.२३९

17. कश्मीरी भाषा और साहित्य, पृष्ठ.८९, डॉ.शिबन कृष्ण रेना
18. कश्मीरी ज़बान और शायरी, भाग 2, पृष्ठ.२२२–२२५
19. वही, पृष्ठ.२४८–२५१
20. वही, पृष्ठ.२७०–२७१
21. कश्मीरी भाषा और साहित्य, पृष्ठ.९५

शोधार्थी:- संस्कृत विभाग

कश्मीर विश्वविध्यालय

श्रीनगर

फ़ोन नो.

7889341773

हिंदी साहित्य को असग़र वजाहत का योगदान

प्रो. ज़ोहरा अफ़ज़ल

शाज़िया बशीर

असग़र वजाहत उन बिरले लेखकों में हैं जिन्होंने अपनी कलम का जादू हिंदी साहित्य की प्रत्येक विधा जैसे कहानी, उपन्यास, नाटक, नुक्कड़ नाटक, यात्रावृत्तांत, असंख्य वृत्तचित्र, टेलीविजन लेखन, फिल्म एवं पटकथाएँ आदि पर चलाया। खैर साहित्य की ऐसी कोई विधा ही नहीं है जिस पर असग़र वजाहत का अधिकार न हो। उन्होंने हिंदी साहित्य को ऐसी रचनाएँ भेंट की जिन पर साहित्य एवं पाठक आजीवन गर्व महसूस करेंगे। उन्होंने अपने रचनात्मक कौशल को हिंदी तक ही सीमित नहीं रखा बल्कि देश–विदेश की भाषाओं पर भी अपनी लेखनी से न सिर्फ अपनी पहचान बनायीं बल्कि नाम भी कमाया।असग़र वजाहत ने डॉ.कार्लो कपोला,डॉ. स्टीव पूलस तथा डॉ. मारिया नेज्यैशी की सहायता से हिंदी रचनाओं का अंग्रेज़ी तथा हंगेरियन भाषाओं में अनुवाद कर के प्रकशन कराया और क़ुर्रतुलएन हैदर

के उर्दू उपन्यास 'आखिरीशब के हमसफ़र' का 'निशांत के सहयात्री ' नाम से हिंदी रूपांतर कर ज्ञानपीठ द्वारा प्रकाशित कराया। हिंदी साहित्य में असग़र वजाहतका का योगदान ढूँढना दोनों असग़र वजाहत के रचना–संसार एवं हिंदी साहित्य के लिए पानी पानी कर देनी वाली बात सी है फिर भी हिंदी साहित्य के विभिन्न क्षेत्रों में इनकी लेखनी की सराहना एवं इनकी सोच का सम्मानकरना हर पाठक का कर्तव्य है।

असग़र वजाहत ने अपनी लेखनी का आरम्भ छात्र जीवन में ही एक कविता लेखक के रूप में किया था और फिर अन्य विधाओं में भी अपने पंख ऐसे फैलाए कि पढ़ने वालों में भी उड़ान का हौसला और हिम्मत भरते चले गए।

स्वन्तन्त्रोत्तर हिंदी कहानी साहित्य को जिन रचनाकारों ने अपनी सार्थक रचनाकार्य द्वारा व्यापक फ़लक प्रदान करने में सहायता की,उनमें असग़र वजाहत का एक महत्वपूर्ण स्थान है।उन्होंने विभाजन की त्रासदी के साथ–साथ मानवीय मूल्यों के हास एवं हनन, कला और साहित्य के क्षेत्र में बढ़ते राजनीतिक हस्तक्षेप, निम्न और मध्यवर्गीय जीवन के संघर्ष को पूरी जीवंतता के साथ अपनी कहानियों में चित्रित किया है। उनकी कहानियों में भारतीय जन–जीवन अपने पूरे परिवेश के साथ भिन्न–भिन्न सन्दर्भों में उभरकर सामने आया है।

कहानीकार के रूप में:-

सठोत्तरी कहानी के अन्य रचनाकारों की भांति असग़र वजाहत ने भी अपना कथा–परिवेश का केंद्र अधिकतरमध्यवर्ग के जीवन को बनाया। उनके समकालीन कहानीकारों के यहाँ मध्यवर्ग के उच्च मध्यवर्गीय और निम्न मध्यवर्गीय दोनों वर्गों और

उनके अत्यंत सूक्षम स्तरों की विविधता और सूक्ष्मदर्शिता प्रायः दुष्प्राप्य है।मगर असग़र वजाहत की कहानियों में यह सारे तत्व मौजूद हैं। उनके कहानी–संग्रहों में 'दिल्ली पहुँचना है', 'स्विमिंग पूल', 'सब कहाँ कुछ' और 'में हिन्दू हूँ' सामान्य व्यक्ति की ज़िन्दगी का प्रमाणिक दस्तावेज़ प्रस्तुत करने में पूर्ण रूप से सक्षम हैं।

असग़र वजाहत अपनी निजी ज़िन्दगी में सरलता को प्रमुखता देने वाले कथाकार हैं।वह किसी भी प्रकार के बनावटीपन, बड़बोलापन एवं अतिश्योक्ति आदि से व्यक्तिगत जीवन में भी चिढ़ते हैं और यही प्रवृत्ति परिवर्तित होकर उनकी कहानियों में भी प्रयुक्त है। उन्होंने अधिकतर साम्प्रदायवाद और उससे जुड़े तत्ववाद पर खुलकर एवं पर्याप्त कटुता के साथ लिखा है। उन्होंने मुस्लिम सम्प्रदायवाद पर अधिक बहस की है और गैर–सांप्रदायिक व धर्म–निराश्रित लेखक का कर्तव्य है कि वह पहले अपने वर्ग एवं अपने तबके के लोगों को देखे। अगर प्रत्येक व्यक्ति अपने–अपने सम्प्रदाय पर इसी प्रकार विशेष ध्यान केन्द्रित करेगा तो धीरे–धीरे साम्प्रदायिकता को फैलाने एवं हवा देने के पीछे छुपी गन्दी एवं घिनौनी मानसिकता का उन्मूलन संभव है। उनकी इसी प्रवृति के कारण उन्हें समय–समय पर मुसलमान लेखक का टैग देने के असफल प्रयास भी किये गए हैं।2004 में लखनऊ में आयोजित कथाक्रम सम्मान के दौरान हिंदी के मशहूर लेखक राजेंद्र यादव ने असग़र वजाहत को मुसलमान लेखक के नाम से संबोधित किया था। धर्म चाहे कुछ भी हो, यह तथ्य नाभिनालबद्ध है कि असग़र वजाहत हिंदी भाषा के सफल एवं सार्थक लेखक होने के साथ–साथ भारत देश के नागरिक हैं।

नाटककार के रूप में:-

असग़र वजाहत के सफल नाटककार ही नहीं बल्कि एक कुशल रंगकर्मी भी हैं| उन्होंने हिंदी नाट्य–सहिय को 'फिरंगी लौट आए', 'इन्ना की आवाज़', 'वीरगति', 'सबसे सस्ता गोश्त', 'जिन लाहौर नहीं वेख्या वो जन्मियाई नाहि' और 'गोडसे @गाँधी,कॉम' जैसी सफल एवं सार्थक रचनाएँ भेंट की हैं जिनका देश–विदेश मेंसफलतापूर्वक मंचन हो चूका है| वह अपने नाट्य–लेखन से स्वयं कुछ ख़ास संतुष्ट नहीं दिखाई देते| वह 25 मई 2008 को नवभारत टाइम्स में लिखित अपने लेख 'नाट्य–लेखन को समर्पित नहीं है' में लिखते हैं "हिंदी लेखन की प्रतिभा जो कहानी,उपन्यास,संस्मरण लेखन के क्षेत्रों में दिखाई पड़ती है वह नाटक में नज़र नहीं आती|" उनके इस कथन से उनका तात्पर्य है कि हिंदी की श्रेष्ठ बुद्धिवैभव का लाभ जो अन्य विधाओं को प्राप्त है वो नाटक को नहीं है|इसका कारण वो उन विशेष परिस्थितियों को मानते हैं जिनके आभाव में किन्ही जीवंत एवं मंचानुकूल नाटकों की रचना संभव नहीं है| उनका मानना है कि अच्छे नाटक लेखन की पूरी प्रक्रिया मंच की लोकतान्त्रिक अवधारणा से मेल खाती है और हमारे देश की व्यवसायिक रंग मंडलियाँ इतनी सशक्त नहीं हैं कि नाटककार अपने से चुन सकें| ऐसी परिस्थितियों में नाटककार और रंगमंच के बीच की दूरी लगातार बढ़ रही है| एक अन्य समस्या वह मौलिक हिंदी नाटकों का प्रायः कम मंचन मानते हैं| नाटक दरअसल रंगमंच को ध्यान में रखकर लिखा जाता है और मौलिक नाटकों का मंचीकरण न हो पाना नाटककारों को हतोत्साहित करता है| रंगमंच को ध्यान में रखकर असग़र वजाहत का नाटक 'जिन

लाहौर नहीं वेख्या' हिंदी नाट्य साहित्य में मील का पत्थर सिद्द हुआ है|इस नाटक की देश–विदेश में अनेक प्रस्तुतियां हुई हैं और सीमा से बाहर लोगों ने भी इसे उतना ही सराहा जितना सीमा के भीतर लोगों ने| अपने विचारों एवं भावनाओं को साहित्य की सशक्त विधाओं द्वारा लोगों तक पहुंचाना असग़र वजाहत की एक निपुण कला है|

उपन्यासकार के रूप में:-

एक उपन्यासकार के रूप में असग़र वजाहत ने जीवन के यथार्थ को इस तरह चित्रित करते हैं कि उससे जीवन और समाज का मानवीय सम्बन्ध टी होता है| प्रेमचंदोत्तर सामजिक यथार्थ को चित्रित करने का दायित्व जिस प्रकार इन्होंने निभाया उतना किसी और साहित्यकार ने नहीं| प्रेमचंद के पश्चात सामाजिक यथार्थ की उनकी कथा–परंपरा को रचना तथा विचार दोनों स्तरों पर अपने समय– संदर्भों में नए विचारों, तेवरों एवं सामाजिक यथार्थ के नए विवक्षा में विकसित करने वाले कथाकारों में असग़र वजाहत का नाम सर्वोपरि हैं| असग़र वजाहत के कथा–मन को श्री सरवेश्वर दयाल सक्सेना ने परखने की कोशिश की है| उनके शब्दों में–" असग़र वजाहत में प्रेमचंद और मंटो का सुखद मिश्रण है| यदि वह प्रेमचंद की तरह अपनी धरती से और गहराई से जुड़ सके, मंटो की तरह सामजिक चीरफाड़ में एक सर्जक की तरह एक स्तर पर निर्मम और दूसरे स्तर पर मानवीय करुणा से भाषा की कैंची संभल सके तो हिंदी कहानी को बहुमूल्य योग दे सकेंगे|"[1]

असग़र वजाहत के उपन्यासों में भारतीय जीवन के बदलते परिवेश, सामजिक संघर्ष, आर्थिक आभाव,मानवीय मूल्यों का

[1]सर्वेश्वरदयाल सक्सेना–सम्पूर्ण गद्य रचनाएँ–खंड ३–प्रष्ठ १२०–१२१

हनन, नैतिक मूल्यों का दमन, राजनीतज्ञों द्वारा किये जाने वाले भ्रष्ठाचार एवं शोषण, महानगर की आपाधापी में जन्मा वैचारिक संघर्ष, छात्र जीवन से जुडी समस्याएँ आदि समस्याओं के अतिरिक्त फ़िल्मी दुनिया से जुडी अनेक प्रकार की समस्याओं को उजागर किया है। असग़र वजाहत उपन्यासकार के रूप में अधिक सफल हुए हैं। उन्होंने छात्र जीवन से जुडी समस्याओं विशेषकर माता–पिता की आशाओं को पूरा करने में असमर्थ बच्चों को किस प्रकार अपनी निजी ज़िन्दगी में निराशा से जूझना पड़ता है इसका प्रमाण 'कैसी आगी लगाई' का साजिद है जो माता–पिता द्वारा डॉक्टर बनाने के सपने को पूरा करने के लिए अपने सारे सपनों से हाथ धो बैठता है। 'कैसी आगी लगाई' के लिए असग़र वजाहत को कथा यू.के सम्मान प्राप्त हुआ है। इनके उपन्यासों में जीवन की विशद व्याख्या एवं विस्तार है और सभी अंतर्विरोधों के बीच मानव–जीवन और श्रेष्ठता के कलात्मक संकेत देखने को मिलते हैं।

उपन्यास लेखन की आवश्यकता एवं योग्यता पर उनका द्रष्टिकोण सुनिश्चित है। वह कहानी को पीट–पीट कर उपन्यास बनाने के पक्षधर बिल्कुल भी नहीं हैं। हालांकि उनका मानना है कि लेखक जो कुछ उपन्यास में लिख सकता है वो कहानी में लिखना संभव नहीं है और ना ही वो किसी प्रकार के समाजशास्त्रीय अध्ययन को उपन्यास मानने के पक्ष में हैं। उनके अनुसार कहानी से ज़्यादा स्वतंत्रता कभी–कभी लेखक को उपन्यास में प्राप्त होती है। उपन्यासों का समाजशास्त्रीय अध्ययन के विषय में वो कहते हैं–"आदिवासियों पर उपन्यास, दलितों पर उपन्यास, अंचलों पर उपन्यास अर्थात उपन्यास न हुआ कोई समाजशास्त्रीय अध्ययन हो गया। मैं तो बिलकुल भी नहीं कहना चाहता कि उपन्यास समाजशास्त्रीय अध्ययन नहीं होता।लेकिन

अवश्य ज़ोर देकर कहना चाहता हूँ कि समाजशास्त्रीय अध्ययन उपन्यास नहीं होता। जहाँ जीवन का ताप न हो, न कला।जहां सहजता और जटिलता न हो, जहां जीवन की भट्टी में पक्के विचार न हो, जहाँ व्यापक जीवन की गतिशीलता न हो, जहाँ उत्कृष्ठ प्रतिभा न हो, अबाध गति से भाषा अपना रास्ता न बनाती हो, जहाँ व्यक्ति और समाज के मर्म तक पहुँच कर वापस आने की कला न हो, जहाँ व्यक्त और अव्यक्त के बीच के बीच की दूरी न मिट गयी हो, वहां उपन्यास नहीं होता।"[2]

आलोचक के रूप में:-

आलोचना के क्षेत्र में भी असग़र वजाहत ने अपनी प्रतिभा को दर्शाया है। इनके प्रमुख आलोचनात्मक ग्रंथों में 'हिंदी उर्दू की प्रगतिशील कविता' और 'हिंदी कहानीः पुनर्मूल्यांकन' का नाम लिया जा सकता है। इसके अतिरिक्त इन्होंने विभिन्न पत्र–पत्रिकाओं में विभिन्न सामजिक मुद्दों को लेकर आलोचनात्मक द्रष्टिकोण से अपनी आवाज़ उठायी है।

असग़र वजाहत ने अपने समकालीन साहित्यकारों एवं साहित्यिक रचनाओं को लेकर आवश्यकतानुसार समय–समय पर टिपण्णी भी की है। यशपाल के समाजवादी मन को लेकर वह लिखते हैं–"शहर का मज़दूर वर्ग जो हिंदी कथा सहित्य से बहिष्कृत था, यशपाल के साहित्य में अपनी पूरी गरिमा एवं सार्थक भूमिका के साथ आया है।मध्यवर्ग या ग्रामीण जीवन प्रेमचंद की विशेषज्ञता है तो शहर का मज़दूर वर्ग पहली बार यशपाल के साहित्य की पहचान है। इस मज़दूर वर्ग में

[2]असग़र वजाहतहंस –जहां व्यक्ति और व्यक्ति की दूरी मिट गयी हो वहां उपन्यास नहीं होता– जनवरी1999-प्रष्ठ110

गतिशीलता है। उसकी एतिहासिक भूमिका को यशपाल अच्छी तरह पहचानते हैं और वे यह भी जानते हैं कि इस वर्ग में भटकाव की कौन–सी दिशाएँ हो सकती हैं। यही कारण है कि यशपाल के साहित्य में मजदूर वर्ग सम्भावना और सीमाओं के साथ चित्रित हुआ है।"[3]

असग़र वजाहत ने 'भारतीय मुसलमानः वर्तमान और भविष्य' और 'प्रवासी साहित्य' जैसे सामजिक मुद्दों के लिए लिखते रहे हैं। इसके अतिरिक्त असग़र वजाहत ने कथाकार भीष्म सहनी के रचनात्मक व्यक्तित्व को केंद्र में रखकर उनका एक साक्षात्कार भी लिया है। इन्होंने राही मासूम रज़ा से अलीगढ मुस्लिम विश्वविद्यालय में हुई बात–चीत

के कुछ अंशों को प्रो. कुंवरपाल सिंह के साथ बांटा है जिसे उन्होंने अपनी पुस्तक 'राही और उनका रचना संसार' में संग्रहित किया है साथ ही इस पुस्तक में असग़र वजाहत और जामिया मिल्लिया इस्लामिया के कुलपति सय्यद शाहिद मेहंदी के बीच की वार्तालाप भी संगृहीत है।

अनुवादक के रूप में:-

अनुवाद के क्षेत्र में भी असग़र वजाहत ने अपनी प्रतिभा एवं प्रतिष्ठा के झंडे गाड़े हैं। इन्होंने क़ुर्रतुलएन हैदर के उर्दू उपन्यास 'आखिरी शब के हमसफ़र' का हिंदी में 'निशांत के सहयात्री' नाम से अनुवाद किया। यह उपन्यास 1989 में ज्ञानपीठ द्वारा पुरस्कृत है और इसका अनुवाद भी ज्ञानपीठ द्वारा सम्पादित है।असग़र वजाहत ने भारतीय भाषाओं के अतिरिक्त अनेक

[3]यशपालःपुनर्मूल्यांकन – प्रो. कुंवरपाल सिंह–प्रष्ठ 144

कहानियों एवं लेखों का अंग्रेजी, रूसी, हंगेरियन तथा उज़बेक आदि विदेशी भाषाओं में कतिपय रचनाओं का अनुवाद एवं प्रकाशन किया। प्रो. मुहम्मद हस्सन के आलोचनात्मक ग्रन्थ का 'नज़ीर अकबराबादी'नाम से अनुवाद करने के अतिरिक्त 'न्यू राइटिंग इन इंडिया' शीर्षक से हिंदी कविताओं एवं कहानियों के अंग्रेजी अनुवाद का 'पेंग्विन' में प्रकाशन किया।

पत्रकार के रूप में:-

सन १९६८ से असग़र वजाहत नियमित रूप से एक पत्रकार के रूप में हिंदी की विभिन्न पत्र–पत्रिकाओं जैसे– 'हिंदुस्तान दैनिक', 'दहरा दैनिक', 'नव भारत टाइम्स', 'जनसत्ता', 'हंस', 'कथादेश', 'पहल', 'वर्तमान साहित्य' आदि मेंसक्रीय रूप से लिखते रहे हैं। इसके अतिरिक्त असग़र वजाहत 2007 में तीन महीनों के लिए bbchindiके अतिथि संपादक थे।

टेलीविज़न लेखक के रूप में:-

असग़र वजाहत ने अपनी पुस्तक 'टेलीविज़न लेखन' में दूरदर्शन लेखन की विभिन्न पद्धतियों के व्यावहारिक पक्षों को उदाहरण समेत मित्रवत शिक्षक की भाँती समझाया है। असग़र वजाहत स्वयं एक सफल पटकथा लेखक हैं जिन्होंने अपनी रचनात्मक प्रतिभा, बुनियादी जानकारी, अभियास एवं अनुशासन द्वारा दूरदर्शन की दुनिया में एक सफल पटकथा लेखक के रूप में अपना नाम कमाया। इन्होंने दूरदर्शन के अतिरिक्त कई अन्य ती.वी चैनलों के लिए एक दर्जन से अधिक कार्यक्रम लिखे हैं। प्रसिद्ध धारावाहिक 'बूँद–बूँद' में असग़र वजाहत आदिवासी जीवन से जुड़ी सभी कड़ियों को लोगों के सामने लाने में सफल

हुए हैं। इस धारावाहिक को लोगों ने काफी सराहा। दूरदर्शन लेखन के सम्बन्ध में असग़र वजाहत का विचार है कि आधुनिक जनसंचार पद्धतियों के विकास ने दृश्य–श्रव्य को अभिव्यक्ति का सरल एवं सशक्त माध्यम बना दिया है।

टेलीविज़न से जुड़ी अपनी सुप्रसिद्ध पुस्तक 'टेलीविज़न लेखन' में इन्होंने टेलीविज़न लेखन की संरचना और निर्माण की सभी प्रक्रियाओं एवं प्रविधियों के वर्णन के साथ–साथ महत्वपूर्ण और चर्चित पटकथाओं के अंश भी दिए हैं।

यात्रावृतांत:-

असग़र वजाहत ने देश–विदेश की अनेक यात्राएँ की हैं और अपने असंख्य लेखों में इन्होंने उन यात्राओं के बारे में लिख कर हिंदी यात्रा–साहित्य में भी अपना नाम जोड़ दिया। 'चलते तो अच्छा था' उनकी ईरान यात्रा पर आधारित है और 'इस पतझड़ में आना' हंगरी, बुदापैश्त की यात्रा पर आधारित है। इन्होंने केवल यात्रा का आनंद ही नहीं लिया बल्कि 'चलते तो अच्छा था' में ईरान के समाज, संस्कृति और इतिहास को समझने का प्रयास भी किया है। 'इस पतझड़ में आना' में बुदापैश्त की प्राकृतिक सुन्दरता, सभ्यता, संस्कृति, रीति–रिवाज और वहां के लोगों तथा पतझड़ में वहां की अति सुन्दर घाटियों के बारे में अपने अनुभवों को पाठकों के साथ बांटा है।

असग़र वजाहत आठवें दशक के महत्वपूर्ण कथाकार हैं जिन्होंने मध्यवर्गीय जीवन के साथ गरीबी रेखा से नीचे जी रहे लोगों की ज़िन्दगी पर अपनी कलम चलाई है। उन्होंने अपने आकर में छोटी–छोटी किन्तु संदेश में मोटी कहानियों, उपन्यासों, नाटकों की रचना की है और विद्रूपता, अमानवीयता एवं

सांप्रदायिक उन्माद में पागल मनुष्य पर अपनी लेखनी चलाई है। निष्कर्षतः असग़र वजाहत के ब्लॉग पर लिखा उनका यह रचनात्मक परिचय कितना सटीक है–" भारतीय समाज की उन आधारभूत विसंगतियों को असग़र वजाहत का लेखन सहजता से अभिव्यक्त करता है, जिन्हें हम जातिवाद, असमानता और दमन के रूप में जानते हैं।उनकी रचनायें अपनी विषयवस्तु में ही नहीं बल्कि प्रस्तुतीकरण में भी भिन्न हैं।"[4]उन्होंने चाहे कुछ भी लिखा हो पर उनका एक ही उद्देश्य रहा है मनुष्यता अर्थात इंसानियत। वह हर जगह केवल इंसानी फितरत की बात करते दिखाई देते हैं।

[4] Asgharwajahat.blogspot.com

नरेन्द्र कोहली के उपन्यास 'कर्म' का सशक्त पात्र अर्जुन:

एक विश्लेषण

सुरेश कुमार

शोध- छात्रकश्मीर विश्वविद्यालय

श्रीनगर (कश्मीर) 190006

'कर्म' उपन्यास नरेन्द्र कोहली द्वारा लिखित महासागर का तीसरा खंड है |प्रस्तुत उपन्यास में अर्जुन की महत्वपूर्ण भूमिका है | श्री कृषण के पर्थ संबोधन के कारण अर्जुन का नाम पर्थ पड़ा | महाभारत के विशाल आकर को समेटे अर्जुन एक पूरी कथा है | श्री कृषण को जय और अर्जुन को विजय का प्रतीक माना जाता है | महाभारत का मूल नाम जय कथा है इसी कारण यह कथन प्रसिद्ध है –'जहाँ जय है वहां विजय अर्थात् जहाँ धर्म है वहीँ जय है |'

अर्जुन हस्तिनापुर के राजा पांडु और कुंती का तीसरा पुत्र था | जिसे कुंती ने देवराज इंद्र के वरदान से प्राप्त किया था |अर्जुन महाभारत का महान योद्धा था महाभारत की साडी व्यथा उसके चरित्र के इर्द–गिर्द घूमती है जिससे यह सिद्ध होता है कि वह महाभारत का नायक था |महाभारत के विशाल युद्ध की जीत का श्रेय श्री कृषण और अर्जुन को ही जाता है|

अर्जुन संसार का सर्वश्रेष्ठ धनुर्धर बनकर भी हमारे सामने उभरता है|उसकी विद्या–कला के सामने संसार का कोई भी योद्धा नहीं टिक सकता था| अर्जुन आचार्य द्रोण का प्रधान एवं सर्वप्रिय शिष्य था |गुरु अर्जुन को अपार प्रेम करते थे |एक दिन द्रोण पानी में नाहा रहे थे कि अचानक एक जलजन्तु आचार्य के पेरों को काटने लगा जिसे द्रोण पीड़ा से चिल्लाने लगा और अपने शिष्यों को पुकारने लगे उनका कोई भी शिष्य आगे नहीं बढ़ा|तभी अर्जुन नेपानी में कूदकर आचार्य द्रोण को पकड़ लिया और जोर लगाकर आचार्य को खींचा वह ऐसे मुक्त हुए कि जैसे कुछ हुआ ही नहीं था|सचमुच में कुछ हुआ भी नहीं था |स्वयं आचार्य ने अपने शिष्यों की परीक्षा लेने का यह उपक्रम किया था | इस परिक्ष में अर्जुन को प्रथम स्थान प्राप्त हुआ था |अन्य सारे शिष्य बूरी तरह विफल रहे|

गुरु ने अर्जुन को गले लगाकर उसका माथा चूमा और आशीर्वाद दिया और कहा मैं अर्जुनको संसार का सर्वश्रेष्ठ धनुर्धर देखना चाहता हूँ |मेरी विद्या में ऐसा कुछ नहीं है जो में अर्जुन को

ना दूँ |प्रत्येक गुरु अपने लिए एक कला बचाके रखता है आचार्य द्रोण यह नहीं करेगा –'योग्य शिष्य को योग्य दान'|उनके अनुसार योग्य शिष्य ही गुरु– ज्ञान का प्रथम अधिकारी होता है |अर्जुन इस बात से बहुत प्रसन्न था कि गुरु ने उन्हें संसार की सर्वश्रेष्ट निधि दी है |

द्रोण ने कहा था की में अर्जुन को संसार का सर्वश्रेष्ठ धनुर्धर देखना चाहता हूँ |इसी कारण उन्होंने एकलव्य का अंगूठा गुरु दक्षिणा में माँगा था और कर्ण को निम्न जाती का कहकर शिक्षा नहीं दी थी | जिससे अर्जुन का कोई प्रतिद्वंद्वी प्रकट न हो सके और फलस्वरूप उन्होंने अपनी शिक्षा को कलंकित किया था|गुरु द्रोण द्वारा ली गई अनेक परीक्षाओं में प्रथम स्थान पानेवाले अर्जुन केलिए ही द्रोण ने यह सब किया था और अपने लिए अर्जुन से युद्ध में मृत्यु मांगी थी|

अर्जुन एक आज्ञाकारी शिष्य था जो अपने गुरु द्रोण के कहने पर गुरु दक्षिणा में राजा द्रोपद को बंदी बनाकर द्रोण के चरणों में डाल देता है |द्रोपदी को स्वयंवर में अर्जुन ने जीता था |किन्तु वह माँ कुंती के कहने पर पांच भाइयों की पत्नी बनती थी |

युधिष्ठिर के साथ एकांत देखने पर अर्जुन को बनवास भोगना पड़ा था |किन्तु इस बनवास में उन्होंने बहुत ज्ञान प्राप्त किया था |इसी बनवास के दौरान वह नाग कन्या उलूपी से गंधर्व–विवाह करते है और मणिपुर के राजा चित्रवाहन भी पुत्री

चित्रांगदा भी अर्जुन से विवाह करती है |स्वयं श्री कृष्ण अर्जुन पर इतने मोहित हैं कि उन्होंने अपनी बहन सुभद्रा का विवाह अर्जुन से करवाया था |

वेदव्यास के आदेश पर अर्जुन ने इन्द्रकील पर्वत पर तपस्या कर भगवान् शिव को प्रसन्न किया था और उनसे पशुपास्त्र प्राप्त किया था उसकी साधना से प्रसन्न होकर देवराज इंद्र उसे दिव्यास्त्र तथा देवास्त्र प्रदान करता है |देवराज इंद्र की सभा की अप्सरा उर्वशी अर्जुन के आगे प्रेम–प्रस्ताव रखती है जिससे अर्जुन अस्वीकार कर देता है |

युग के महान योद्धा अर्जुन को परिस्थितियों के कारण एक वर्ष किन्नर बनकर रहना पड़ता है जब वह अज्ञात वनवास में विराट नगर के रजा विराट की पुत्री उतरा को नृत्य–गान सिखाते हैं |महाभारत में अर्जुन का प्रतिद्वंद्वी कर्ण था अर्जुन कारण पर हमेशा हावी रहा |फिर भी कर्ण वध नित्योल्लंघन से संभव हो सका |जब युद्ध–भूमि में कर्ण के रथ का पहिया धरती में धंस जाता है और कर्ण पहिये को निकालने केलिए रथ से नीचे उतरता है तो श्री कृष्ण अर्जुन से कहते हैं –

खड़ा है देखता क्या मोन भोले रश्मिरथी

शरासन तान,बसुअवसर यही है |घडी फिर और मिलने को वोही है

विशिख कोई गले के पार कर दे |

अभी ही शत्रु का संहार कर दे ,

यह सुनकर अर्जुन संकुचित हो उठता है क्यूंकि निहत्थे पर वार करना वीरोचित कार्य नहीं है|

नरोचित,किन्तु क्या यह कार्य होगा

मलिन इससे नहीं क्या धर्म होगा|

इस प्रकार अर्जुन वीर योद्धा होने के कारण निहत्थे कर्ण पर वार नहीं करना चाहता है किन्यु अर्जुन कृष्ण की बात को भी टाल नहीं सकता था जिस कारण उसने निहत्थे कर्ण का वध नहीं किया था|अर्जुन जितना वीर था उतना ही गुरुजनों का भक्त भी था | कृष्ण का तो वह एक साथ सखा,मित्र,बहनोई,भाई आदि था|

अर्जुन को प्रमुख दस नामों से जाना जाता है–

1.अर्जुन

2.फाल्गुन

3.विष्णु

4.किरीटी

5.शवेतवाहन

6.वीभत्सू

7.विजय

8.कृष्ण

9.सव्यसांची

10.धनंजय

निष्कर्षतः हम कह सकते हैं कि नरेन्द्र कोहली के उपन्यास 'कर्म' में अर्जुन के पात्र को प्रमुखता देकर उनके वीरत्व,शोर्य,पराक्रम,गुरु– भक्ति,कर्तव्यनिष्ठा तथा आज्ञाकारिता जैसे उच्च मूल्यों को अर्जुन के द्वारा प्रखरता से दर्शाया है।

हिंदी साहित्य में हनुमत काव्य का औचित्य

क्षेमेंद्र भरद्वाज

शोध- छात्र

लाल बहादुर शास्त्री महाविद्यालय

संस्कृत काव्य की भांति हिंदी काव्यों में हनुमत काव्य का एक विशेष औचित्य है।क्यूंकि जिस कथानक को लेकर संस्कृत साहित्य में हनुमत काव्य का उद्भव हुआ है उसके आधार को ग्रहण करके हिंदी साहित्य में 'हनुमत काव्य' का भी सृजन हुआ है।

हिंदी साहित्य में हनुमत काव्य का सृजन आदिकाल से ही दिखाई देता है,लेकिन इस काल में 'हनुमत काव्य' संबंधित पद्य बहुत कम मात्रा में मिलते हैं।लेकिन जब हम भक्तिकाल और रीतिकाल व आधुनिककाल के मध्य अध्ययन करते हैं तो 'हनुमत काव्य' का क्षेत्र कुछ अधिक प्राप्त होता है।

आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने अपने 'हिंदी साहित्य का इतिहास' नामक पुस्तक में हनुमत काव्य से संबंधित अनेक पंक्तियों को उद्धृत किया है, वह अलग तथ्य है कि वे किस काल के काव्य के साथ आया है।आचार्य शुक्क ने एक स्थान पर अपनी पुस्तक 'हिंदी साहित्य का इतिहास' में स्वामी रामानंद जी की कुछ पंक्तियों को प्रस्तुत किये हैं जिसमे 'हनुमत काव्य' से संबंधित तथ्यों का संकेत मिलता है।

आरती कीजै हनुमान लला की

दुष्ट दलन रघुनाथ कला से।

इन पंक्तियों में स्वामी रामानंद जी ने 'हनुमत काव्य' का बीजारोपण किया है,वह अलग तथ्य है कि स्वामी जी इस पंक्ति

को 'हनुमत आरती' केलिए प्रयुक्त किया करते थे|यदि इस तथ्य को भी माना जाये तो यह सिद्ध होता है कि रामानंद जी के समय में 'हनुमत काव्य' का औचित्यएवं महत्व था|

जिस प्रकार भक्तिकाल के अंतर्गत राम काव्य और कृष्ण काव्य है उसी प्रकार इन उप–काव्यों के बीच 'हनुमत काव्य' का विशेष औचित्य है|आचार्य शुक्क के प्रति यह भी कहा जा सकता है कि जिस दौर में शुक्क जी राम से संबंधित तथ्यों पर विचार कर रहे हो सकता कि उसी समय उनको हनुमत काव्य का ओचित्य समझ में आया हो| इसीलिए उन्होंने इस काव्य के साथ भक्तिपरक रचनाओं के साथ रामानंद की इस आरती को अपने इतिहास में जगह दिया हो|

यहीं तक नहीं बल्कि आचार्य शुक्क ने अपने इतिहास में एक 'इदयराम' नामक कवि जो पंजाब के रहने वाले हैं ,उनकी रचना 'हनुमन्नाटक' का उल्लेख किया है जिसमें हनुमत संबंधित काव्य प्रचुर मात्रा में उपलब्ध होता है | जिसका उल्लेख उन्होंने कुछ इस प्रकार किया है–

ए हो हनु!कहो भी रघुबीर कछु सुधि है सिय की छिति मांही|है प्रभु लंक कलंक बिना सुबसे तहां रावन बाग छाँही|

जीवति है ? कही बेई को नाथ,सु क्यों न मरी हम ते बिछुराही |

प्रान बसे पद पंकज में जम आवत है पर जावत नाही |

आचार्य शुक्क के इतिहास में लगातार 'हनुमत संबंधित काव्य की बहुलता देखकर यह कहा जा सकता है कि अवश्य ही आचार्य शुक्क कुछ विशेष तथ्यों का संकेत दे रहे हैं |

जब राम काव्य और कृष्ण काव्य की बात चल रही हो उस समय'हनुमत काव्य' की पंक्तियों के उल्लेख का क्या औचित्य हो सकता है यह तथ्य भी विचारणीय है|

हिंदी साहित्य में एक गणेश प्रसाद 'गंभीर' नामक कवि मिलते हैं |जिनकी रचना 'श्री हनुमान चरित' के नाम से प्रकाशित है,इन्हुने 'हनुमत काव्य' पर पांच सोपानों में रचित 'श्री हनुमान चरित' प्रकाशित कर हिंदी साहित्य में 'हनुमत काव्य' का विस्तार किया है |

गंभीर जी की कुछ पंक्तियों को प्रस्तुत किया जा रहा है जिसके माध्यम से इनकी रचनाओं में 'हनुमत काव्य' का ओचित्य समझा जा सकता है –

हनुमत चरित विमल मन भावन|

विविध ताप भय शोक नसावन |

इन पंक्तियों को गणेश प्रसाद जी ने अपने 'प्रथम सोपान' में रखा है| इनकी आगे की पंक्ति कुछ इस प्रकार है –

हनुमत चरित अगाध अपारा|

जानत सुयश सकल संसारा |

इस कवि के बाद हिंदी काव्य में 'महावीर हनुमान' नामक पुस्तक प्राप्त होती है ,जिसमें हनुमत काव्य से संबंधित अनेक काव्य प्राप्त होते हैं | 'रसक' रचयता स्व.श्री राम जी व्यास हैं–

पुनि प्रसन्न मम दत्तवर ,यह हनुमत हित जान |

अमर सदा मम बज्रते ,रहे अमित बलवान |

पुनि हनुमत हि बिसदवर,दीन्हे मुदित कुबैर|

चंड–गदा ते अमर है ,कपि बिचरै चहुँ ओर|

इन कवियों ने इस प्रकार की रचना कर 'हनुमत काव्य' को समृद्ध किया है और इस काव्य की औचित्यगत अवधारणा को स्पष्ट किया|

इन कवियों की भांति हिंदी साहित्य के कवियों में 'हनुमत काव्य' से संबंधित अनेक रचनाएँ उपलब्ध है जिसका जिसका यहाँ उल्लेख किया जा रहा है | दृष्टान्त के रूप में गौ स्वामी तुलसीदास की रचना को रखा जा सकता है |जैसे श्री रामचरित मानस , कवितावली, गीतावली, हनुमान चालीसा , हनुमान वाहक इत्यादि| गोस्वामी जी ने श्री रामचरित मानस के सुन्दर कांड में विशेष रूप से हनुमत काव्य संबंधित चौपाइयों पर बल दिया है जिसका उदहारण यहाँ प्रस्तुत किया जा रहा है–

सुनि हनुमत हृदय अति भाए|

इस पंक्ति के बाद कवितावली की एक पंक्ति को देखा जा सकता है–

करत बिसोक लोक–कोकनद, कोक कपि|

कहै जामवंत, आयो आयो हनुमानु सो|

इन पंक्तियों के आलावा गोस्वामी जी ने हनुमान चालीसा, बजरंग बाण, हनुमान चरितम आदि में 'हनुमान काव्य' संबंधी स्तुतिपरक रचनाओं को प्रस्तुत किया गया है |जिससे 'हनुमत काव्यधारा' को विशेष औचित्यगत शक्ति प्रदान होती है|

आचार्य शुक्क ने रसानुकुल शब्द योजना के ओचित्य से कवितावली की कुछ पंक्तियाँ उल्लिखित हैं जिसमें हनुमत काव्य स्पष्ट दिखाई देती है |

प्रबल प्रचंड बरिबंड बाहुदंड बीर,

धाए जातुधान, हनुमान लियो घेरिकै|

यहीं तक नहीं बल्कि हिंदी साहित्य के अलावा बौद्ध साहित्य, जैन साहित्य, रासो साहित्य, पौराणिक साहित्य, वैदिक साहित्य आदि में 'हनुमत काव्य' प्राप्त होता है।

एक बुंदेलखंड के सुविख्यात कवि 'मान' की चर्चा करना आवश्यक है क्यूंकि हमसब जानते है कि 'हनुमत काव्य' की सीमा सीमित है लेकिन ऐसा कुछ नहीं है । देखिये पूर्व कथित साहित्य के अलावा कवि 'मान' के यहाँ किस प्रकार से हनुमत साहित्य को आगे बढ़ाया जा रहा है।

महावीर सासा पूज बीरा ओ बतासा करे ,

विपत को ग्रासा तन बासा अरि अंत को।

सिख–नख खासा रिद्ध सिद्ध को निवासा यह,

दास आसा पूरक पचासा हनुमत को।।

यह सुविख्यात कवि 'मान' बुंदेलखंड के हैं। इनकी पुस्तक का नाम 'हनुमत पचासा' है। जिस छंद को इस पत्र में प्रस्तुत किया गया है , वह लेखक के 'हनुमत पचासा' का पचासवां छंद है।

इस प्रकार के अनेक कवियों से 'हनुमत काव्यधारा' को विशेष शक्ति प्राप्त हुई है।

अंततः यह कहा जा सकता है कि 'हनुमत काव्यधारा' का औचित्य हिंदी साहित्य में इसलिये भी महत्वपूर्ण है क्यूंकि इस

काव्य एवं साहित्य से अनपढ़ ग्रामीण सभ्यता के लूगों के प्रति जागरण का संचार हुआ है | वह अलग तथ्य है जो राम- काव्य और कृष्ण-काव्य के समानांतर राष्ट्रीय जागरण के औचित्य से जुड़ा हो| इसीलिये पुनः अंत में यही कहा जा सकता है कि हिंदी साहित्य में 'हनुमत काव्य' का औचित्य एक नवोन्मेष विचारों का सृजन भी है|

सन्दर्भ-ग्रन्थ सूची

1. हिंदी साहित्य का इतिहास,आचार्य रामचंद्र शुक्ल,विजय प्रकाशन मंदिर वाराणसी संस्करण 2010 प्र 93 वहीँ प्र.113
2. श्री हनुमत चरित(काव्य) गणेश प्रसाद गंभीर, हिंदी साहित्य कुटीर प्रकाशन वाराणसी संस्करण 1996ई.प.27
3. वहीँ प.7
4. महावीर हनुमान लेखक स्व.श्री राम जी व्यास,महंत,भोंसला घाट,वाराणसी प्रकाशन-श्री हनुमान मंदिर साहित्य संधान कलकाता 1889ई.प.51
5. वहीँ प.51
6. श्री रामचरित मानस गुटका (सुन्दर कांड) गोस्वामी तुलसीदास, गीयता प्रेस गोरखपुर संस्करण सं.2058 प्रथम संस्करण प.6

7. कवितावली, गोस्वामी तुलसीदास,गीता प्रेस गोरखपुर सं.2064अट्ठाववनवां पुनर्मुद्रण प.44

8. हिंदी साहित्य का इतिहास आ.राम चन्द्र शुक्ल प्रकाशक हिंदी साहित्य कुटीर वाराणसी,सन्स्करन१९ ९६ई.प.१०३

वीरों में बीर महावीर,ले.जगदेश चन्द्र मिश्र,विवेकानंद प्रकाशं नाग्वा लंका वाराणसी,सं.चेत नवरात्र १९९५ ई.प.14

पं.दीनदयाल उपाध्याय नगर चंदौकी (उ.प्र)

सचल भाष.
९५५४४२९८४३

देवनागरी लिपि का नामकरण एवं इतिहास

दाऊद एहमद

अनुसंधित्सु

सामान्यतः लिपि आंगल भाषा के script का हिंदी अनुवाद है और उर्दू भाषा में इसे रस्मुलखत भी कहा जाता है |लिपि किसी भी भाषा को अंकित करने का एक सशक्त माध्यम भी है जो ध्वन्यात्मक चिन्हों की एक ऐसी सामूहिक व्यवस्था है जिसके अंतर्गत किसी भाषा विशेष को लिखित आधार प्रदान कर उसे पठनीय बनाती है तथा बिना लिपि के भाषा का कोई अस्तित्व नहीं है |इसीलिए भाषा केलिए लिपि एक महत्वपूर्ण घटक होकर उसे सजीव रूप प्रदान करती है |

भारत में लेखनकला एवं ज्ञान के अत्यंत प्राचीनतम उल्लेख प्राप्त होते हैं |प्रायःजैन एवं बौद्ध साहित्य में अनेक लिपियों का उल्लेख मिलता है |जैनों के पन्नवणसूत्र में अठरह और बोद्धों की पुस्तक ललित विस्तार में कुल चोंसठ लिपियों का उल्लेख मिलता है |इससे पूर्व भी हड़प्पा और मोहनजोदारो की खुदाई में भारतीय लिपियों के प्रमाण मिले हैं |भारत की दो प्राचीन एवं प्रचलित लिपियों का स्वरूप ही आज उपलब्ध है जो ब्राह्मी एवं खारोष्टी के नाम से पहचानी जाती है |इनका प्राचीनतम उपलब्ध रूप सम्राट अशोक के शिला लेखों में देखने को मिलता है |इससे

यह प्रमाणित होता है कि भारत में लिपि की परंपरा का इतिहास कई हज़ार वर्ष पुराना रहा है ।

देवनागरी लिपि भारत में ऐतिहासिक रूप से गौरवशाली लिपि मानी जाती है । इस लिपि का विकास ब्राह्मी लिपि की उत्तरी शाखा से हुआ है ।पूर्व में यह नगरी नाम से जानी जाती थी परन्तु बाद में देव–भाषा संस्कृत केलिए जब इसका प्रायोग होने लगा तब से इसे देवनागरी कहा जाने लगा और दक्षिण में यह 'नंदिनागरी'के नाम से परिचित है ।वर्तमान में यह लिपि हमारे सम्मुख 'देवनागरी'के नाम से प्रचलित है ।यह नाम इसे कैसे मिला इस सम्बन्ध में विद्वानों एवं इतिहासकारों में काफ़ी वाद–विवाद हुआ।प्रत्येक भाषाविद ने इस नामकरण के विषय में कोई न कोई तथ्य जोड़कर इसे स्पष्ट करने का प्रयास किया है। देवनागरी या नागरी लिपि के नामकरण के विषय में विभिन्न प्रकार के मत द्दष्टव्य हैं ।

*ओझा के अनुसार – 'नागरी'नाम कबसे प्रचलन में आया,इस सम्बन्ध में कुछ निश्चित नहीं है ।बल्कि तांत्रिक कल में 'नागर'शब्द की चर्चा देखने को मिलती है । 'नित्याषोड़शिकाणव की 'सेतुबंध'नमक रचना में टीकाकार भास्करानंद एकार का त्रिकोण रूप 'नागर '(नगरी)लिपि में होना बताते हैं । *इसके अतिरिक्त 'बातुलागम'की टीका में यह उल्लेख है कि शिव मन्त्र 'ह्री'के अक्षरों से शिव की मूर्ति केवल 'नागर'(नागरी) लिपि से बन सकती है दूसरी लिपियों से बन नहीं सकती'इससे यह स्पष्ट

हो जाता है कि प्राचीन तांत्रिक युग में 'देवनागरी'केलिए नागर नाम प्रचिलित था| इसका नागर नामकरण क्यों पड़ा यह पूर्णरूप से स्पष्ट नहीं है |

इस विषय के सम्बन्ध में राधेश्याम शास्त्री का विचार है कि 'देवताओं की मूर्तियाँ बनने के पूर्व उनकी उपासना सांकेतिक चिन्हों द्वारा होती थी,जो त्रिकोण तथा वक्रों आदि से बने हुए यंत्रों के, जो देवनगर कहलाता था –मध्य में लिखे जाते थे| देवनगर के मध्य लिखे जाने वाले अनेक प्रकार के सांकेतिक चिन्ह कालांतर में उन–उन नामों के पहले अक्षर मने जाने लगे और 'देवनगर' के मध्य उनका स्थान होने के कारण उनका नाम 'देवनागरी'हुआ |

इस मत के सम्बन्ध में ओझा जी लिखते है कि–यह लेख बड़ी गवेषणा के साथ लिखा गया है और युक्तियुक्त अवश्य है ,परन्तु जबतक यह सिद्ध न हो कि जिन–जिन तांत्रिक पुस्तकों से अवतरण उद्धृत किये गए हैं,वे वैदिक साहित्य के समय के पहले के या कमसेकम मोर्यकाल से पहले के हैं ,तबतक हम उनका मत स्वीकार नहीं कर सकते हैं|''

कुछ विद्वानों ने 'नागरीलिपि'का नामकरण नागर ब्राह्मणों से जोड़कर प्रमाणित करने का प्रयास किया है | लेकिन ऐतिहासिक साक्ष्यों के आभाव में यह कल्पना ही माना गया है | कुछ विद्वानों ने बोद्धों के 'ललित–विस्तार'ग्रन्थ में 'नागलिपि' के आधार पर यह अनुमान लगाया कि 'नागलिपि'शब्द से ही

'नागरीलिपि'का आविर्भाव हुआ होगा|किन्तु इसपर कटाक्ष करते हुए डॉ.एल.डी.वार्नेट उक्त दोनों लिपियों का कोई अंतर्संबंध नहीं मानते हैं |इसके आलावा 'नागलिपि और नागरीलिपि' शब्द की संरचना के सम्बन्ध में और कोई तर्क या विचार देखने को नहीं मिलता |

*कुछ विद्वान् इसे अभिजात एवं कुलीन वर्ग की लिपि मानकर इसका प्रयोग गाँव में न होकर नगरों में होता था जिस के कारण इसे 'नगर की लिपि' कहा गया |कहीं न कहीं यह बात तर्कसंगत प्रतीत होती है लेकिन प्रमाणिक तथ्यों के अभाव में इसे अस्वीकार किया जाता है |कतिपय विद्वान देववाणी संस्कृत भाषा से इसका संपर्क होने से 'देवनागरी'नाम मानते हैं |लेकिन यहाँ 'देव'शब्द की सार्थकता पर पूर्णरूपेण प्रकाश पड़ता है अतः 'नागरी'शब्द की सार्थकता अस्पष्ट है | डॉ.धीरन्द्र वर्मा के शब्दों में –'इस लिपि केलिए देवनागरी या नागरी नाम पड़ने के कारण वास्तव में अनिश्चित हैं|''

*बाबूराम सक्सेना –'नागरी नाम की व्युत्पत्ति का अभीतक निश्चय नहीं हो सका है |''इस प्रकार सभी विद्वानजन इस बात को घुमा–फिराकर तथ्यों के आभाव में देवनागरी नामकरण स्पष्ट नहीं कर पाए |

प्रायः देवनागरी केलिए कई पर्यायवाची शब्दों का प्रयोग किया जाता है –देवनागरी,देवनागर,लोकनागरी ,नंदीनागरी तथा

हिंदी लिपि भी कहा जाता है |उपरोक्त नामों में 'नागरी' नामकरण ही ख्याति प्राप्त होकर अपने पूर्ववर्ती संक्षेप्त रूप के कारण लोगों में पर्याप्त प्रचिलित है |

देवनागरी लिपि के प्राचीनतम लेख भारत के दक्षिणी प्रान्तों में मिले है |इससे स्पष्ट है की देवनागरी जन्म के साथ ही उत्तर से दक्षिण तक फ़ैल गई थी |यह उसकी लोकप्रियता का एक अनूठा प्रमाण है |उत्तर भारत में देवनागरी लिपि में कोई भी लेख दसवी सदी के पूर्व का नहीं मिलता |किन्तु दक्षिणी भारत में आठवीं सदी के लेख भी प्राप्त होते हैं |उदाहरणतः देवनागरी के प्राचीनतम लेख सबसे पहले राष्ट्रकूट वंश के राजा दन्तिदुर्ग के सामनगढ़ से 754 ई.के दानपत्रों से मिले |उसके बाद राष्ट्रकूट के राजा गोविन्द राज द्वितीय के धुलिया से780०ई .के दानपत्रों से मिले |इसके बाद पैठण और बनिगांवसे मिले हुए राष्ट्रकूट के राजा गोविन्द तृतीय के 794ई.व्808ई. के दानपत्रों में और तदन्तर राष्ट्र कूट के राजा ध्रुराज ,अमोध्वर्ष और उसके शिलार्वंशी सामंत पुल्लशक्ति के क्रमशः 835 ई.843 ई.तथा 851 ई. के दानपत्रों में उपलब्ध है|

इसके अतिरिक्त आठवीं शताब्दी से लेकर आजतक दक्षिण भारत से उत्तर भारत तक नागरी लिपि का व्यापक प्रचार एवं इसकी जनप्रियता का प्रत्यक्ष प्रमाण हमें 1017ई. में महमूदपुर (लाहौर) से महमूद गज़नवी ने एक चांदी का ऐसा सिक्का चलाया था|जिसकी एक पीठ पर नागरी लिपि में

"**अव्यक्तमेकंमुहम्मद अवतार नृपति महमूद**" तथा दूसरी ओर **" अयम टंकम महमदपुर घटिले हिजरियेन संवति 418**"छपा था|इससे यह स्पष्ट हो जाता है कि महमूद गज़नवी ने नागरी लिपि की समकालीन लोकप्रियता को ध्यान में रख कर इसे अपने सिक्के पर अंकित किया है |

इस प्रकार ओझा जी के अनुसार नागरी लिपि आठवीं शताब्दी के उत्तरार्ध में विस्तृत रूप में लिखी हुई मिलती है |परन्तु उससे पहले भी इस लिपि का व्यवहार होता रहा होगा|क्यूंकि गुजरात के गुर्जर्वंशी राजा जयभट्ट तृतीय के 706 ई.के दानपत्र जो दक्षिणी शैली की पश्चिमी लिपि में है,उक्त राजा के हस्ताक्षर 'स्वहस्तो मम श्री जय भटस्य' नागरी लिपि में ही हैं |इस प्रकार देवगिरी के यादवों तथा विजय नगर के राजाओं के दानपत्रों में भी इस लिपि का प्रयोग मिलता है |

उत्तर भारत में प्राचीन नागरी का सबसे प्राचीनतम रूप कन्नोज के 898ई.के दानपत्र में प्राप्त होते हैं |उसके बाद के अनेक शिलालेखों व दानपत्रादि में उसके नमूने उपलब्ध हैं|

प्राचीन देवनागरी का परिचय देते हुए ओझा जी लिखते हैं कि –'10वीं सदी के उत्तर भारतवर्ष की नागरी लिपि में कुटिल लिपि की भांति अ, आ, ध, प, म, य, ष, व, स, के सर दो अंशों में विभक्त मिलते हैं ,परन्तु 11वीं सदी से यह दोनों अंश मिलकर सर की एक लकीर बन जाती है और प्रत्यक अक्षर का सर उतना

लम्बा रहता है जितनी कि अक्षर की चौडाई होती है | अतः 11वीं सदी की नागरी लिपि वर्तमान नागरी से मिलती–जुलती है और इसी वर्तमान नागरी का स्वरूप शताब्दियों के प्रयोग पर आधारित उसके क्रमिक विकास का प्रतिफलन है|12वीं सदी से लेकर अबतक नागरी लिपि बहुधा एक ही रूप में चली आई है ,तो भी लेखन–शैली देश–भेद से कुछ अंतर रह ही जाता है|'

निष्कर्षतः नगरी लिपि का आधार अतिप्राचीन है वह अपनी ऐतिहासिक यात्रा में संस्कृत, प्राकृत, अपभ्रंश, के अतिरिक्त कई समृद्ध आधुनिक भारतीय भाषाओँ यथा मराठी,भोजपुरी,नेपाली,डोगरी,हिंदी आदि जैसी भाषाओँ की संवाहिका बनकर अपनी सेवाएं अंजाम दे रहीं हैं| नागरी लिपि अपना शुद्ध वैज्ञानिक आधार लिए अपनी एकरूपता की विशिष्टता को बनाये हुई है |संसार की कोई भी भाषा इस लिपि के द्वारा सहजतापूर्वक लिखी जा सकती है |जो इसकी ध्वनिसम्पन्नता को दर्शाता है | अतः वर्तमान में देवनागरी लिपि भारत देश की राष्ट्रीय लिपि के रूप में गोरवान्वित है |

'झाँसी की रानी' उपन्यास में राष्ट्र- गौरव

डॉ.दीपक कुमारी

सहायक प्रोफेसर हिन्दी विभिग

चौ. बंसीलाल विश्वविद्यालय,

भिवानी

भारत एक महान देश है | आध्यात्मिक, राजनैतिक, सामाजिक, संस्कृतिक व भौतिक जीवन की सभी धाराओं में भारत के वीरों, महापुरषों व मनीषियों का अद्‌भुत योगदान है | विश्व संस्कृति व राजनीति में उनकी भूमिका अति महत्वपूर्ण है |

किसी देश के स्वाभिमानी नागरिकों की यह हार्दिक इच्छा होती है कि वे अपने राष्ट्र की आधारशिला बने | एक राष्ट्र के रूप में भारत के अस्तित्व एवं उसकी अस्मिता की पहचान राष्ट्र–गौरव निहित मूल्यों में विद्यमान है |

सबसे पहले हम राष्ट्र–गौरव शब्द का अर्थ जान लेते हैं क्योंकि जिस देश के नागरिकों में अपने राष्ट्र के प्रति गौरव की भावना न हो, वह राष्ट्र अवश्य ही पतन की कगार पर खड़ा होता है | भारत जैसे सांस्कृतिक अस्मिता वाले देश के नागरिकों में यह गुण (राष्ट्र–गौरव) कूट–कूट कर भरा हुआ है |

आचार्य रामचंद्र वर्मा द्वारा संपादित बृहत प्रमाणिक हिंदी कोश के अनुसार 'राष्ट्र' शब्द का अर्थ है–"राज्य, देश, एक राज्य में बसने वाला समस्त या पूरा जनसमूह (नेशन) राष्ट्र कहलाता है |" [1]

इसी तरह 'गौरव' शब्द का अर्थ है, "गुरु या भारी होने का भाव, बडप्पन, महत्व, सम्मान, इज्जत आदि बताया है |"[2]

इस प्रकार हम कह सकते हैं कि किसी एक राज्य या देश में बसने वाले जनसमूह का अपने राष्ट्र के प्रति सम्मान का भाव राष्ट्र–गौरव कहलाता है | राष्ट्रीय भावना मनुष्य के राजनीतिक जीवन को सदा से प्रभावित करती रही है | राज्य के जनपदीय स्वरूप से लेकर वर्तमान राष्ट्रीय राज्य तक यह भावना सदैव किसी–न–किसी रूप में राजनीतिक संघठनों के निर्माण को प्रभावित करती रही है | परंतु राष्ट्रीयता का वर्तमान स्वरूप जिसे हम 'राष्ट्रवाद' कहते हैं, आधुनिक काल की देन है |

" 'राष्ट्र' शब्द को अंग्रेज़ी में 'नेशन' कहते हैं, जिसकी उत्पति लेटिन भाषा के 'नेशियो' शब्द से हुई है, जिसका अर्थ है– जन्म या जाति |"[3]

इस आधार पर कुछ लोग एक निश्चित भगौलिक सीमा में रहने वाली एक जाती को ही राष्ट्र के नाम से संबोधित कर देते हैं परंतु राष्ट्र के बारे में इस प्रकार की धारणा अधूरी है | वास्तव में राष्ट्र शब्द का आर्थ इतना संकीर्ण नहीं है,जितना प्रायः समझ लिया जाता है |

'राष्ट्र' शब्द में राजनीतिक धारणा छिपी हुई है और राष्ट्र केवल उसी समूह विशेष को कहा जा सकता है जो राष्ट्रप्रेम की भावना से अपनी राष्ट्रभूमि के प्रति अगाध श्रद्धा रखता हो | जैसाकि बाल गंगाधर तिलक कहा करते थे कि, "ईश्वर और हमारा देश अलग–अलग नहीं है |"[4] अर्थात एक राष्ट्र के लोग अपने देश को, राज्य को भगवान के समान समझतें हैं |

'राष्ट्र' से हमारा तात्पर्य– राष्ट्र के प्रति निष्ठा से होता है | भारत में राष्ट्र–गौरव की भावना 1857 की क्रांति के दौरान विकसित हुई | धीरे–धीरे इस विचारधारा को व्यापक जनसमर्थन मिला और प्रत्येक राष्ट्र को अपना स्वतंत्र राजनीतिक अस्तित्व प्राप्त करने एवं उसे बनाये रखने का अधिकार प्राप्त हुआ |

राष्ट्र के प्रति गौरव की भावना उत्पन्न करने में हमारे साहित्यकारों का भी पूरा योगदान है| भारत के लोगों को अपनी संस्कृति के प्रति सचेत करने का कार्य महान लेखकों की लेखनी से हुआ | उन्हीं महान साहित्यकारों में वृंदावनलाल वर्मा का प्रमुख स्थान हैं | वृंदावनलाल वर्मा का जन्म 9 जनवरी 1889 को मऊसनीपुर(झाँसी) में एक कुलीन श्रीवास्तव कायस्थ परिवार में

हुआ था | इतिहास के प्रति वर्मा जी की रूचि बाल्यकाल से ही थी | अतः उन्होंने कानून की उच्च शिक्षा के साथ–साथ इतिहास, राजनीति, दर्शन, मनोविज्ञान, संगीत, मूर्तिकला, तथा वास्तुकला का गहन अध्ययन किया | ऐतिहासिक उपन्यासों के कारण वर्मा जी को सर्वाधिक ख्याति प्राप्त हुई |

"उन्होंने अपने उपन्यासों में इस तथ्य को झुठला दिया कि 'ऐतिहासिक उपन्यास में या तो इतिहास मर जाता है या उपन्यास' बल्कि उन्होंने इतिहास और उपन्यास दोनों को एक नई दृष्टि प्रधान की |"[5] वृंदावनलाल वर्मा द्वारा रचित 'झाँसी की रानी' एक ऐतिहासिक उपन्यास है जिसकी रचना 1946 में की | यह उपन्यास बहुत प्रसिद हुआ तथा इसे हिन्दी भाषा में ऐतिहासिक उपन्यासों की श्रेणी में 'मील का पत्थर' माना जाता है |

वृंदावनलाल वर्मा का जन्म झाँसी में हुआ | अपने परिवेशगत वातावरण के कारण उन्होंने अपनी दादी–परदादी से झाँसी की रानी की वीरता के बारे में अनेक कहानियाँ सुनी| यह उपन्यास झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई के जीवन पर आधारित है | रानी के अन्दर राष्ट्र-गौरव की भावना कूट–कूट कर भरी हुई थी और जो भी व्यक्ति उनके सम्पर्क में आता, वह उनसे प्रभावित हुए बिना नहीं रह सकता था | यहाँ तक कि अंग्रेज़ अधिकारी जनरल रोज़ ने कहा था, "यह थी उनमें सर्वश्रेष्ठ और सर्वोत्कृष्ट वीर |"[6]

वृंदावनलाल वर्मा ने तत्कालीन राजनीतिक–सामाजिक परिवेश के माध्यम से 'झाँसी की रानी' उपन्यास में राष्ट्र–गौरव की भावना का सजीव चित्रण किया तथा रानी के शौर्य की गाथा

को दर्शाया है | जब राजागंगाधर, मृत्यु के समीप थे तो उन्होंने अंग्रेज़ी सरकार से पुत्र गोद लेने की आज्ञा माँगी | एक स्त्री के हाथों अंग्रेज़ झाँसी जैसे समृद्ध राज्य को नहीं सौंपना चाहते थे | तब रजा ने स्थिर होकर कहा–" मेजर साहब, हमारी रानी सत्री जरुर है परंतु इसमें ऐसे गुण हैं कि संसार के बड़े–बड़े मर्द इसके पैरों की धूल अपने माथे पर चढ़ाएंगे|"[7] महाराज गंगाधरराव भी रानी के शौर्य से प्रभावित थे | इसी प्रकार जब एलिस ने महारानी को पांच हजार रुपया मासिक वृति देने को कहा तो उन्होंने अचानक ऊँचे स्वर में पर्दे के पीछे से कहा, "मैं अपनी झाँसी नहीं दूँगी |"[8] ये शब्द पूरे वातावरण में गुंजायमान हो उठे और भारत के इतिहास में स्वर्णाक्षरों में लिखे गए, जो आज भी भारतीयों में राष्ट्र–गौरव की भावना को जाग्रत करते हैं |

वृंदावनलाल वर्मा ने इस उपन्यास में तत्कालीन राजनीति के माध्यम से अंग्रेजों की अन्यायपूर्ण नीति को दिखाया है तथा भारतियों में स्वाधीनता के प्रति जो ललक थी उसका सजीव चित्रण किया है |1856 में अंग्रेज पूरे भारतवर्ष में इसाई धर्म का प्रचार कर रहे थे | उसी समय भारतियों में स्वाधीनता के दो चिन्ह प्रकर हुए जो उनके राष्ट्र–गौरव को दर्शाती हैं– वै थे "एक कमल, दूसरा रोटी | कमल के असंख्य फूल भारतवर्ष की छावनियों में फैल गए|"[9] कमल के फूल को 1857 की क्रांति का प्रतिबिंब चुना गया क्योंकि यह क्रांति कमल के फूल की तरह हिंदुस्तान के गौरव का प्रतीक थी|इस क्रांति में हिंदुस्तान के हर छोटी–बड़ी जाति के लोगों ने भाग लिया| यहाँ तक कि रानी के प्रभाव में आकर डाकू सागर संहि ने भी डाके डालने का कार्य छोड़कर झाँसी की सेना में भर्ती हो गया |

उपन्यास के बहुत सारे स्थलों पर हम झाँसी की जनता से रूबरू होते हैं जिसमें जनता का राष्ट्र–गौरव स्पष्ट झलकता है | कर्नल रोज ने झाँसी पर चढाई करने से पहले रानी के पास संदेश भेजा और कहा कि रानी झाँसी के प्रमुख लोगों के साथ निशस्त्र हमारे सामने पेश हो | उस समय झाँसी के लोगों में राष्ट्र–गौरव का जो भाव था वह देखने योग्य था |

उनका संकल्प था–"लड़ेंगे अपनी झाँसी के लिए, अपनी रानी के लिए,मरेंगे | हमारे पास जितना रुपया और आभूष्ण हैं, सब स्वराज्य की लड़ाई के लिए रानी के हाथ संकल्प है |"[10] इसी प्रकार ऐसे बहुत से पात्र उपन्यास में आते हैं | जैसे– तात्या टोपे, कुँवर खुदाबख्श,लाला भाऊ बख्शी, नाना भोपटकर, दीवान जवाहर सिंह, रघुनाथ सिंह, सुंदर, मुंदर, काशी, झलकारी, जूही, मोतीबाई तथा झाँसी की स्त्री–सेना सभी पात्र अपने राष्ट्र अर्थात झाँसी के गौरव के लिए तन–मन–धन से कृत संकल्प हैं।झाँसी की स्त्रियों के बारे में 'माझा–प्रवास' का लेखक विष्णुराव गोडसे लिखता है कि– "जब वह झाँसी आया तब झाँसी की स्त्रियों की स्वाधीनता को देखकर विस्मित हो गया |"[11]

रानी की सेना में स्त्रियाँ इस तरह काम कर रही थी जैसे देवी दुर्गा ने अनेक शरीर और रूप धारण कर लिए हों | अंत में जब रानी व् सुंदर लड़ते हुए मारी जाती हैं तो बाबा गंगादास कहते हैं –"झाँसी की रानी के सिधार जाने को अस्त होना कहते हो! यह तुम्हारा मोह है | वह अस्त नहीं हुई | वह अमर हो गई |"[12] अंग्रेज रानी को किसी भी हालत में पकड़ना चाहते थे और ढूंढते–ढूंढते रानी की मजार के पास आकर पूछते हैं तो गुलमुहम्मद ने उत्तर दिया – "अमारे पीर का, बो बौत बड़ा बली था |"[13] झाँसी की रानी भारतीय जनता के हृदय पर हमेशा

वीरता व् शौर्य के रूप में बसी रहेगी | जब रानी को याद करेंगे | हमारा हृदय गर्व–गौरव से बर जाएगा | रानी ने हमेशा स्वराज्य के लिए लड़ाई लड़ी और जीते–जी कभी भी अंग्रेजों की गुलामी स्वीकार नहीं की | राष्ट्र–गौरव की जो भावना रानी ने भारतियों के हृदयों में जगाई उसी के फल स्वरूप हमने आजादी प्राप्त की |

संदर्भ सूची :-

1. संपादक आचार्य रामचंद्र वर्मा, बृहत प्रमाणिक हिंदी कोश, लोकभारती प्रकाशन, पहली मंजिल, दरबारी बिल्डिंग, महात्मा गाँधी मार्ग–इलहाबाद–। पृ° सं.–807
2. यथावत, पृ° सं.–268
3. डॉ.अमरनाथ,हिंदी आलोचना की पारिभाषिक शब्दावली, राजकमल प्रकाशन,।–बी, नेताजी, सुभाष मार्ग, दरियांगज, नई दिल्ली–110002, पृ° सं.–301
4. यथावत, पृ° सं.–302
5. वृंदावनलाल वर्मा, गुगल पुस्तक अमर बेल, प्रभात प्रकाशन, प्रकाशन तिथि जनवरी 1,2009
6. वृंदावनलाल वर्मा, झाँसी की रानी, प्रभात प्रकाशन, 4/19 आसफ अली रोड, नई दिल्ली–110002, पृ° सं.–339
7. यथावत, पृ° सं.–89
8. यथावत, पृ° सं.–114
9. यथावत, पृ° सं.–174
10. यथावत, पृ° सं.–234

11. यथावत, पृ॰ सं.–345
12. यथावत, पृ॰ सं.–335
13. यथावत, पृ॰ सं.–338

फोन
नः9467405913
email- Kumarideepak1982@gmail.com

विवाह मेलापक में नाड़ी दोष विचार

डॉ. सुरेश शर्मा

(ज्योतिष विभाग)

***राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान, देवप्रयाग परिसर*|**

भारतीय मनीषियों ने मानव जीवन को 4 भागों में विभाजित किया है– ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ तथा सन्यास | इन चारों आश्रमों में गृहस्थ आश्रम का विशिष्ट महत्व है | मन स्मृति के अनुसार जिस प्रकार वायु के आश्रय से सम्पूर्ण प्राणी जीवित रहते है, उसी प्रकार गृहस्थ से आश्रय से सम्पूर्ण आश्रम चलते है | गृहस्थाश्रमी सर्वश्रेष्ठ होता है, क्योंकि षि, पितर, देव, जीव तथा अतिथि गृहस्थी से आशा करते हैं कि वे उनके निमित पंचयज्ञ करें | [1] गृहस्थ आश्रम का आधर स्वरूप विवाह संस्कार सोलह संस्कारों में सर्वप्रमुख संस्कार है | यही संस्कार वस्तुतः धर्मार्थकाममोक्ष स्वरूप चतुर्वर्गप फलप्राप्ति का आधर है | इसी संस्कार के उपरान्त मनुष्य देवऋण,पितृऋण तथा ऋषिऋण से मुक्ति प्राप्त करता है | विवाह के इस सर्वव्यापी महत्व को ध्यान में रखते हुए स्वस्थ, सुखद एवं खुशहाल जीवन, पारिवारिक प्रसन्नता, वंशवृद्धि, आर्थिक समृद्धि तथा यश प्राप्ति हेतु प्राचीन भारतीय मनीषियों ने विवाह मेलापक की सुन्दर कल्पना की है |

विवाह मेलापक के दो भेद है, (1) ग्रह मेलापक एवं मंगल दोष विचार (2) नक्षत्र मेलापक | ग्रह मेलापक में वर–वध की जन्म कुण्डली में ग्रहों की स्थिति के प्रभाववश परस्पर पुरकत्व भाव के विश्लेषणके साथ–साथ उनके स्वास्थ्य, भोगोपभोग, सन्ततिसुख, दाम्पत्यसुख, विघ्नबाधा, अनिष्ट का विचार एवं

परिहार, आर्थिक उन्नति एवं मंगल दोष का विचार किया जाता है |

नक्षत्र मलापक के अंतर्गत वर–कन्या के नक्षत्रों के मेल के आधार पर उनकी प्रकृति एवं अभिरुचि की अनुकूलता, कार्यक्षमता, भाग्य, शारीरिक तथा मानसिक सामंजस्य प्रेम, स्वास्थ्य इत्यादि वैवाहिक जीवनोपयोगि विषयों पर सूक्ष्मतापूर्वक विचार किया जाता है | नक्षत्रा मेलापक में आठ प्रकार के कुटों के गुण–दोषों का मुख्य रूप से विचार किया जाता है–वर्ण, वश्य,तारा योनि, ग्रहमैत्री, गणमैत्रो, भकूट एवं नाडीकूट | इन आठ प्रकार के कूटों में क्रमशः एक एक की वृद्धि से कुल 36 गुण होते है | यथा वर्ण का 1, वश्य के 2, तारा के 3, यानी के 4, ग्रणमैत्रों के 5, ग्रहमैत्रों के 6, भकूट के 7 तथा नाडीकूट के 8 गुण |[2] यदि वर और कन्या के 18 गुण से अधिक प्राप्त हो जाए तो ज्योतिषशास्त्र के अनुसार शुभ अन्यथा निंदनीय होता है |

विवाह मेलापक में नाडोकूट को सर्वाधिक महत्व प्रदान किया गया है | आचार्यों के अनुसार नाडोकूट सभी कूटों का शिरोमणि है | जिस प्रकार विवाहित कन्या के लिए मंगलसूत्रा आवश्यक है उसी प्रकार विवाह मेलपाक में नाडोशुद्धि अत्यन्त आवश्यक है |[3] अन्य कुटों की अपेक्षा इसे सर्वाधिक आठ अंक प्राप्त है | अतः विवाह मेलापक में नाडोकूट का सर्वत्र यथाशस्त्र विचार करना चाहिये |

नाडोकूट

नाडोकूट का सम्बन्ध नक्षत्रों से है | ज्योतिशास्त्र के अनुसार नाड़ियां तीन प्रकार की होती है– आद्य–नाडी, मध्य–

नाडो तथा अन्त्य– नाडी | रामदैवज्ञ के अनुसार ज्येष्ठा, आद्रा, उत्तराफाल्गुनी, शतभिषा इन प्रत्येक नक्षत्रों के युगल अर्थात ज्येष्ठा–मूल, आद्रा–पुनर्वसु, उत्तरफाल्गुनी–हस्त,शतभिषा–पूर्वाभाद्रपद्र और अशिवनी इन नौ नक्षत्रों की आदि नाडो है | पुष्य, मृगशिरा, चित्रा, अनुराधा, भरणी, घनिष्ठा, पूर्वाषाढ़ा, पूर्वाफाल्गुनी, और उत्तराभाद्रपद नौ नक्षत्रों की मध्य नाडी है | स्वाति, कृतिका, आश्लेषा, अत्तराषाढ़ा इन नक्षत्रों के युगल अर्थात् स्वाति–विशाखा, कृतिका–रोहिणि, आश्लेषा–मघा, अत्तराषाढ़ा–श्रवण और रेवती नौ नक्षत्रों की अन्त्य नाडो है | [4] कुछ आचार्यों ने नाडी –कूट के विचार के लिए त्रिनाड़ो चक्र का विचार भी किया है, जा इस प्रकार है–अश्विन्यादि 27 नक्षत्रों को तीन तीन नक्षत्रों के आवृति से क्रम तथा उत्क्रम से गणना करें | यदि वर कन्या के नक्षत्र एक पर्व में हो ता एक नाडी में होने से नेष्ट होता है |[5]

नाड़ी- दोष तथा उसका फल –

ज्योतिशास्त्र के अनुसार वर तथा कन्या की एक नाड़ी हो तो नाड़ी–दोष उपलब्ध होता है अर्थात वर–कन्या का जन्म नक्षत्र उक्त चक्रानुसार एक ही नाडो में पड़े तो नाड़ी–दोष की संरचना होती है अतः एसी स्थिति में ज्योतिशास्त्र की दृष्टि से विवाह निन्दनीय है | इस दोष का फल आचार्य वराहमिहिर ने इस प्रकार बताया है– आदि नाड़ी में वर–कन्या का जन्म होने पर उनका वियोग निश्चित है, दोनों का जन्म मध्य–नाडी में होने पर दोनों को मृत्यु तथा अन्त्य–नाड़ी होने पर अत्यन्त दुःख तथा वैधव्य

की प्राप्ति होती है, इसलिये तीनो समान नाड़ियों का परित्याग करना चाहिये ।[6] आचार्य गर्ग के अनुसार संश्लिष्ट मध्यनाडी पुरुष का नाश करती है । पार्श्वैकनाड़ो कन्या का नाश करती है । आसन्न एक नाडी शीघ्र मृत्युदायी होती है तथा दरस्थित एकनाड़ो बहुत काल के बाद अनिष्ट करने वाली होती है । आचार्य गर्ग के मत को पुष्ट करते हुए आचार्य विशिष्ट कहते है– मध्यनाड़ो पुरुष का नाश करती है, पार्श्वनाडी कन्या का विनाश करती है । पार्श्व से अभिप्राय है समीपवतो नाडो । यदि समीपवतो आवृति की नाडो हो तो वर्ष के अन्तराल में तथा यदि दूर के अन्तर पर हो तो तीन वर्ष में नाश करती है । जैसे उक्त चक्र के अनुसार अश्विनी–आर्द्रा, भरणी–मृगशिरा, तथा रोहिणी आश्लेषा नक्षत्रों को आद्य–नाडो समीवातो होने से एक वर्ष में वर–कन्या को उक्त अशुभपफल देने वाली होती है । इसी प्रकार अन्य नक्षत्रों के विषय में भी समझना चाहिए ।

अश्विनी– उत्तरफाल्गुनी, आर्द्रा–हस्त आदि अन्य नक्षत्रों के व्यवधान के बाद एक नाडी हो तो तीन वर्षों में उक्त अशुभपफल देने वाली होती है ।[7] अतःनारद कहते है कि अन्य सभी गुणों से युक्त होने पर भी एकनाडी में विवाह प्रयत्न से वर्जनीय है । क्योंकि वह दम्पति के लिए मृत्युकारक होता है।[8]

कुछ आचार्यों ने देशभेद से नाडो विचार किया है । इस व्यवस्था के अनुसार गोदावरी के दक्षिण में सभी वर्णों के लिए पशवकनाडो शभ कही गई है । क्षत्रियादि क्षत्रिय, वैश्य तथा शूद्र वर्नो के लिए कहीं कहीं कन्या के ना मिलने पर पशवकनाडो शुभ है । अर्थात कन्या के आभाव में पशैवक नाडो होने पर भी विवाह किया जा सकता है ।[9] नारद मतानुसार अह्ल्यादेश मे

चार नाडो, पंचाल देश में पांच नाडो तथा इससे भिन्न देशों में सब जगह तीन नाडो का विचार किया जाता है |[10]

नाडी दोष का निरस्तीकरण :-

आचार्यों के अनुसार कुछ विशेष परिस्थितियों में नाडी दोष निरस्त हो जाता है | यथा –

1. वर–वधु का जन्म एक ही राशि में हो तथा नक्षत्र भिन्न हो तो नाडी दोष निरस्त हो जाता है | जैसे वर–वधु दोनो का जन्म मेष राशि में हो परन्तु एक का जन्म नक्षत्र अश्विनी अथवा भरणी तथा दुसरे का कृत्तिका का प्रथम चरण| इस प्रकार नक्षत्र भेद होने पर नाडो दोष निरस्त हो जाता है | (अश्विनी नक्षत्र के चार चरण, भरणी नक्षत्र के चार चरण तथा कृतिका नक्षत्र का एक चरण मेष राशि है |)

2. वर–वधू का जन्म नक्षत्र एक हो तथा राशि अलग अलग हो तो नाडी दोष निरस्त हो जाता है | यथा कृत्तिका का प्रथम पाद मेष राशि में तथा तीन पाद वृष राशि में है | अतः यदि वर–वधु दोनों में से किसी एक का जन्म कृत्तिका के प्रथम चरण में तथा दुसरे का जन्म द्वितीय, तृतीय अथवा चतुर्थ चरण में तो शास्त्रानुसार नाडी दोष निरस्त हो जाता है |

3. वर–वधु का जन्म नक्षत्र एक हो किन्तु चरण अलग हो तो भी नाडी दोष निरस्त माना जाता है |

उक्त तीनों स्थितियों में नाडी दोष के निरस्तीकरण के प्रमाण वशिष्ठ संहिता, मयूरचित्रकम, गर्गसंहिता,मुहूर्त चिंतामणि इत्यादि अनेक प्रमाणिक ग्रन्थों में उपलब्ध होते है | नारद अनुसार एक राशि तथा भिन्न नक्षत्रा होने पर दम्पति का विवाह होने पर उत्तम,दोनों की राशि भिन्न एवं नक्षत्रा भेद होने पर मध्यम

होता है | एक नक्षत्र तथा एक राशि में विवाह प्राणहानिदायक होता है |[11] केशवार्क पुर्वाचार्यों के मत को पुष्ट करते हुए कहते है कि एक राशि भिन्न नक्षत्र तथा भिन्न राशि एक नक्षत्र होने पर किये गए विवाह में कृत्तिका– रोहिणि का दोष नहीं होता अपितु परस्पर प्रीति करने वाला होता है |[12]

आचार्य वशिष्ठ के मतानुसार यदि वर–वधु की एक राशि तथा नक्षत्र हो तो चरण भेद होने पर नवांश भेद ग्रहण करना चाहिये परन्तु यह संकोच विषय में अर्थात यदि अत्यन्त आवश्यक हो तभी ग्रहण करें |[13] जैसे भरणी नक्षत्र के प्रथम पाद में वर का जन्म तथा द्वितीय चरण में स्त्री का जन्म हो तो यदि अत्यन्त आवश्यक हो तो विवाह किया जा सकता है मुहुर्तचिंतामणि पीषधराटीका में इस मत को अनेक आचार्य के संदर्भों द्वारा पुष्ट किया गया है|[14]

जन्मनक्षत्र समान होने पर पाद वेध -

नाडीकूट में वर–कन्या का जन्म नक्षत्र एक तथा पादभेद होने पर पाद वेध का विचार अवश्य करना चाहिये | वर–कन्या में से किसी एक का जन्म, नक्षत्र के प्रथम चरण में तथा दुसरे का चतुर्थचरण में अथवा एक का जन्म द्वितीय चरण में तथा दुसरे का तृतीय चरण में हो तो नाडीपादवेध माना जाता है | दोनो के नक्षत्र चरणों में वेध होने पर पूर्ण नाडोदोष होता है | यदि नक्षत्रचरणों में वेध ना हो अर्थात वर–कन्या में से किसी एक का जन्म नक्षत्र के प्रथम चरण में तथा दुसरे का द्वितीय अथवा तृतीय चरण में इस प्रकार से पाद वेध ना हो तो नाडो दोष स्वल्पदोष करने वाला होता है |[15]

कतिपय आचार्य के मतानुसार कुछ ऐसे नक्षत्र है, जिनमें जन्म होने पर नाडी दोष प्रभावहीन हो जाता है | ज्योतिनिर्बन्ध इस विषय में उल्लेख प्राप्त होता है कि रोहिणी, आद्रा, मघा, विशाखा, पुष्य, श्रवण तथा उत्तराभाद्रपदा इन में से किसि एक नक्षत्रा में वर–वधु का जन्म हो तो नाडी दोष नहीं होता।[16] विधिरत्न के अनुसार विशाखा, पुष्य,भरणी, पुर्वाफाल्गुनी तथा मघा नक्षत्रों में जन्म हो तो नाडो दोष का शमन हो जाता है |[17] नाडी दोष के परिहार के विषय में विवाह कौतुहल का मत है कि वर– कन्या की राशि का स्वामी एक ही ग्रह अथवा शुभ ग्रह शुक्र, गुरु अथवा बुध हो तो नाडी दोष प्रभावहीन हो जाता है |[18] इस सिद्धान्त के अनुसार वर–कन्या की राशि वृष तथा तुला अथवा दोनों में से कोई एक हो तो नाडी दोष निरस्त हो जाएगा | इसी प्रकार मिथुन–कन्या तथा धनु–मीन में भी विचार करना चाहिये |

उक्त विवेचन के आधार पर कहा जा सकता है कि नाडी दोष भंग के निम्न सूत्र है–

1. वर–वधू का जन्म राशि एक हों तथा नक्षत्र भिन्न हो तो विवाह किया जा सकता है |

2. वर–वधू का जन्म नक्षत्र एक हो तथा राशि अलग अलग हो तो नाडो दोष नहीं होता |

3. वर–बधू का जन्म नक्षत्र एक हो किन्तु चरण अलग हो तथा जन्म नक्षत्र चरणों में पाद वेध ना हो तो नाडो दोष निरस्त माना जाता है |

4. वर–कन्या की राशि का स्वामी एक ही ग्रह अथवा शुभ ग्रह शुक्र,गुरु अथवा बुध हो तो नाडो दोष नहीं होता |

5. रोहिणि, आद्रा, मघा, विशाखा, पुष्य, श्रवण उत्तराभाद्रपदा, विशाखा, पुष्य, भरणी, पूर्वाफाल्गुनी तथा मघा नक्षत्रो में यदि वर–वधू का जन्म हो नाडी दोष प्रभावहीन हो जाता है |

नाडी दोष को शान्त करने के उपाय:

नाडीदोष होने पर यदि विवाह अत्यन्त आवशक हो तो नाडी दोष की निवृति के लिए अनेक प्रकार के उपाय शास्त्रों में प्राप्त होते हैं | जैसे – यथा विधि मृत्युजय जपादि कराकर ब्राह्मणा को स्वर्णादि का दान करने से नाडी दोष शान्त हो जाता है | गादान, अन्नदान वस्त्रादन तथा स्वर्ण का दान समस्त प्रकार के दोषों को शान्त करने वाला होता है |[19]

इस प्रकार नाडो कूट अष्टकूटों में सर्वाधिक महत्वपूर्ण है तथा सर्वाधिक अंक प्राप्त है | विवाह मेलापक में 28 गुण होने पर भी यदि नाडो दोष उपस्थित हो तो भी विवाह निन्दित है | अतः उक्त विधि से नाडीकूट का विचार कर तथा यथाशास्त्र अन्य कूटों का विचार करके मेलापक में उपलब्ध दोषों का यथाविधि निवारण कर विवाह करने से दाम्पत्य जीवन स्वस्थ, सुखद एवं खुशहाल होता है था पारिवारिक प्रसन्नता, वंशवृद्धि, आर्थिक समृद्धि तथा यश की प्राप्ति होती है|

<u>संदर्भ :</u>

1. मनुस्मृति, अध्याय 3, श्लोक संख्या 77–80
2. वणो वश्यं तथा तारा योनिश्य ग्रहमैत्रकम |
गणमैत्र भकूट च नाडी चेति गुनाधिका ||
मुहूर्तचिंतामणिः,विवाहप्रकरणम श्लोक संख्या–21

3. नाडीकूट तु संग्राह्यं कूटानां तु शिरोमणि ।
ब्रह्मणा कन्यकाकण्ठ सूत्रत्वेन विनिर्मितम ।
मुहूर्तचिंतामणिः, विवाहप्रकरणम श्लोक संख्या – 34, पीयुषधाराटीका

4. ज्येशर्मणेशनीराध्यिभयुगयुगं दास्त्रां चैकनाडी
पुष्येन्दुत्वाष्ट्रमित्रान्तकवसुजलभं योनिबुध्ने च मध्या ।
वा वह्निव्यालविष्वोडुयुगयुगमथो पौष्णभं चापरास्याद
दम्पत्योरेकनाडायां परिणयनमसन्मध्यानाडयां हि मृत्यु ।।
मुहूर्तचिंतामणिः, विवाहप्रकरणम श्लोक संख्या – 34.

5. आवृतिभिस्त्रिभिरश्वभाद्यं क्रमोत्क्रमात्संगणएदुडूनि ।
यदेकपर्वणयुभयोश्च धिष्णये नेष्टा नृनार्योभृशमेकनाडी ।।

मुहूर्तचिंतामणिः,विवाहप्रकरणम श्लोक सं.– 34, पीयुषधाराटीका

6. आद्येकनाडी कुरुते वियोग मध्याख्यनाडयामुभयोर्वीनाशः|अन्त्य च वैधव्यमतीवदुःख तस्माच्च तिस्त्रःप्रयत्नेन परिवर्जनीयाः ।

मुहूर्तचिंतामणिः, विवाहप्रकरणम श्लोक संख्या – 34, पीयुषधाराटीका

7. सा मध्यानाडी पुरुष निहन्ति तत्पार्श्वनाडी खलु कन्यकां तु ।
आसन्नपयायस्मागता चेद्वषेण साप्यन्तरिता त्रिवर्षेः ।
वशिश्संहिता, विवाहाध्यायः, श्लोक संख्या – 203

8. एकनाडीविवाहश्च गुणै सर्वै समन्वित ।
वर्जनीय प्रयत्नेन दाम्पतयोर्निध्न यतः ।।
बृहददैवज्ञर जनम प्रकरण–31, श्लोक संख्या–401

9. महूर्तचिंतामणिः पीयूषधरा टीका, विवाहप्रकरणम, श्लोक संख्या.34 एकनक्षत्राजाताना नाडी दोषो न विद्यते | ज्योतिषतत्वप्रकाश

10. चतुर्नाडीत्वह्ल्यायां पांचाले पंच नाडिका |
त्रिनाडी सर्ग देशेषु वर्जनीया प्रयत्नतः ||

11. राश्यैक्ये चेदिभन्नमृक्षं स्यान्नक्षत्रौक्ये राशियुग्मं तथैव |
नाडी दोषो नो गणाना च दोषो नक्षत्रक्ये पादभेदे शुभ स्यात् ||

मुहूर्तचिंतामणिः, विवाहप्रकरणम श्लोक संख्या – 35

12. एकराशौ पृथग्धिष्णये दम्पतयोः पाणिपीडनम उत्तम मध्यमं भिन्नराश्येएकर्क्षग्योस्तयोः ||
एकर्क्ष चैकराशौ च विवाह प्रणहानिदः |
बृहददैवज्ञरंजनम, प्रकरण–31, श्लोक सं.–409, 414

13. अभिन्नराशयोर्यादि भिन्नमृक्षमभिन्नमृक्षं यदि भिन्न राशयोः |
प्रितिस्तदानीं निबिडा नृनार्योश्चेत्तिकारोहिणीवन्न नाडी ||
विवाहवृंदावन, अध्याय 3, श्लोक सं.424

14. यद्युभयोरेकर्क्ष भवति तदा चांशको भिन्नः |

15. महूर्तचिंतामणिः, पीयुषधराटीका, विवाह प्रकरणम, पृ. संख्या–360

16. आद्यांशेन चतुर्थांश चतुर्थांशेन चादिभम |
द्वितीयेन तृतीयं तु तृतीयेन द्वितीयकम |
पयोः भांशव्यधश्चैव् जायते वर कन्ययोः ||
तयोर्मत्युर्न सन्देह शेषाशाः स्वल्पदोषदाः ||
नरपतिजयचर्यास्वरोदयः चक्राध्यायः श्लोक 126

17. रोहिण्याद्रामघेन्द्राग्नितिष्यश्रवणपौष्णभम |
उत्तराप्रोश्पाच्चैव नक्षत्रैक्येऽपि शोभना ||
महूर्तचिंतामणिः पीयुषधराटीका, विवाहप्रकरणम, पृ.सं.–360

18. विशाखिकाद्राश्रवणप्रजेशतिष्यान्त्यपूर्वमघाः प्रशस्ता |
स्त्रोपुंसतारेक्येपरिग्रहे तु शेषा विवजर्या इति संगिरनते ||
बृहददैवज्ञर जनम, प्रकरण–31, श्लोक संख्या–422

19. शुक्रे जीवे तथा सौम्ये एकराशीश्वरो यदि |
नाडी दोषो न वक्तव्य सर्वथा यत्नतो बुधः | विवाह कौतुहल

20. दोषापत्त्ये नाडया मृत्यु जयजपादिकम |
विधय ब्राह्मणांश्चैव तर्पयेत्का चनादिना ||
गो अन्नं वसंन हेमं सर्वदोषापहारकम ||

प्रवासी हिन्दी साहित्य

डॉ. स्कन्ध जी पाठक

असिस्टेंट प्रो. जगतपुर पी. जी. कॉलेज

जगतपुर वाराणसी

प्रवासी हिंदी साहित्य विगत दो सौ वर्षों के दौरान भारत से बाहर गये और वहीं पर बसे लोगों का साहित्य है | मॉरिशस,फिजी, सूरीनाम आदि देशों में प्रवास करने वाले

भारतीयों की हिंदी भारत की परिनिष्ठित खड़ी भोली हिंदी नहीं है | उनकी हिन्दी में भोजपुरी, अवधी आदि बोलियों का अच्छा–खासा प्रभाव है | अलग–अलग देशों में इसका अलग–अलग नाम भी है | "फीजी में यह फीजिषात, सुरीनाम में सरनामी तथा दक्षिण अफ्रीका में नेताली के नाम से जानी जाती है |"[1] लेकिन वस्तुतः वह हिन्दी ही है जो किंचित बदले रूप में |

प्रवासी हिन्दी साहित्यकार अपने साहित्य की रचना स्थानीय हिन्दी में रचते हैं, यही स्थानीय हिंदी उनके परस्पर संवाद का जरिया भी है |भोजपुर और अवध आदि से निकाले गये आधिकांश गिरमिटियों की भाषा में उनकी स्थानीय भाषा की प्रधानता थी | उनकी भाषा का फीजी में वहीं की भाषा का फीजी तथा अंग्रेजी और सूरीनाम में बोली जानेवाली स्रागतोंमो और अन्य दूसरी भाषाओं से मिश्रण हुआ जिसके कारण हिंदी के नये प्रवासी भाषारुपों का उदय हुआ |

प्रवासी भारतियों द्वारा लिखा जा रहा हिंदी साहित्य मुख्यतः भारतीयों के विदेश आगमन,उनके संघर्ष तथा विकास का दस्तावेज कहा जा सकता है | प्रवासी हिंदी साहित्य की मूल संवेदना प्रवासी की पीड़ा है जो साहित्य में आद्यन्त दिखाई पड़ती है | यद्यपि उसका स्वरूप विविध राजनैतिक तथा सामाजिक परिस्थितियों की वजह से परिवर्तित हुआ दिखता है | प्रवास में जहाँ आदमी के मन में एक तरफ नई जगह जाने का उत्साह है, वहीं दूसरी तरफ वियोग की गहरी पीड़ा है, विस्थापन का कष्ट है तथा साथ ही भविष्य की आशंकाएँ हैं |

अपनी जमीन छोड़कर विदेश गया आदमी पीढ़ी–दर–पीढ़ी प्रवासी ही रहता है | उसके अंतर की गहराई में प्रवास की

पीड़ा होती है | वह अपनी भाषा, संस्कृति और अपने जीवन–मूल्य को निरन्तर पकड़े रहना चाहता है, कारण यही दुसरे देश में उसकी अपनी पहचान है | नये देश के मूल निवासी कभी भी उसे पूर्णतः स्वीकार नहीं कर पाते |रूप, रंग– भेद ही नहीं, भाषा, खान–पान, आचार–विचार, जीवन–मूल्य, रीति–नीति का भेद विदेश में उसे अलग बनाये रखता है | यही प्रवास का दंश है | प्रवासी अपने को सामान्य से अलग महसूस करता है पर उसकी विवशता है कि उसे रहना वहीं है | यह विवशता उसे नये देश को अपनाने की अपना बनाने की है | यही विवशता प्रवासी साहित्यिक अभिव्यक्ति की मूल चेतना के रूप में भी उभरकर सामने आती है | प्रवासी साहित्यकार भारत को याद करते हुए अपनी आँखों में पानी भर कर कहता है –

"वही दिनवा जब याद आवेला अंखिया में

भरेला पानी रे |

हिंदुस्तान से भागकर यही हैं अपनी

कहानी रे |

भाई छूटा, बाप छूटा और छूटी महतारी रे |

अरकटिया खूब भरमवलीस कहें पैसा कमैबू

भर–भर थाली रे |

वही चक्कड़ में पड़ गइली, बचवा याद

आय गइल नानी रे |"[2]

यहाँ पर प्रवासी लेखक की पीड़ा हिंदुस्तान से दूर जाना ,सगे–संबंधियों का छूट जाना है | उसे पैसे के लिए यह पीड़ा भोगनी पड़ी | उसका जिक्र वह अपनी कविता में करता है |

प्रवासी रचनाकार को पीड़ा इस बात पर भी है कि वह वहाँ पैदा होकर भी परदेशी ही कहलाता है | यद्यपि वह तन, मन, धन से उसी देश से संबंधित है, लेकिन वहाँ की सरकार हमें भारतीय कहकर मेरे साथ असमानता का व्यवहार करती है | हमने यहाँ के जंगल को सवॉर कर मंगल विधान रचे हैं| लेकिन हमें दो क्षण के लिए भी आराम नहीं मिलता |वह अपने मन में सोचता है कि पता नहीं हमारा यह कालचक्र अनुकूल होगा | फीजी के राष्ट्र कवि पंडित कमलाप्रसाद मिश्र की कविता 'क्या में परदेशी हूँ' में इसका स्पष्ट चित्रण हुआ है–

"घडल सिंधु तट पर मैं बैठा अपना मांस बहलाता
फीजी में पैदा होकर भी में परदेशी कहलाता
यह है गोरी नीति मुझे सब भारतीय अब भी कहते
यद्यपि तन मन धन से मेरा फीजी से ही है नाता
भारत के जीवन से फीजी के जीवन में अंतर है
भारत कितनी दूर वहाँ पर कौन सदा जाता आता
औपनिवेशिक नीति मरल है, नहीं हमें जीने देती
वे उससे ही खुश रहते हैं जो उनका यश है गाता
भारतीय वंशज पग–पग पर पाता है केवल कंटक
जंगल को मंगल करके भी दो अज चैन कहाँ पाता

साहस है हम सब सह लेंगे हम भयभीत नहीं होंगे

पता नहीं कब गति बदलेगा कालचक्र जग का त्राता |"[3]

प्रारंभिक अभिव्यक्ति गिरमिट गीतों के रूप में ही मिलती है | परदेश जाने का कारण सुखद भविष्य की कामना थी | वह विदेश पहुँचते ही घोर निराशा में बदल गई | यह गीत बहुत ही मार्मिक और कारुणिक है जो प्रवासी भारतियों के गिरमिट जीवन के मौखिक साहित्यिक दस्तावेज़ कहे जा सकते हैं |

इसी बात को मॉरिशस के ब्रजेन्द्र कुमार भगत 'मधुकर' अपनी भोजपुरिया कविता में करते हैं –

" सोनवा के लोभवा में देशवा बिसरले हो,

सोना सुन मरीचिया के नाम |

सुनके कि पग–पग सोना अवा सेर ,

मिलि करे के न परी एकौ काम |

खाई के मुफ़ुत मिली मक्खन, मिठाई, मेवा,

पिये खातिर दुधवा बदाम |

नर्म नर्म मिली सुते के गलइचा हों,

परी करी चाकरी सलाम |" [4]

इनके साहित्य में देश–प्रदेस के बीच विभाज्य भाव को देख सकते हैं | एक ऐसा मन जो एक और अपने भारत को लेकर आसक्त है, उसके विद्रोह में आहें भरता हैं तो दूसरी ओर उसके पिछड़े पन पर अश्रुपात करता है | उसके प्रति निरासक्त भाव से प्रेम प्रदर्शित करता है | सुधीश पचैरी के अनुसार

प्रवासियों में एक विभक्त भाव होता है, एक ही वक्त में दो दुनियाओं को पुकारता है | एक वह जिसमें डालर कमाने, विदेश पलट होने, अमीर होने के लिए वह परदेस में वह मात्र कष्ट सहता अपनी देश को याद करता रहता है| दूसरा वह जो याद आनेवाले 'देश' के यथार्थ को भी जानता है जिससे ऊबकर वह प्रदेश भागा था! परदेस में उसका देशप्रेम जोर मारता है | और देश में परदेश प्रेम | पूँजीवादी सभ्यता की मारकाट वाली स्पर्धा, हर वक्त की असुरक्षा, अकेलापन उसे डॉलर देती है | कहीं न कहीं सभी प्रवासी अपनी मूल संस्कृति, मूल परम्परा और मानस से स्वभावतः या प्रकृतिजन्य रूप से जुड़े रहते हैं | यह जुड़ा रहना अवसरों, कुअवसरों पर बाहर भी झाँकने लगता है | परम्पराएँ, रीति–रिवाज, लोक–जीवन में रची–बसी आकृतियाँ, मौसम–बेमौसम हमारे व्यवहार, हमारे स्मृति और हमारी पहचान को उकेरती रहती है | भाषा का इस एहसास से बड़ा सीमित सा रिश्ता है | सिर्फ उन लोगों में भाषा इस एहसास का अहम हिस्सा बनती है जो काफी देर से, परिपक्वास्था में अपना परिवेश छोड़कर यहाँ आ बसे | आधे मन से वह उसमें लगता है लेकिन वह यह भी चाहता हैं कि डॉलर रहे संग में अपना गाँव भी रहे तो मजा है | इस तरह प्रवासी भाव देश–परदेस के बीच विभाज्य भाव है |

प्रवासी भारतीयों के देश यथा मॉरिशस, फीजी, सूरीनाम, दक्षिण अफ्रीका आदि में आज हिंदी की सभी विधओं में पर्याप्त और उत्कृष्ट सृजनात्मक लेखन हो रहा है | अनेक लेखकों की रचनाएँ भारत में प्रकाशित हो रही हैं और हिन्दी साहित्य जगत में उन्होंने अपना स्थान भी बनाया है पर उन देशों में जहाँ रहकर रचनाकार साहित्य लेखन कर रहा है वहाँ न तो भाषा के

स्तर पर और न ही साहित्य के स्तर पर हिंदी लेखक को सम्मानित स्थान मिल रहा है जो अपेक्षित है |

प्रवासी भारतीयों ने हिंदी की स्थानीय शैली का विकास किया है | ये प्रवासी हिंदी में कविता, कहानी, निबंध, उपन्यास आदि लिखकर हिंदी को समृद्ध कर रहे हैं | फीजी के कमलाप्रसाद मिश्र, विवेकानंद शर्मा, महावीर मिश्र, ज्ञानी सिहं, मॉरिशस के अभिमन्यु अन्त रामदेव घुर–घर, सुमित बुघन, प्रहलाद रामशरण, ब्रजेन्द्र कुमार भगत 'मधुकर', सूरीनाम के मुंशी रहमान खां, अमरसिंह रमज, सुरजन परोही, त्रिनिदाद की ममता लक्ष्मना, हरिशंकर आदेश, गुयाना के रंडल बूटी सिंह, रामलाल, दक्षिण अफ्रीका के पंडित तुलसी राम पाण्डेय, प्रो.राम भजन सीताराम, उषा देवी शुक्ल, राम विलास, चम्पा वशिष्ठ मुनि आदि हिंदी के प्रसिद्ध प्रवासी लेखक हैं | जिन्होंने अपनी रचनाओं के माध्यम से हिंदी साहित्य–जगत को श्रीसम्पन्न किया है |

प्रवासी भारतीय लेखकों के समक्ष आज कई चुनोतियाँ भी हैं जो यथार्थ में प्रवासी होने के कारण उसके प्रवासी नियति से जुड़ी हैं | प्रवासी भारतीयों की भाषा के संबंध में आज एक बड़ी चुनौती है कि प्रवासी भारतीय हिंदी भाषा बोलने के साथ ही हिंदी को देवनागरी में लिख भी सकें |लिपि के बिना भाषा–ज्ञान अधूरा हैं ही साथ ही वह भाषा जाननेवाले के अन्तर्मन में आत्मविश्वास भी नहीं जगा पाता | फीजी, सूरीनाम आदि देशों में हिंदी आज भी रोमन लिपि में ही लिखी जाती हैं | यही स्थिति अमरीका, इंगलैंड, जर्मनी आदि देशों में बसे प्रवासी भारतीयों की भी है | जो हिंदी तो बोलते हैं पर देवनागरी के स्थान पर हिंदी रोमन में लिखते हैं |

हिंदी का प्रवासी साहित्य, हिंदी साहित्य का अंतर्राष्ट्रीय स्वरूप प्रस्तुत करता है | जिस तरह हिंदी में भारतेन्दु युग, द्विवेदी युग, छायावाद, प्रगतिवाद,प्रयोगवाद, अकविता, नई कविता, दलित साहित्य स्त्री–विमर्श आदि का स्वतन्त्र आस्तित्व है | उसी तरह प्रवासी हिंदी साहित्य की भी आज अपनी खास पहचान है | इक्कीसवी शताब्दी की शुरुआत में आधुनिक साहित्य के अन्तर्गत प्रवासी हिंदी साहित्य के नाम से एक नये युग का प्रारंभ हुआ | 'संख्या–बल की दृष्टि से हिंदी आज विश्व की दूसरी प्रधान भाषा है |"[5] तो इसका श्रेय उस विशाल प्रवासी समुदाय को भी जाता है जो भारत से बाहर अन्य देशों में जाकर बसने के बावजूद हिंदी को अपनाये हुए हैं | इन देशों में रचा जा रहा साहित्य, उस देश से हमें परिचित कराता है | साथ ही उनकी भाषा से शब्द भी ग्रहण कर रहा है | परिणामतः हिंदी का भी एक नया स्वरूप विन्यास विकसित हो रहा है जो हिंदी में लिखे जा रहे साहित्य को नये चटकारे से भरता है |

<u>संदर्भ :</u>

1. विमलेश कांति वर्मा : फीजी में हिंदी :स्वरूप और विकास, पीताम्बरा प्रकाशन, नई दिल्ली 2000
2. अमर सिंह रमण (सूरीनाम)– आप्रवासी यादगार (कविता)
3. कमला प्रसाद मिश्र (फीजी)– क्या मैं परदेसी हूँ (कविता)

4. ब्रजेन्द्र कुमार भगत 'मधुकर'–गिरमिट के सपना (कविता)
5. क्रिस्टल डेविड : ड कैंब्रिज इनसाइक्लोपीडियाऑफ लैंग्वेजेज, कैंब्रिज युनिवर्सिटी प्रेस, 1998, पृ.287

गीतांजलि श्री का कथा साहित्य में योगदान

शोधार्थी: विणा मेहराज
कश्मीर विश्वविद्यालय

गीतांजलि श्री जी का कथा–साहित्य में एक जाना माना नाम हैं | गीतांजलि श्री विविधोन्मुख प्रतिभा की धनी हैं | इनके कथा–साहित्य में जीवन और उसके विविध पहलुओं के मध्य एक अदभुत तारतम्य हैं | पिछले दशक की कथा लेखिकाओं में गीतांजलि श्री कथ्य एवं शिल्प दोनों स्तरों पर तथा कथा–साहित्य में भी अपनी एक अलग पहचान बनाए हुए हैं | गीतांजलि श्री जी के पाँच उपन्यास 'माई' (1993), 'हमारा शहर उस बरस' (1998), 'तिरोहित'(2001), 'खाली जगह'(2006), 'रेत समाधि'(2018) है | इनके पाँच कहानी– संग्रह 'अनुगूँज'(1991), 'वैराग्य'(1999), 'यहाँ हाथी रहते थे'(2012), 'मार्च माँ और साकुरा' तथा 'प्रतिनिधि कहानियाँ' है व 'अनुवादित साहित्य भी है |

माई उपन्यास गीतांजलि श्री का पहला उपन्यास है, जो सन 1993में राजकमल प्रकाशन द्वारा नई दिल्ली से प्रकाशित हुआ | इस उपन्यास में एक सामन्तीय ढाँचे के एक सम्पन्न परिवार की तीन पीढीयों की कहानी है | परिवार में दादा,दादी एक पीढ़ी, बाबू , माई दूसरी पीढ़ी तथा भाई–बहन (सुबोध,सुनैना) तीसरी पीढ़ी–कुल छः प्राणी हैं | बाहर दादा और भीतर दादी का हुक्म चलता है | माई सबकी आज्ञाकारिणी हैं | सबकी सेवा करते और सबका भोझ ढोते उसकी कमर झुक गई है | बाबू अपने में

सिमित स्वत्त्वविहिन व्यक्ति है | जैसे-तैसे इंडस्ट्रियल कामप्लेक्स में नौकर हो गए थे | उपन्यास में कथा-लेखिका सुनैना (नैरेटर) अपनी स्मृतियों के सहारे माई को केन्द्र में रखकर अपने परिवार की अंतरंग कथा कहती है | एक प्रकार से इसे एक सामन्तीय परिवार की तीन पीढ़ियों की नारी चेतना की कथा भी कह सकते हैं | पहली पीढ़ी डयोढ़ी की सीमाओं में कैद किन्तु अपने में संतुष्ट हैं | दूसरी पीढ़ी ऊपर से शांत, शीतल किन्तु भीतर सुलग रही है | तीसरी पीढ़ी बाहर निकलकर भी घुटनभरी निजता में कैद है | सुनैना इस तीसरी पीढ़ी की नारी है, जो निजता की कैद से उभरने के लिए बैचेन है | वह अनुभव करती है कि माई में भी आग थी, जिसका दुसरे के लिए जलना उसने देखा पर, जिसका अपना जलना, अपने के लिए उसने नहीं देखा | यह आग संक्रमित होकर सुनैना में भी जल रही है | यही उसे बैचेन रखती है | यही उसे मुक्ति-पथ पर अग्रसर करेगी |

यह गीतांजलि श्री का दूसरा उपन्यास 'हमारा शहर उस बरस' सन 1998 में राजकमल प्रकाशन द्वारा नई दिल्ली से प्रकाशित हुआ | इस उपन्यास में हमें साम्प्रदायिकता, उत्पीड़न और जाति-भेद का बेबाक वर्णन मिलता है | साम्प्रदायिकता के कारण आम आदमी के मन में घृणा पैदा होती है | जो विनाशक हो सकती है, इसी तथ्य का सशक्त चित्रण गीतांजलि श्री ने इस उपन्यास में किया है | यह साम्प्रदायिक धार्मिक कट्टरता और उदार मानवीयता की द्वंद्व कथा है | यह मनुष्य के क्षितिज पर घनीभूत होते अंधेरे और उसे चीरकर निकलते उजाले की त्रासद कथा है | कथा में श्रुति, हनीफ,ददद्दू,शरद,प्रो.नंदन आदि प्रमुख पात्र हैं | ददद्दू धर्म निरपेक्षता के चरित्र में है | ददद्दू के अतिरिक्त सभी पात्र प्रतीकात्मक चरित्र में है | जो साम्प्रदायिक दंगों के विभिन्न पक्षों को प्रकाश में लाने का प्रयास करते हैं |

हनीफ और श्रुति पति–पत्नी है | शरद दोनों का दोस्त है | हनीफ विश्वविद्यालय में समाज–शास्त्र विभाग में प्रोफेसर है | हनीफ का मित्र शरद भी उसी विभाग में है | दोनों समान विचारों के बुद्धिजीवी है | शहर में एक 'मठ' है | शहर में दंगे करवाना, जलूस निकलवाना, भड़काऊ भाषण देना, लोगों को दुसरे समुदायों के प्रति भड़काना आदि सारी गतिविधियाँ 'मठ' के द्वारा ही संचालित होती है | 'मठ' के पास एक विश्वविद्यालय है जो साम्प्रदायिक तनाव का फायदा उठाता है | शहर में दंगे होने लगते है | विश्वविद्यालय का समाज–शास्त्र विभाग दंगों की जाँच करके रिपोर्ट पेश करता है | रिपोर्ट अख़बार में छपती है | शरद को हिन्दू होने के कारण छोड़ दिया जाता है | परंतु मुसलमान होंने के कारण साम्प्रदायिक ताकतों का सारा आक्रोश हनीफ को अपना लक्ष्य बनाता है | उसको अनेक प्रकार से मानसिक यातनाएँ दी जाती है | समाजशास्त्र विभाग के अध्यक्ष प्रो.नंदन भी इसी अवसर का लाभ उठाते है | विश्वविद्यालय में रोटेशन पद्धति लागू हो गई है उसके बाद हनीफ का नबर है | वह नहीं चाहते कि कोई दूसरा उसका अध्यक्ष बने | वे छात्रों को भीतर भीतर भडकाते हैं | छात्र हनीफ की कथाओं का बहिष्कार करने लगते हैं | हनीफ अकेला पड़ने लगता है उसे संरक्षण देने के लिए मुसलमान नेता आगे आते हैं | सारा शहर हिन्दू और मुसलमान नेताओं में बँट जाता है | मठ के महंत की हत्या कर दी जाती है उसे शहीद बना दिया जाता है | पूरी घटना को राजनीतिक रंग दिया जाता है | शहर में तनाव चरम पर है | पुलिस हनीफ को संभल कर रहने का सुझाव देती हैं | शहर में जगह–जगह दंगे होने के कारण सारा माहौल उस बरस का दम घोटू हो जाता है | इस तरह इस उपन्यास में गीतांजलि श्री ने साम्प्रदायिकता का चित्रण करते हुए समाज का आईना पाठक को दिखाने का प्रयास

किया है! 'तिरोहित' गीतांजलि श्री का तीसरा उपन्यास है, जो सन 2001 में राजकमल प्रकाशन द्वारा नई दिल्ली से प्रकाशित हुआ | इस उपन्यास में एक कस्बे में एक छत के नीचे दो युवा स्त्रियाँ रहती हैं | 'चच्चों' घर की मालकिन है, 'ललना' उसके आश्रय में रहती है | दोनों के बीच तटस्थ काम प्रेरित अनुराग है | वे मन और शरीर की माँग को स्थगित न करते हुए सीमाये लाँघती है और एक–दुसरे में समा जाती है | वे सीमा लाँघने में सुख को सहजता से लेती है! दोनों एक–दुसरे से इस सीमा तक बंधी है कि चच्चों की मृत्यु के बाद ललना भी तिरोहित होने को तत्पर हो जाती है | स्त्री समलैंगिकता को अकुण्ठ भाव से चित्रित करने वाला यह पहला उपन्यास है |

'खाली जगह' गीतांजलि श्री का चौथा उपन्यास है, जो सन 2006 में राजकमल प्रकाशन द्वारा नई दिल्ली से प्रकाशित हुआ | इस उपन्यास का केन्द्रीय रूपक बम है | एक बम कितनों की जिन्दगी बर्बाद कर सकता है, इसका चित्रण इस उपन्यास में हुआ है | उपन्यास की कथानुसार एक परिवार में माँ, बाप एवं उनका अठारह साल का एक बेटा है, वह आगे की पढ़ाई करने के लिए शहर जाना चाहता है | माँ–बाप उसे दूर भेजना नहीं चाहते पर बेटे की जिद्द के आगे वे हार मानकर उसे विश्वविद्यालय में फार्म बरने के लिए बेज देते हैं | एंट्रेंस परीक्षा के लिए विश्वविद्यालय में सुबह से आवाजाही शुरू थी कुछ बच्चे कैफे शॉप में बैठकर पहचान बढ़ा रहे थे, तभी कैफे शॉप में बम के फटते ही सब छितर जाता है ,हमेशा के लिए वह पल जैसे थम जाता है | ऐसी हालत में बस एक जगह खाली थी, तीन बरस के एक बच्चे के माप की, मानो वह बच्चा अकेला चश्मदित गवाह था | उस कैफे में उन्नीस लोगों की मौत हो चुकी थी अठारह लोगों की पहचान होने के बाद बस एक लाश की पहचान नहीं हो पाई

थी दूसरी पहचान तीन साल के बच्चे की जो जीवित होकर भी अपनी पहचान नहीं बता सकता था | माँ–बाप उस अंतिम लाश को पहचान कर स्वीकार कर लेते है कि यह उनके बेटे की लाश है साथ ही वे उस तीन साल के बच्चे को भी अपना बेटा समझकर ले जाते है, पालते है पर माँ–बाप का मन अपने बेटे के लिए हमेशा खाली रहता है | माँ–बाप के होते हुए वह छोटा बेटा भी स्वयं को अकेला अनुभव करता है | इस तरह एक साथ होते हुए भी यह परिवार बिखर गया था | एक बम ने पूरे परिवार को बिखरा दिया था जिसका असर पूरी जिन्दगी भर लोगों के जीवन पर पड़ा था |

इन सभी बातों को गीतांजलि श्री इस उपन्यास के माध्यम से बड़ी सरलता के साथ चित्रित किया है |

'रेत समाधि' गीतांजलि श्री का पाँचवा उपन्यास है, जो सन 2018 में राजकमल प्रकाशन द्वारा नई दिल्ली से प्रकाशित हुआ | इस उपन्यास में लेखिका ने हर साधारण औरत में छिपी एक असाधारण स्त्री की महागाथा कही है | इस उपन्यास में एक अमर प्रेम प्रसंग व् रोजी जैसी अविस्मरणीय चरित्र में अंकित है | इस उपन्यास की कथा, इसका कालक्रम,इसकी संवेदना सब अपने निराले अंदाज़ में चलते हैं | इस उपन्यास में लेखिका ने अस्सी वर्ष की होने चली विधवा दादी की कहानी कही है जो उपन्यास के आरम्भ में न उठने की बात कहकर बाद में अपने इन्हीं शब्दों की ध्वनि बदल कर कहती है कि अब तो नई उठूंगी | दादी उठती है बिलकुल नई ,नया बचपन, नई जवानी, सामाजिक, धार्मिक वर्जनाओं–निषेधों से मुक्त, नए रिश्तों और नए तेवरों से पूर्ण स्वछंद | इस उपन्यास में रोजी बुआ का आगमन अनेक नये विचार उत्पन्न करता है जिस रोजी बुआ को अक्सर बेटी अपनी माँ के आसपास देखती है | उसी रोजी बुआ

की शक्ल के आदमी को रज़ा टेलर के नाम से देखकर हैरान हो जाती है इस बात का पता तब चलता है जब रोजी की हत्या हो जाती है | लेखिका ने इस उपन्यास में तीसरे लिंग का भी वर्णन किया है जो समाज में रहते हुए अपनी एक अलग पहचान बनाए हुए हैं | उनके कानूनी अधिकारों का भी वर्णन किया है पर कानून समज में कितने प्रभावशाली रहते हैं यह भी बताने का प्रयास किया है | रोजी ने अपना अपना दिवंगत शरीर मैडिक्ल रिसर्च के लिए दान किया था अंत में लावारिसों की तरह बिना किसी धार्मिक संस्कार के उसका शरीर विधुत अग्नि शमन दाह गृह में फूंक दिया जाता है | रोजी की मृत्यु के पश्चात माँ अपनी बेटी के साथ पाकिस्तान जाने की जिद्द करती है अपनी बेटी के साथ पाकिस्थान पहुँचते ही बेटी को ऐसा अनुभव होता है कि जैसे माँ सड़क, बार्डर , गलियों और वहाँ के लोगों से परिचित है | माँ पाकिस्तान में अनवर से मिलने की जिद्द करती है जो कि एक लकवाग्रस्त था माँ अनवर से मिलकर न मिल पाने की मांफी माँगती है| अनवर भी हल्के से होठों से माफी माँगता है पर उसी रात अनचाहे दो लोगों का साया सड़क पर आते ही एक साया चिल्लाता है कि भागो | गोली निकलती है माँ उछलकर पहाड़ी से छलाँग लगाती है माँ के निचे गिरते ही लेखिका के उपन्यास का शीर्षक पूर्ण हो जाता है–'रेत समाधि' | इस तरह उपन्यास में सरहदे हैं जिन्हें लाँघकर यह कृति अनूठी बन जाती है |

इसी तरह गीतांजलि श्री का पहला कहानी संग्रह 'अनुगूँज' है | इनके तीनों कहानी संग्रहों में जीवन की एक अदभुत तारतम्यता है उनकी रचनाशीलता में जीवन तो है, किन्तु मृत्यु बोध भी | एक कहानी में तो वह लिखती है कि मृत्यु जीवन का एक हिस्सा है | वह नये अंदाज की कहानियाँ ही नहीं लिखती

अपितु उसे माँजती है और कुछ नया बनाती है | इनके कहानी संग्रह इस प्रकार है |

अनुगूंज गीतांजलि श्री का पहला कहानी संग्रह है जो सन 1991 में प्रकाशित हुआ | इसमें कुल दस कहानियाँ है प्रत्येक कहानी का आधार स्त्री है 'प्राइवेट लाइफ' कहानी में नायिका स्वतंत्रता के लिए संघर्ष करती नजर आती है, तो 'हाशिये पर' कहानी में दाम्पत्य- दाम्पत्योत्तर सम्बन्धों में जटिलताएँ दृष्टय होती है | 'दरार' कहानी में वर्ग विषमता की दरारों के विविध पहलुओं को दर्शाता है| समाज, परंपरा, रूढ़ि, रीति-रिवाज आदि से लेकर पिता, पति, बेटे तक नारी की हर भूमिका को लेखिका ने वास्तविकता के साथ प्रस्तुत किया है |इस कहानी- संग्रह में नारियाँ या तो अपने आप में विद्रोह कर रही है या फिर समाज का सामना कर रही है |

'वैराग्य' गीतांजलि श्री का दूसरा कहानी-संग्रह है जो 1999 में प्रकाशित हुआ|इस कहानी-संग्रह में कुल 15 कहानियाँ संकलित हैं | इस कहानी-संग्रह में विषयों की विविधता दिखाई देती है! इस कहानी-संग्रह में स्त्री-पुरुष एक-दुसरे के साथ कंधे से कंधा मिलाकर चलते हुए नजर आते है | इस कहानी-संग्रह में लेखिका द्वारा अलग-अलग बिन्दुओं को टोह लेने की लालसा तो दिखाई देती है पर फटाफट नतीजा समझाने की कोई जल्दबाजी नही दिखती उनकी कहानियों में कहीं-कहीं जटिल आधुनिकता के आयाम है, तो कहीं-कहीं मानव सम्बन्धों की अनुभूतियाँ हैं | लेखिका ने कहानियों में शाश्वत मुद्दों को विषय बनाया है | जैसे- मृत्यु बोध, जीने की आशा, आत्मीयता की चाह आदि हर विषय पर ताज़ी संवेदना से भरकर होकर अपनी लेखनी चलाई है | वैराग्य की विशेषता है- भाषा की ध्वनि | लेखिका ने भाषा की ध्वनि का इस तरह प्रयोग

किया है कि जैसे कविता का भास होता है और कविता रस प्रतीत होती है |

'यहाँ हाथी रहते थे' यह गीतांजलि श्री का तीसरा कहानी संग्रह है जो सन 2012 में प्रकाशित हुआ | यह एक ऐसी कहानी है जिसमें एक शहर के शंघाई बन जाने की कथा को व्यक्त किया गया है | साम्प्रदायिक विभाजन रेखा से, गाँव दो पाटों में बंटा हुआ है | दो गाँव के बीच नदी पर पुल ने दोनों गाँवों को आपस में जोड़ रखा था | दोनों तरफ के लोग खेती करते, प्यार से रहते,अपनी सब्जियाँ पुल पर बेचने आते | एक तरफ मन्दिर की घंटियाँ तो दूसरी तरफ खुदा से दुआ माँगी जाती पर अचानक सम्प्रदाय की भावना ने दोनों गाँवों के लोगों के जीवन का महत्व ही बदल दिया | जिन्दगी इतनी आसान होते हुए भी लोग उसे सम्प्रदाय से जोड़कर किस तरह कठिन बना देते है | यही बात लेखिका ने इस कहानी में बताने की सफल कोशिश की है | यहाँ हाथी रहते थे इसमें 11 कहानियों का संकलन है | ये कहानियाँ विरोधी मनोभावों और विचारों को परत दर परत अघाड़ती है | भाषा और शिल्प के अनुसार ढलते जाना यह इस कहानी–संग्रह की विशेषता है | 'इति' में मौत के वक्त की बदहवासी दिखाई देती है | 'तितलियाँ' और 'बुलडोजर' में असमय मौत का भय और दुख का वर्णन है | ' थकान' कहानी में शादी के बाद प्रेम के अवसान के अवसाद को व्यक्त किया गया है | लेखिका ने इस कहानी में जापान के प्राकृतिक सौंदर्य का भी वर्णन किया है | 'इतना आसमान' में लेखिका ने लगातार हो रही प्रकृति की तबाही और उससे विद्रोह के दुख को व्यक्त किया है | 'मैंने अपने आप को भागते हुए देखा' कहानी का नायक अपने ही दादा के स्थापित नियम–मूल्यों से आक्रांत रहता है | जिससे उसके अंदर हीन भावना है | 'चकरघिन्नी' में उन्माद की

मनःस्थिति चित्रित हुई है | 'मार्च माँ और साकुरा' में लेखिका का चौथा कहानी–संग्रह है | इस में लेखिका ने यह बताने का प्रयास किया है कि एक स्त्री का कायान्तरण उसके अंतर्मन से है न कि चालू स्त्री से | कायाकल्प कभी भी हो सकती है | उसकी कोई उम्र नहीं होती | गीतांजलि श्री की प्रतिनिधि कहानियों का प्रथम संस्करण 2010 में और दूसरा संस्करण 2018 में प्रकाशित हुआ इसमें 11 कहानियाँ का संकलन हैं | यह गीतांजलि श्री का पाँचवा कहानी संग्रह हैं | यह एक खास सिग्नेचर ट्यून की कहानियाँ है | 'नाम', 'चकर घिन्नी', 'लौटती–आहट', 'दहलीज', 'दिशाशूल' ये सभी कहानियाँ स्त्री मन के उन अव्यक्त कोनों की ओर इशारा करती है और उन पीड़ाओं की अभिव्यक्ति करती है जिनकी ओर अक्सर ध्यान नहीं जाता | 'कसक' कहानी हमे एक ऐसे चरित्र से परिचित कराती है जो जीवन तो भरपूर जीती है पर अंत में तेरहवी मंजिल से कूदकर आत्महत्या कर लेती है | वह मृत्यु को जीवन का हिस्सा मानते हुए जीवन के बीचोबीच जीती हुई उसी सहजता के साथ मृत्यु के बीचोबीच चली जाती है बिना एक आंसू बहाए | 'इति' और 'भितराग' बुढ़ापे के संत्रास और सनकों को एक साथ गुत्थमगुत्था करके लिखी गई कहानियाँ हैं | 'पीला सूरज' भी मृत्यु बोध की कहानी है लेकिन अपने कथ्य और संरचना में बिलकुल अलग | 'बेलपत्र' पारिवारिक जीवन में साम्प्रदायिक अन्तरलय की कहानी है | इसमें एक प्रगतिशील मुस्लिम स्त्री एक हिन्दू युवक से प्रेम विवाह तो करती है पर समाज में व्याप्त साम्प्रदायिकता के काँटे उसे जगह–जगह से लहूलुहान कर देते है यह कहानी एक बड़े यथार्थ से हमारा सामना कराती है| 'दारा' एक प्रतीकात्मक कहानी है जिसे प्रतीकों से ही समझा जा सकता है | 'दारा', 'चौक', 'चकरघिन्नी', 'शान्तिपाठ' और 'दहलीज' जैसी

कहानियाँ एक अलग तरह के पाठकीय अनुशासन की माँग करती हुई पाठकों को भी रचना में साझेदारी के लिए न्यौता देती है | गीतांजलि श्री के 'माई' उपन्यास का हिन्दी से अंग्रेज़ी में 'काली फाँर विमेन' में अनुवाद हुआ है यह अनुवाद नीता कुमारी ने सन 2002 में किया 'काली फाँर विमेन' को साहित्य अकादमी पुरस्कार से विभूषित किया गया | 'तिरोहित' उपन्यास का अंग्रेज़ी में अनुवाद राहुल सोनी ने 'द रूफ बिनीथ देयर फीट' 2013 में किया | 'खाली जगह' का अंग्रेज़ी में अनुवाद निवेदिता मेनन ने 'द एम्प्टी स्पेस' सन 2011 में किया | इसके अतिरिक्त फ्रेंच, उर्दू, बंगला, गुजरती और सर्बियन भाषा में भी अनुवाद हुआ है | हिन्दी और अंग्रेज़ी भाषा में उनकी गहरी पैठ का परिचय मिलता है | दूसरी ओर हिन्दी भाषा में उनकी अभिव्यक्ति क्षमता का परिचय देती है | उनके कहानी–संग्रहों में कुछ कहानी–संग्रहों का हिन्दी से अंग्रेज़ी, जर्मन और जापानी भाषा में अनुवाद हुआ है | वह स्वयं भी एक अच्छी अनुवादक है और एक सफल कहानीकार एवं प्रख्यात उपन्यासकार भी है |

इस प्रकार गीतांजलि श्री का कृतित्व बहुआयामी है | उनकी रचना भूमि बदलती रही है | उसी के अनुरूप उनके भाषा और शिल्प में भी परिवर्तन होता रहा है | इस दृष्टि से हिन्दी उपन्यास लेखिकाओं में उनका स्थान विशिष्ट और विरल है | उनका कथा–साहित्य समाज को एक नया तेवर देता है |

हिन्दी काव्य में तीर्थराज प्रयाग

डॉ. भारतेंदु कुमार पाठक
सहायक प्रोफेसर हिन्दी विभाग
कश्मीर विश्वविद्यालय हजरतबल
श्रीनगर-190006

पूर्वकाल में पितामह ब्रह्मा द्वारा यज्ञादि क्रिया सम्पन्न किये जाने के कारण यह स्थान प्रयाग नाम से प्रसिद्ध हुआ | प्र उपसर्ग सहित यज्ञ/यजन मिलकर विशेष क्रियाविधि परक अर्थ प्रधान करता है गंगा यमुनादि नदियों का मिलन स्थान भी है जिसके मध्य संत/सहृदय रूपी सरस्वती ज्ञान धारा त्रिवेणी रूप में साकार है |

हिन्दी काव्य साहित्य में तीर्थराज प्रयाग संबंधित अनेक तथ्य व् साक्ष्य उपलब्ध है | महान रचनाकारों ने 'प्रयाग' वर्णन द्वारा अपने साहित्य को सुन्दर बनाया हैं | हिन्दी कवियों में गोस्वामी तुलसीदास ने अपने ग्रंथों में प्रयाग संदर्भित अनेक छन्द प्रस्तुत किया हैं | उन्होंने 'प्रयाग' को तीर्थों का राजा कहा है | यथा–'तीर्थराज प्रयाग' | प्राचीन काल में यहाँ पर भरद्वाज मुनि का आश्रम था–

"भरद्वाज मुनि बसहि प्रयागा |
भरद्वाज आश्रम अति पावन |
परम रम्य मुनिवर मन भावन |"

गोस्वामीजी ने अपने काव्य में जहाँ भी तीर्थों का वर्णन किया है वहाँ प्रयाग का अवश्य चित्रण किया है | कुछ पंक्तियाँ दृष्टव्य है–

"माघ मकरगत रवि जब होई |
तीरथ पतिहिं आव सब कोई ||
पूजहिं माधव पद जलजाता |
परसि अखय बटु हरषहिं गाता |"[1]

अन्यत्र–

"एहि प्रकार भरि माघ नहाही ।
एक बार मरी मकर नहाए ।
तीर्थराज समाज सुधर्मा ।"[2]

अर्थात – प्रयाग तीर्थों का राजा है । यहाँ पर भरद्वाज मुनि निवास करते हैं । यह स्थान अति सुन्दर व् मुनियों को भाने वाला है । जब मघ माह के समय सूर्य मकर राशि पर स्थित होता है, तब सभी (मुनि, साधु व धार्मिक) प्रयाग आते है । वे सभी श्री माधव की पूजा करते हैं और उनके चरण कमल को स्पर्श करते हैं । वे अक्षय वट (को देखकर) प्रसन्न होते है । वहाँ पर भरद्वाज के आश्रम पर मुनियों का समाज होता है, जो स्नान हेतु पधारे हैं । इस प्रकार पूरे माघ भर स्नान कार्य अनवरत चलता रहता है । यथा–

"तहाँ होई मुनि रिषय समाजा ।
जाहि जे मज्जन तीरथ राजा ।।"[3]

'श्रीरामचरित मानस' के अतिरिक्त 'कवितावली' नामक रचना में 'तीर्थराज सुषमा' से एक छन्द है–

"देव कहै अपनी अपना, अवलोकन तीरथराज चलो रे ।
देखि मिटैं अपराध आगाध, निमज्जत साधु समाज चलो रे ।
सोहै सितासित को मिलिबो तुलसी हुलसी हिय हेरि हलोरे ।
मानो हरे तृन चारू चरैं बगरे सुरधेनु के धौल कलोर ।"[4]

"देवतालोग आपस में कहते हैं– अरे! तीर्थराज प्रयाग का दर्शन करने चलो उनके दर्शनमात्र से बड़े–बड़े अपराध नष्ट हो जाते हैं, वहीं अच्छे–अच्छे साधु स्नान किया करते हैं | तुलसीदास जी कहते हैं, वहाँ श्रीगंगा व् यमुना के शुभ एवं श्याम वर्ण जल का संगम बड़ा हर्षित होता हैं, मानो इधर–उधर फैले हुए कामधेनु के शुक्ल वर्ण मनोहर बछड़े हरी–हरी घास चर रहे हों |"

इस प्रकार गोस्वामी जी ने अपने साहित्य में तीर्थराज प्रयाग का चित्रण पूर्व तन्मयता के साथ किया है

रीतिकालीन कवियों ने सर्वोच्च वस्तु व सौन्दर्य की तुलना 'प्रयाग' से की है | सतसईकार का कथन है–

'पग–पग होत प्रयाग'–[5]

तो पदमाकर ने भी कहा है–

'पैरे जहाँ इ जहाँ वह बाल तहां तहां ताल में होत त्रिवेनी'

कहने का तात्पर्य है कि प्रयाग अपने धार्मिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, व्यावसायिक व् अन्य कारणों से भी महत्वपूर्ण स्थान है, जो महाकवियों के काव्य का विषय बनता रहा है | सम्पूर्ण देश की जनता व् विश्व के धार्मिक व्यक्ति क्षेत्र, भाषा, विचार की भावना भूलकर एक देशीय मिलन हेतु यहाँ सांस्कृतिक यज्ञ सम्पन्न करने आते हैं | यहां का संगम मात्र नदियों का संगम न होकर, क्षेत्र, जाति,प्रथा, कला, विद्या व् विचारधाराओं का संगम है |

सन्दर्भ –

1. श्रीरामचरित मानस–गीता प्रेस गोरखपुर पृ.–40, एक सौ बाईसवाँ पुनर्मुद्रण, सं.2069, (मूल मझला साइज)
2. उपर्युक्त,पृ.–41
3. उपर्युक्त,पृ.–41
4. 'कवितावली'– गो.तुलसीदास–गीता प्रेस गोरखपुर, पृ.–140, संस्करण सं. 2074
5. सतसई–कविवर बिहारीलाल

मो.-7889760568

ई.मेल–pathakupandkasmir@gmail.com

सुदामा पाँडे के प्रजातंत्र में नारी

निर्भय सिंह

शोध छात्र,

हिन्दी विभाग ,

अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय,अलीगढ़

दलित जिस मन्दिर का एक–एक ईट रखकर निर्माण करता है, वह मन्दिर खुद उसका नहीं होता | विडम्बना यहाँ भी यही है कि मूल स्रोत होने के बावजूद, परिवार भी स्त्री का अपना नहीं होता; वह भी बाप, पति या बेटे का ही होता है | हाँ, उसकी मर्यादा और हितों की रक्षा वह जान देकर भी करती है | वह उस परिवार की इज्जत होती है, मगर इस इज़्ज़त की परिभाषा परिवार का केन्द्रीय पुरुष तय करता है– जिसके पीछे धर्म,संस्कृति, वंश और रक्त की परम्पराएँ होती हैं | वह जन्मदात्री है, मगर वंश पिता के नाम चलता है और बेटा ही वंशधर कहलाता है | परिवार की बनावट एक सामंती दुर्गा की तर्ज पर की जाती है, जिसे हर 'बाहरी' हमले से बचाकर रखना होता है | अगर दुर्गा का हर सदस्य निष्ठावान समर्पित और चौकस नहीं होगा तो बाहरी हमले या भीतरी विद्रोह उसे नष्ट कर देंगे | वस्तुतः सामंती समाज इन पारिवारिक दुर्गो की द्वीप श्रृंखला से बना होता है | इन दुर्गों के

नियंत्रण एवं सुरक्षा की बागडोर भले ही पुरुषों के हाथों में हो, बोझ सारा स्त्री के कंधों पर ही होता है | उसका कर्तव्य है कि दुर्ग के हर सदस्य के स्वास्थ्य, भोजन और क्षमता को बनाए रखने की व्यवस्था में ढील न आने दे; वंश–परम्परा चलाए रहे | वह अधिकारहीन कर्तव्यों की गौरवशाली प्रतीक हैः वह अन्नपूर्णा है | उधार के अधिकारों का वह उसी सीमा तक प्रयोग कर सकती है जितने की अनुमति गढ़ स्वामी उसे सौपता है– या जो परिवार के लिए असुविधाजनक नहीं होते | उसे कही या अनकही सख्त हिदायत होती है कि अपना सारा जीवन और संसाधन वह सिर्फ परिवार के संवर्धन और संरक्षण में लगाए रखेगी | कर्तव्यों में जरा–सी भी ठील उसे न केवल सारे अधिकारों से वंचित कर सकती है ; बल्कि उसे फालतू बोझ की तरह ठिकाने भी लगा सकती है | उसके सम्मान की एक मात्र शर्त है परिवार के प्रति उसके निष्कंप वफादारी..... वह हर सांस में भगवान से परिवार की कुशल–क्षेम के लिए प्राथना करती है | व्रत उपवास और तपस्या द्वारा अपना होना सिद्ध करती है इसकी हर पूजा पति–पुत्र प्राप्ति के लिए कृतज्ञता ज्ञापन है | इन्ही की सेवा में प्राणोत्सर्ग करने वाली स्त्री, देवी की तरह पूँजी जाती है क्योंकि संसार के सारे स्वर्ग उसके चरणों में होते हैं | वह हर भारतीय स्त्री का रोल मॉडल होती है– **राजेन्द्र यादव** (कथा जगत की बागी मुस्लिम औरते पृ. सं. 9–10) | राजेन्द्र जी की ये बातें कहीं 'धूमिल'' के काव्य में भी दिखाई पड़ती हैं–

"बीसवी शताब्दी के सातवें दशक के

आखिरी दिनो, स्त्रियाँ स्त्रियाँ थीं

घर के चहबच्चों में सधवा–

डूबती शोहदों की मुमकिन–सी भाषा में

कविता की संसद थीं |

हरी–हरी ताजा दम और गरम

जिसमें तोदू की तर थी, और मोदू की मद थी"

(बीसवीं शताब्दी का सातवाँ दशक,पृ.59)

धूमिल कहते है कि किताबों की बात लोग किताबों तक ही सीमित रखना चाहते हैं | जब नारी को देवी के रूप में देखा जा रहा है तब निसन्देह उसने पुरुषों को श्रीदेवता माना–

"वह उन्हें उठाती है और

आँखों में, बाँहों में और पिण्डलियों में भर लेती है |

क्वारी जाँघों में, एक सपना उभरता है

होंठों के पिच से एक सिसकी

उछलती है और आहों की झील में

छलांग लगा जाती है |"

(जनतंत्रः एक हत्यारा सन्दर्भ, पृ. 72–73)

यद्यपि नारी आज भी पुरुषों को देवतुल्य ही मानती है, परन्तु नारी के प्रति पुरुष नजरिया काफी बदल गया है | ऐसा नही कि नारी नहीं बदली आज की नारी प्राचीनकाल की नारी न होकर वह समय के अनुरूप स्वयं को ढाल रही है | माँ और बुराई के व्यवसन में फसें बेटे के संबंधों के बारे में धूमिल कहते है –

"लगातार हारते जुआड़ी के हाथो की नोट

हो रही है | देह के बहुत बाहर

मै तेरा बेटा हूँ, तू मेरी माँ है |

मगर,सुन–

हम दोनों के बीच का रिश्ता कहाँ है ?

पता नहि कब गिर गया वह तेरे

आँचल मेरी फटी जेब से,इन दिनों

खाली हाथ हम, दोनों जीने के लिए

विवश हैं, एक दुसरे को दिए गए फरेब से"

(आदम इरादों से बित्ता भर उठी हुई पृथ्वी पृ.105–106)

आज यह आवाज बुलन्द है– 'मैं नारी जरूर हूँ पर हारी नहीं हूँ, मुझ पर अब जुल्म मत ढाओ क्योंकि यदि मेरा मौन

टूटेगा तो तुम्हारा बसा बसाया उपवन बिखर जायेगा | धूमिल के शब्दों में –

"हर बार की तरह

तुम सोते हो कि इस बार भी यह

औरत की लालची जाँघ से शुरू होगा |"

(सुदामा पाँडे का प्रजातंत्र पृ.21)

हर औरत की एक कहानी होती है | कुछ की कहानी दर्द भरी तो कुछ की खुशियाँ भरी होती हैं | जिनकी खुशियाँ भरी होती हैं उनमें भी कहीं न कहीं दर्द छिपा होता है | उस दर्द का हम या तो एहसास नहीं कर पाते या फिर वे हमें एहसास का मौका नहीं देती| सुदामा पाण्डे में धूमिल कहते हैं कि –

"लड़की! लड़की !!तुम क्या करोगी ?

तुम क्या करोगी ? काँपती अंगुलियाँ

चोटी के फन्ने बनाती हैं

"मैं उसे अपनी यादों में जिन्दा रखूँगी

अपने रिबन का नाम

उसके नाम पर रखूँगी |"

(जनतंत्रः एक हत्यारा सन्दर्भ, पृ. 73–74)

आज के बदलते समय में ज्यादातर औरतें स्वयं को भूल चुकी हैं | सवाल उठता है कि – क्या इसके लिए सिर्फ औरत ही जिम्मेदार है ? नहीं, बल्कि हमारा वह समाज भी जिम्मेदार है, जिसकी गंदी मानसिकता ने तमाम अनैतिक कार्यों के लिए महिलाओं को विवश कर दिया है | वह स्पष्ट कहते है –

"चमड़े को गाने दो प्यार

यौवन अराजक तत्वों से बनता है

चमड़े को गाने दो प्यार'

भाषा की तंगी में लगभग

नंगी होती हुई औरत ने कहा

इच्छाओं के लोकतंत्र में हम

चमड़े का सिक्का चलाएँगें"

(चमड़े को गाने दो प्यार, पृ.126)

यह सत्य है कि औरतें भी भ्रष्टाचार को बढ़ावा दे रहीं हैं परंतु यह भी सत्य है कि औरतों में इन बुराइयों का जन्मदाता हमारा पुरुष समाज ही है | वह कहते हैं –

"फिर भी हम, ढूँढेगे रक्त–मांस मज्जा के

व्यवहारिक व्याकरण में देहरस |

खूटी अगर पूछती है तौलिया से,

तो पूछे शरीर के छिपे हुए हिस्से का भेद"

(चमड़े को गाने दो प्यार, पृ.126–127)

ग्रामीण महिलाओं के लिए तो यह समाज और ही कष्टदायक है | आज जो कुछ वो कर रही हैं जरूरी नहीं की शौक बस कर रही हों | अवश्य कोई न कोई रहस्य होता होगा ? ऐसा रहस्य जिसे न तो बताना चाहती है और न ही हमारा समाज उसे जानने की कोशिश करता है | धूमिल ग्रामीण औरतों के बारे में बेबाक राय रखते हैं –

"माना कि आपने उसे जब से चौका दिया है

बिना बच्चे के पांच वर्ष बीत जाने के बावजूद

उस औरत ने न कभी शिकायत की है और

न अपने चरित्र पर शक करने का मौका दिया है"

(मैमन सिंह, पृ. 52)

आमतौर पर जुल्म ज्यादती व शोषण की शिकार महिलाएँ ही होती है | वह शोषण शारीरिक और मानसिक दोनों प्रकार का हो सकता है | आखिर हमारा समाज वह रहस्य जानने की कोशिश क्यों नहीं करता ? क्यों बदचलन व बदनाम नाम का ख़िताब देकर मुँह मोड़ लेता है ? वह कह उठते हैं–

“क्यो रोटी है? बदनसीब औरत !

क्या तू नहीं जानती कि भाषा

बलात्कार से बालिग होती है ?

बुढ़िया के आँसू सूख गए | वह मुस्कुराई

और लड़की का हाथ पकड़कर

भीड़ में गुम हो गई |”

(स और त का खेल, पृ.85)

बदचलन कही जाने वाली औरतों को देखकर हम उनसे बात करना पसन्द नहीं करते, क्योंकि हम डरते है अपने उस कथित समाज से जो हमें इसकी इजाज़त नहीं देता | वह नहीं चाहता की हमदर्दी जताकर एक बदचलन स्त्री को सही रास्ते पर लाया जाय | घर के पर्दे में रहने वाली बहूँ बेटियाँ यदि ऐसी औरतो से हमदर्दी का साहस करती भी हैं यही हमारा समाज उन्हें भी दोषी ठहराने से नहीं चूकता, क्योंकि वह भी इस दानवी समाज से घायल है और वह स्नेह पाने के लिए कुछ भी करने को तैयार रहती है | धूमिल कहते है –

"रात की नंगी देह

जहाँ खबर होने से पहले ही, शहर

खत्म हो चूका है | उबासियों में ऊँघते

तुमहारे नितम्ब फून की तरह,

युवा नजरों के इशारों पर टंकित

करते हैं | हलो ! "हलो–हलो" करता हुआ

देह के अन्धेरे में नीली नस–नाड़ियों वाला,

उत्तेजित चमड़ा चिल्लाता है और मेरी

जाँघों, भाषा के खिलाफ–

शहर कानून का उल्लंघन करती हैं |"

(सत्यभामा पृष. 121)

ऐसी औरतों को सही रास्ते पर लाया जा सकता है बशर्ते उनकी परेशानियों व् मजबूरियों को समझकर सुलझाने का प्रयास किया जाये, जबकि समाज में व्याप्त गंदगी सोच से ऐसा संभव नही हो पाता, चाहकर भी हम कुछ नहीं कर सकते औरते भी अपने ऊपर ज़्यादती की जिम्मेदार है ? धूमिल कहते हैं–

"लड़की इस तरह मत रो

कहीं ऐसा न हो कि वापस लौटकर

न आए वह जंगली चिड़िया

जो हत्यारे चाकू पर अपना गीत

पैनाती है और गाती है अमन की

उस सच्चाई को जो जिन्दगियों के लिए

जीने का नुस्खा बन जाती है"

(जनतंत्रः एक हत्यारा सन्दर्भ, पृ.70–71)

आज भी भारत में तमाम ऐसी महिलाएँ हैं जो किसी भी जुल्म को चुपचाप सह लेती है पर आवाज नहीं उठाती | कर्तव्य पालन व् धर्म रक्षा (जो उन्हें संस्कार में दिया गया होता है) में जुल्म सहते–सहते वे एक दिन स्वयं को ही समाप्त कर डालती है | वह कह उठते हैं–

"रात भर जूझते हैं देह के अन्धेरे में

और सुबह हम अपनी खाइयाँ बदल लेते है"

x x x x x x x x

"ऐसे थे संयमी कि –

औरत एक बार जाँघ पर उतर गई

उनके लिए मर गई, चतुरी चमार की लटूरी पतोहू"

(पाँचवे पुरखे की कथा, पृ. 124)

आज ऐसी महिलाओं को उस चक्रव्यूह से बाहर निकलने हेतु यह बताने की आवश्यकता है कि तुम सिर्फ जुल्म सहने के लिए नहीं बनी हो बल्कि वह सब कुछ कर सकती हो, जो पुरुष करता है | तुम्हें भी अपने पैरों पर खड़ा होकर अपनी मर्जी से जीवन जीने का पूरा हक है– वह कहते हैं कि नई उम्र की विधवाओं की स्थिति और भी दयनीय होती हैं –

"एक ब्याहता अपना घूँघट सँभालती है

उसके माथे का रंग नीला पड़ गया है

एक क्वारी माँग उस चिड़िया–सी चहचहाती है

अभी–अभी जिसका घोसला उजड़ गया है |

यही शायद अर्थी का अर्थ है, और मैं सोचता हूँ"

(जनतंत्रः एक हत्यारा, सन्दर्भ, पृ. 74)

हर औरत को अपने बारे में स्वयं फैसला लेने का हक है | चुप रहकर सिर्फ सोचने से कुछ हासिल नही होगा ? उनको अपने अन्दर आगे बढ़ने की क्षमता पैदा करनी होगी? हमारा समाज औरतों को उनका हक देने में बहुत पीछे है, इसी वजह से उन्हें अनैतिक व्यवहारों का सामना करने के लिए विवश होना पड़ता है | धूमिल के शब्दों में –

" चूल्हे का कोयला और पतीली की दाल

बुदबुदाते हैं– रोटी का क्या हुआ ?

औरत आँचल ठीक करती है,

एक कनफटी कमीज खूटी पर झूलती है

दौड़–धूप के बाद बेतहाशा लोटे आदमी का मुँह धोती है

बाल्टी चौका बुलाता है, ओह ! आह !!

अच्छे बच्चे रोते नही"

(वापसी,पृ.98)

लैंगिक भिन्नता के चलते बालिकाओं के साथ परिवार के अलावा बाहर भी पक्षपात होता है | स्वास्थ्य और शिक्षा में भेदभाव बरतते हुए उसके हाथ से अवसर छीना जाता है जिससे औरतों के खिलाफ अपराधों की हवा चलती है| धूमिल कहते हैं–

"चार जनो से भरा पूरा कमरा इससें कुछ ज्यादा लगता है

–पिता एक्का हाँकता है

माँ कोठी में बरतन माँजती है

बेटी जवान है–

उसके जिम्मे संतरो के बिक्री का काम है

बेटा पढ़ता है तीसरी जमात में"

(कमरा, पृ.103)

सरकार औरतों के विकास हेतु जितना ध्यान दे रही है, हमारा समाज उतना ही कतरा रहा है | सरकार औरतों को अधिकार सम्पन्न बनाना चाहती है | क्योंकि निर्णय कोई भी औरत जीवन के सम्बन्धों में ठोस निर्णय तभी ले सकती है, जब आर्थिक रूप से वह सम्पन्न हो | परिणामतः आज यदि कुछ महिलाओं में बुराइयाँ फैली है तो अधिकांश के अंदर अच्छाइयाँ भी आयी हैं | धूमिल के शब्दों में–

"देह तो आत्मा तक जाने के लिए सुरंग है रास्ता है |

तुम्हारी उँगलियाँ जैसे कविता की गतिशील पंक्तियाँ हैं |

तुम्हारी आँखें कविता की गम्भीर किन्तु कोमल

कल्पना है, तुम्हारा चेहरा जैसे कविता की जमीन है

तुम एक सुन्दर और सार्थक कविता हो मेरे लिए |"

(पत्नी के लिए, पृ.120)

आज शिक्षा, रोजगार व नौकरी आदि अनेक क्षेत्रों में उनकी उपस्थिति दर्ज हो चुकी है | समाज सेवा में भी वह काफी आगे है | इसके बावजूद भी अफसोस पहलू यह है कि समाज द्वारा आज भी उनको उनके अधिकारों से वंचित रखने की साजिश जारी है | यहाँ महिलाओं को घर के रसोई के अलावा किसी और काबिल समझा ही नहीं जाता | धूमिल कहते हैं –

"आप चौके में प्याज काटती हुई

बेगम के रजिया आँसू देखेंगे

और चापलूसी में साबूत लौकी पर

चक्कू फटकारते हुए कहेंगे

ऐसे काटते हैं बहादुर नौजवान

दुश्मन का सिर,"

(मैमन सिंह, पृ. 51)

समाज शायद नही जनता कि 'जब पेड़ कटता है तो उससे जुड़े पत्ते फूल और फल जमीन पर गिरकर बिखर जाते हैं | ठीक इसी प्रकार औरत के भटकने से पूरा परिवार भी बिखर जाता है |' नीव के कमजोर होने से जिस प्रकार दीवार गिर जाती है, वैसे ही महिलाओं के अशिक्षित होने और चहार दीवारी में कैद रहने से सामाजिक ढाँचा भी चरमरा जाता है | वे कहते हैं कि आज भी महिलाओं को लोग एक वस्तु के रूप में ही देखते है –

"सरे भर कबाब हो

एक अद्धा शराब हो

नूरजहाँ का राज हो, खूब हो ?

भले ही खराब हो |"

(सुदामा पाँडे का प्रजातंत्र, पृ. 19)

आजादी के 67 सालों बाद आज हमारे देश ने अनेक क्षेत्रों में प्रगति की है, लेकिन एक ऐसा क्षेत्र है जिसमें प्रगति तो हुई, लेकिन आजादी के 67 साल बीतने के बाद जैसी प्रगति होनी चाहिए थी वैसी प्रगति नही हुई; वह क्षेत्र है– 'नारी की स्थिति' इसमें सुधार तो हुए लेकिन जैसे सुधार की अपेक्षा थी ? वैसा सुधार नहीं हुआ| धूमिल कहते हैं–

"आजादी के 11 वर्ष पहले

सिर्फ हमारे गुलाम चेहरे बने थे |

दादी अम्मा के किस्से से मिला था

कमर के निचे का फूलदान, लेकिन पूरा नही था |"

(पी. सुदामा और मूर्ति के लिए, पृ.118)

आज भी हमारे रूढ़िवादी समाज में महिलाओं को भिखारियों और दासियों के समान ही समझा जाता है, इतना ही नहीं आज भी लड़के और लड़कियों में भेदभाव किया जाता है ? यह भेदभाव इनके शिक्षा तथा खाने–पीने और पहनावे में भी किया जाता है | सुदामा पाण्डे धूमिल कहते हैं –

"एक नन्हीं लड़की गुदड़े से खेल रही है

दाई माँ | दाई माँ | क्या तुम्हें खबर है |"

(खून का हिसाब, पृ. 107)

आज भी हमारे समाज में लड़कियों को खुद की जिन्दगी जीने की आजादी नहीं है | इन्हें अपनी बात कहने तक का भी मोका नहीं दिया जाता | ये अपने मनपसन्द कपड़े को नहीं पहन सकती, अपने मन मुताबिक खा पी नही सकती, सब पर पाबन्दी होती है | ज्यादातर ग्रामीण क्षेत्रों की महिलाए अपने घर में ही एक कैदी के समान जीवन जीने पर विवश होती है | धूमिल कहते हैं–

"अपनी नाबालिग आँखों से, वह सिर्फ

इतना करेगी कि हम दोनों के बीच

काठ या अपना रख देगी | और पूछेगी

उसकी व्याखा | किताब को परे सरकती

हुई उसकी आँख निश्चल ! निष्पाप !!

मगर आँखे शहर नहीं है ऐ लड़की !

पानी में बसी हुई कच्चे इरादो की

एक भरी पूरी दुनिया है |"

(टयूशन पर जाने से पहले, पृ. 23)

विश्व विकास मंच की लैंगिक समानता के हालिया रिपोर्ट में महिलाओं तथा पुरषों की बराबरी के मामले में भारत 112 वें स्थान पर है | फिर भी लोगों की आँखे नही खुल रही हैं | फिर भी वह उसे (नारी) अलग नजर से ही देखते हैं –

"सुनो प्यारो! प्यारियो !!

स त का जमाना है

अ और त खेल दिखाना है,

ए – बजे ताली

(जो न बजाए उसके नाड़े को गाली)"

(स और त खेल, पृ.84)

रिपोर्ट में शिक्षा, स्वास्थ्य एवं आर्थिक भागीदारी तथा राजनीतिक ताकत इन चार आधार पर महिलाओं का आंकलन किया गया है, जिसमें स्वास्थ्य के मामले में 132 वाँ स्थान तथा आर्थिक भागीदारी में 128 वाँ और शिक्षा में 120 वाँ स्थान विश्व में भारत का है | यह देश में महिलाओं को दोयम दर्जे की नागरिकता को उजागर करता है | वह कहते हैं–

"अपनी अध्यापिका का किताबी चेहरा पहनकर

खड़ी हो जाएगी वह खूबसूरत शोख लड़की

मगर अपनी आँखे, वह छिपा नहीं पाएगी"

(टयूशन पर जाने से पहले, पृ.22)

दुखः यह है कि – इस देश में महिलाएं राष्ट्रपति और प्रधानमंत्री जैसे पदों पर आसीन रह चुकी है ? फिर भी हालत दयनीय है | धूमिल की ये पंक्तियाँ इन्हें सार्थक सिद्ध करती प्रतीत होती हैं–

"बच्चों को सुला दिया जाता है लोरियो से

झिड़कियों में पीपल का भूत पलको को मूंदता है

तारो भरे आसमान में सपनों के निचे माँ का ह्रदय कथरी–सा

बिछता है, मगर पिता जगता रहता है |"

(नींद के बाद, पृ.109)

धूमिल कहते हैं कि आज भी देश का बड़ा वर्ग मानता है कि स्त्री का शिक्षा से सरोकार नहीं होना चाहिए, क्योंकि स्त्री की सीमा चहारदीवारी ही है – वह अभावात्मक स्थिति में जीने को विवश है–

"रात में एक ही कमरे में सोते है चार जन

एक दुसरे से टाँगें बचाते हुए

उनके सिर हाथो के ऊपर एक–दुसरे को

पहचानते हैं | बेटी जानती है कि–

माँ को पेट रह गया है, बेटा जनता

है कि बहन की छाती पर 'पाका'

नही–'क्या' है | माँ– बाप समझते हैं, कि बच्चे

समझदार है, बहरहाल वे सब जानते हैं"

(कमरा, पृ.103–104)

वे लोग भूल जाते हैं कि लडकियाँ आज लड़कों से कन्धे से कन्धा मिला–मिलाकर हर क्षेत्र में चाहे वह सेना हो, अंतरिक्ष हो, खेल की दुनिया हो, राजनीति का क्षेत्र हो, साहित्य का क्षेत्र हो,

जैसे हर क्षेत्र में देश का नाम रोशन कर रही हैं | धूमिल के शब्दों में – महिलाओं ने अथक परिश्रम से साबित कर दिया कि समुचित अवसर मिलने पर नारी कोई भी काम किसी भी परिस्थिति में कर सकती है | पर पुरुष उसे वैसे करने नहीं देता | धूमिल के शब्दों में–

"यह खतरनाक भी उतना नहीं

जितना किसी लड़की का पीछा करना

देह के जलाशय में तैरना न जानते हुए भी

कूल्हों के कशर कूद, भरना |"

(कर्फ्यू में एक घन्टे की छूट, पृ.43)

नारियों की स्थिति के लिए महिलाओं को स्वयं संगठित होकर आगे आना होगा तथा इसके साथ ही इन्हें जागरूक एवं शिक्षित भी होना होगा | इनके साथ ही साथ पुरुष समाज को भी अपनी सोच तथा मानसिकता बदलनी होगी तथा नारियों को उनका बराबर का हक देना होगा तभी नारी की दशा में सुधार होगा और समाज की सही मायने में तरक्की मणि जायेगी |

"क्योंकि वह एक साथ चुन लेना चाहता है–

तितलियाँ, स्कार्फ, होंठ और फूलों के जादुई रंग"

(कर्फ्यू में एक घन्टे की छूट, पृ.44)

निष्कर्षतः अपने ऊपर हो रहे जुल्म ज्यादती रोकने के लिए हर महिला को घर की चारदीवारी से बाहर निकलकर जुल्म के खिलाफ आवाज़ उठानी होगी तभी इस क्षेत्र में कामयाबी मिल सकती है | सुदामा पाँडे का प्रजातंत्र की भूमिका में विद्यानिवास मिश्र भी लिखते हैं– "मैं इनकी भाषा का न पक्षधर हूँ न स्त्री के शरीर का, इस तरह भाषिक उपयोग करने को काव्योचित मानता हूँ, परन्तु जो कवि फरेब से, हर तरह के फरेब से एकदम उफना गया है | वह शहरी नारी–गरिमा के फरेब को भी दूर फेंक देता है, शायद उसका उत्साह विस्थापित है, पर उसका इमां अपनी जगह पर है और यही बात हमारे लिए अधिक महत्वपूर्ण होनी चाहिए|"

आधार ग्रंथ

1. सुदामा पाँडे का प्रजातंत्र, सुदामा पाँडे 'धूमिल', वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण 2014

2. स्त्री संघर्ष का इतिहास,राधा कुमार, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली | 2007

3. स्त्री के लिए जगह– राजकिशोर, लोक भारती प्रकाशन, इलहाबाद |2011

4. आदमी की निगाह में औरत, राजेन्द्र यादव, अक्षर प्रकाशन, दिल्ली 2010

5. कथा जगत की बागी मुस्लिम औरते राजेन्द्र यादव और मुशर्रफ आलम जौकी राजकमल प्रकाशन नई दिल्ली 2012

सम्पर्क सूत्र : 9452798624
e-mail:nirbhaysingh8787@gmail.com

चतुर्भुजदास कृत 'द्वादशयश' की प्रासंगिकता

डॉ.सुनीता शर्मा

सीनियर असिस्टेंट प्रोफेसर,

हिन्दी-विभाग,

गुरु नानक देव विश्वविद्यालय,

अमृतसर/

साहित्येतिहासों में नाम के चतुर्भुजदास दो कवि मिलते हैं एक राधा वल्लभीय चतुर्भुजदास और दूसरा वल्लभीय | दोनों के समय में लगभग 70 वर्षों का अन्तराल है | राधावल्भीय चतुर्भुजदास का जन्म संवत् 1527 में मध्य प्रदेश के गोडवाना प्रदेश जबलपुर के समीप गढ़ा नामक गाँव में हुआ था | इनके गुरु का नाम स्वामी हितहरिवंश था | चतुर्भुजदास जी एक साथ

संस्कृत और हिंदी के विद्वान थे | नाभादास द्वारा रचित भक्तमाल में चतुर्भुजदास जी को कीर्तननिष्ठ कहा गया है | जैसे कि इन पंक्तियों से स्पष्ट होता है कि –**"हरिबंश चरबल चतुर्भुज, गौड़ देश तीरथ कियौ | गयौ भक्ति प्रताप सबहिं दासत्व छढ़ायौ | राधाबल्लभ भजन अनन्यता वर्ग बढ़ायौ |"**[1] **'द्वाद्शयश' राधाबल्लभीय चतुर्भुजदास की उत्कृष्ट रचना है | इस ग्रंथ का रचनाकाल सं.1560 वि.मिलता है** |[2] रचना की भाषा बैसवाड़ी और बुन्देली प्रभावित ब्रजभाषा है| इस कृति पर संस्कृत भाषा का भी प्रभाव है | 'द्वादशयश' नाम की इस कृति का प्रकाशन श्रीहित हरिवंश सम्प्रदाय के स्वामी श्री रूपलाल ने विक्रम संवत 2066 (सन 2009) को किया | हिन्दी विश्वकोश में 'द्वादशनांपूर्णः' कहते हुए सूर्य, मास , राशि, संक्रांति, गुहबाहु, सारिकोष्ठ, गुहनेत्र और वाजमण्डल को द्वादश वाचक शब्द कहा गया है |[3] कवि ने 'द्वादशयश' नाम सतसठ पृष्ठों की इस रचना में व्यक्ति के पूर्ण विकास हेतु बारह यशों का वर्णन किया है | जिनका परिचय निम्नलिखित है–

1. **शिक्षा सकल समाज यश**ः नामक पहले यश में कवि समस्त समाज की कल्याण कामना करते हुए मनुष्यों को नाम स्मरण का संदेश दिया है | मनुष्यों को समरसता को अपनाने के लिए प्रेरित करते हुए देह–दुख को ही देह–सुख मान कर कृष्ण प्रेम का संदेश दिया है |

2. **श्रीधर्मविचार यश**: नामक दुसरे यश में प्रत्येक वर्णाश्रम के धर्म की चर्चा करते हुए ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ और सन्यासाश्रम के धर्म एवं कर्तव्यों की चर्चा की है |अंततः सद्कर्मों को मोक्ष का साधन बताया है |

3. तीसरा यश **'श्री भक्ति प्रताप यश'** के नाम से है | इसमें कवि ने भक्ति का महात्म्य वर्णित किया है | कवि ने भक्ति मार्ग का प्रवर्तक शुकदेव स्वामी को बताया है जिन्होंने निगम–आगमों का अध्ययन कर यह मार्ग निकाला है | नवधा भक्ति की चर्चा करते हुए यह बताने का प्रयास किया है कि केवल एक बार नाम स्मरण से ही मोक्ष पाया जा सकता है जहां तक कि न केवल प्रेमभाव अपितु शत्रुभाव से भी अगर भगवान का स्मरण किया जाए तो ईश्वर उन्हें भी परमपद देता है|इसी यश में अच्छे भक्त के लक्षणों की भी चर्चा की है |

4. **श्री संत प्रताप यश**:नामक चौथे यश में कवि ने भक्ति एवं उद्धार हेतु साधु संगति को महत्वपूर्ण बताया है | साधु संगति से भक्ति में दृढ़ता आती है और शंकाओं का समाधान होता है जहां तक कि कवि ने साधु–संगति को मोक्ष एवं स्वर्ग प्राप्ति से भी बढकर बताया है |

5. **श्री शिक्षासर यश**:नामक यश में कवि ने शिक्षा का महत्व बताते हुए गुरु–शिष्य के सम्बंधों का एवं उनके धर्मों की चर्चा की है |

6. **श्री हितोपदेश यश** : में कवि ने शिक्षा प्राप्ति बाद परहित का उपदेश दिया है|चौरासी लाख जन्म लेने के पश्चात् ही मनुष्य शरीर की प्राप्ति होती है और इस शरीर से ऐसे कर्म करने

चाहिए कि आगे जन्म–मरण से छुटकारा पाया जा सके और इस सब का आधार सद्कर्म,भक्ति एवं परसेवा ही है |

7. **श्री पतित पावन यश:**में कवि ने पतितों के उद्धार हेतु पतित पावन भगवान कृष्ण का स्मरण करने की प्रेरणा दी है |कवि का कहना है कि भगवान की शरण में जो चला जाता है ईश्वर बिना जाती–पाति की तरफ ध्यान दिए उसे शरणागति प्रदान करते हैं | इसके लिए कवि ने कई निम्न जाति के भक्तों–विदुर, कबीर, रैदास आदि के उदाहरण दिए हैं |

8. **श्री मोहिनी यश**: में कवि ने ईश्वर को मोहिनी शक्ति का वर्णन किया है जिसने सारे जगत को माया में उलझा रखा है | ईश्वर की यह मोहिनी शक्ति ही मानव को ईश्वर तक पहुँचाती है |

9. **श्री अनन्य भजन यश** :नामकरण के अनुकूल इस यश में कवि ने श्री कृष्ण के प्रति अनन्यता के भाव का संदेश दिया है | कवि का कहना है कि चाहे कोई तीर्थयात्रा करले, गऊदान दे, कल्पों तक व्रत करे, कंचनदास करे पर आराध्य के प्रति अनन्यता का भाव नहीं है तो सब व्यर्थ है |

10. **श्री राधासुप्रताप यश** : में कवि ने सम्प्रदाय के सिद्धान्तानुसार राधा का महात्म्य वर्णित किया है क्योंकि राधा ही कृष्ण की अराध्य शक्ति है | कवि का कहना है कि राधा वृंदावन धाम के जंगलों में निवास करती है और जहां राधा है वहां माया नहीं है इसलिए जिसने पुराण नहीं सुने, आगम–निगमों का मर्म नहीं जाना पर राधा के यश का गान सुना उसका कल्याण संभव है पर जिसमें आगम–निगम पुराणों का कंठस्थ कर लिया हो कई

हज़ार वर्षों तक तप भी कर लिया हो पर राधा के चरणों की धूल प्राप्त नहीं हुई | उसका मोक्ष संभव नहीं है क्योंकि कृष्ण भी राधा की इच्छानुकूल ही वर देते हैं | कवि ने यह भी बताया है कि पहले राधा 'चन्द्रनामा' के नाम से जनि जाती थी |

11. **श्री मंगलासार यश**: में कवि ने कहा कि यदि मनुष्य अभय होना चाहता है तो वेद विधि अनुसार भक्ति करके ऋषियों के उपदेशानुसार सदमार्ग का अनुसरण करके महर्षि व्यासानुसार अठारह पुराणों में दिए गये भजन के महत्व को जानते हुए शुकदेव द्वारा बताए गये भक्तिमार्ग पर चलकर ही राधा के प्रति असक्ति और नवधा भक्ति के द्वारा ही हरि प्राप्ति से मंगल संभव है |

12. **श्री विमुख मुखभंजन यश** : में कवि ने ईश्वर विमुख प्राणी को भक्ति के द्वारा ईश्वर मुख होने का मार्ग बताया है |चतुर्भुज द्वारा रचित यह द्वादशयश कृति की रचना चाहे सोलहवीं शताब्दी में हुई पर आज भी उतनी ही प्रासंगिक है |आधुनिक मानव का पथ प्रशस्त करने में इसके महत्व को नकारा नहीं जा सकता |इसकी प्रासंगिकता पर निम्नलिखित पक्षों के अंतर्गत विचार किया जा रहा है –

सामाजिक पक्ष –"समाज के साथ 'इक' प्रत्यय लगाने से सामाजिक शब्द बनता है | समाज से अभिप्राय सामुदायिक जीवन की ऐसी अनवरत एवं नियामक व्यवस्था से है जिसका निर्माण व्यक्ति पारस्परिक हित तथा सुरक्षा के निमित जाने–अनजाने कर लेते है |[4] तथा सामाजिकता से अभिप्राय समाज संबंधी |समाज के हित को ध्यान में रखते हुए जब कवि

रचनाकार कृति के माध्यम से पाठक को सामाजिक संदर्भों, सामाजिक विकास एवं सामाजिक दायित्वों का ज्ञान देता है जिनका प्रभाव सार्वभौमिक और सर्वकालिक रहता है | चतुर्भुजदास कृत 'द्वादशयश' में कवि ने सर्वप्रथम एक ऐसे स्वस्थ समाज की परिकल्पना की है जिसमें रहने वाले लोग हर प्रकार से श्रम को महत्व देने वाले तथा ईमानदार, सत्यनिष्ठ एवं परोपकारी हो | इसलिए कवि ने कहा है–

"काम क्रोध तृष्णा तजि जानी |अरु षट विषन नरक के दानी |"

(द्वादशयश,चतुर्भुजदास,पृ.26)

समाज में रहते हुए कभी भी समाज को मिटाने का प्रयास कदापि न करें और जो भी व्यक्ति के पास जो हो उसे भी दूसरों को बाँट कर ही लेना चाहिए | जैसे कि इन पंक्तियों से स्पष्ट है –

"आगि गाँव वन में न लगावै | भोजन जल न अनर्पित पावै|"

(द्वादशयश,चतुर्भुजदास,पृ.26)

'शिक्षा सफल समाज यश' नामक अध्याय में कवि ने जाति–पाति से उन्मुक्त समाज की परिकल्पना की है तथा विभिन्न वर्णाश्रमों के आधार पर शिक्षित करने का उपदेश दिया है | जैसे कि ब्राह्मण वर्ण के विषय में कवि कहा है –

"प्रथम वर्ण द्विज को कहिये, बारह वर्ष भयौ ब्रह्मचरिनू |
पढ़े वेद व्रत दृढ़ धारियै, पै सकल ग्रन्थ मन जीवै जू ||

पुनि घर वसि सन्तति कीनी, सब घर कौ धर्मे प्रतिपारयौ जू |"

(दा. च., पृ.7)

कवि का कहना है कि वह देश , समाज उत्तम बन जाता है जहां रहने वाले ब्राह्मण श्रेष्ठ है | इसी प्रकार कवि ने क्षत्रियों के कर्म की सराहना करते हुए कहा है–

"क्षत्री–धर्म शूर रन–शूरो सनमुख रण तन परौ जू ||"

(दा. च., पृ.9)

इसी प्रकार कवि ने ऐसे समाज की परिकल्पना भी की है जिसमें रहने वाले मानव अच्छे गुणों के साथ–साथ समशीतोष्ण स्वभाव के हों, सहनशीलता उनमें कूट–कूट कर भरी हो **"मान-अपमान न मन में आने | निंदा अस्तुति सम करि जाने | पर त्रिय और भक्त को सहोदर | गिरिसम सहनशील, सव तजि डर |"**

आत्मविश्वासपूर्ण उन सामाजिकों के विषय में कवि कहता है–

"कर्म करैताकौ फल पावौ |"

(दा. च., पृ.11)

कवि ने सामाजिकों को यह कर्म के अनुसार फल प्राप्ति का संदेश दिया है | इसके आगे मानव को सचेत करते हुए कवि ने लिखा है–

"सावधान हरिसदन सिधारै | करै नहीं अपराध विचारै |"

(दा. च., पृ.26)

कवि ने समाज में स्त्री को भी महत्वपूर्ण स्थान दिया है इसलिए कवि का कहना है कि दूसरों की स्त्री को माता जानकर उसका सम्मान करना चाहिए|

"परत्रिय तौ माता करि जाने | लोह समान कनक उनमानै |"

(दा. च., पृ.26)

कवि ने समाज कल्याण के लिए नारी के महत्वपूर्ण योगदान की सराहना भी की है | कवि ने प्राचीन उदाहरणों के माध्यम से मां की संतान, विधवा की संतान एवं पति के रहते दुसरे व्यक्ति की संतान को जन्म देने वाली जननी की चर्चा करते हुए कहा है कि इन सब माताओं की संतानों ने समाज के विकास के लिए कैसे योगदान दिया है | इस उदाहरण से स्पष्ट है–

" क्वारी कन्यहि जो सुत होई | कानी–तस्त कहावै सोई ||
तौ गोई जनमसो व्यास कौजू |
कन्त मरत पाछे सुत जनें | गोलक नाम सवै मिलि भने ||
तौ जनै अन्ध अरु पाण्डु हें जू
कन्तहि छित जनें और हि सों जु | कुंडज नाम कहावै ज्यों जु ||
तौ यो जु पाण्डु–सुत जनिवै जू |"

(दा. च., पृ.38)

धार्मिक पक्ष– धर्म को संस्कृति का प्राण कहा गया है | 'धृ' धातु से बने धर्म का अर्थ है धारण करना, आलम्बन देना, पालन करना आदि | धर्म को परिभाषित करते हुए नरेन्द्र मोहन लिखते हैं– **"धारयते इति धर्मः अर्थात जिसका धारण हो विकास हो, रक्षा हो वही धर्म है | इसके अतिरिक्त जिससे व्यक्ति का लौकिक कल्याण हो, अभ्युदय हो और आध्यात्मिक चेतना जाग्रत हो वह भी धर्म है |"** मध्यकालीन समाज में धर्म की लहर में आहूति डालने वाले श्री चुतर्भुज दास के धार्मिक चिंतन का मूलाधार उनके सम्प्रदाय का दर्शन एवं उनका स्वानुभूति है | उनकी दृष्टि में धर्म मानवीय कर्तव्य और जीवन मूल्य का पर्याय है |धर्म को परिभाषित करते हुए कवि ने लिखा है–

"धरम सोई जो भरम गभावै || साधन सों, हरि सो गति रति लावै |''

(दा. च., पृ.5)

राधा सम्प्रदाय से दीक्षित होने के कारण कवि ने सम्प्रदाय सिद्धांतों को धर्म के सिद्धांत रूप में प्रस्तुत किया है और राधाकृष्ण युगल जोड़ी के प्रति आस्था व्यक्त की है यथा–

"श्री हरिवंश सुमिरजस गाऊँ | राधाकृष्ण चरण रति पाऊँ |"

(दा. च., पृ.30)

राधा को इस सम्प्रदाय में अधिष्ठात्री देवी के रूप में चित्रित किया है | इसलिए कवि ने राधा की महिमा में 'श्री राधा सु प्रताप यश' की रचना की है और राधा को कृष्ण का अभिन्न अंग माना है कि इन पंक्तियों में स्पष्ट है–

"श्री वृन्दावनराधा निजु | निशि दिन श्याम न छाँडत पास |
ज्यौं फनि मनि त्यागै नहीं ||
जैसे जल जल के जु तरंग || रवि अरु धाम, छाँह–दुम संग
यौं राधा हरि जानिवै |"

(दा. च., पृ.56)

इसलिए राधा नाम स्मरण का महत्वांकन करते हुए कवि ने कहा है–

"जो सुमिरै राधा वर नाम |सब मुखसिंधु अभै निजधाम |"

(दा. च., पृ.45)

कवि ने भगवान के निराकार और साकार दोनों रूपों के प्रति आस्था दिखाई है | साकार के अंतर्गत वे कृष्ण एवं राधा के प्रति आस्था चित्रित करते हैं तो निराकार के अंतर्गत वो इस चराचर जगत के प्रत्येक अवयव को कृष्ण के अस्तित्व से ही चलायमान मानते हैं | कवि का विश्वास है कि जिस प्रकार कृष्ण ने बड़े–बड़े पापियों को क्षण में तार दिया उसी प्रकार कृष्ण अपने भक्तों को भी संकट एवं पाप कर्मों से मुक्ति देंगे | जैसे कि इस उदाहरण से स्पष्ट है–

"नाम अनन्त परमपद लहिये | 'कृष्ण' नाम सर्वोपरि कहिए |

आरज–पथ तजि,भजै कन्हाई | होहि भक्ति नित मोह रहाई ||"

(दा. च., पृ.59)

भक्ति का वर्णन करते हुए स्वामी चतुर्भुजदास का मानना है कि भक्ति मार्ग शुकदेव द्वारा बनाया गया है शुकदेव आचार्य ने आगम–निगम के आधार पर भक्ति का स्वरूप निर्मित किया जो संसार में इस प्रकार हिल–मिल गया है कि हंस के समान प्रवृति वाले संत व्यक्तित्व ही भक्ति करके मोक्ष प्राप्त कर सकते हैं–

"मिश्रित आगम निगम पुरान |

चुनि काढ़ी शुक परम भक्ति प्रतापहि गाइहों |

जैसे छीर नीर मिलि रहे | हंस निवैरे और न लहै |

यों जु भक्ति भक्तिनि लही |"

(दा. च., पृ.11)

भक्ति के अंतर्गत कवि ने नवधा भक्ति पर बल दिया है जैसे कि निम्न पंक्तियों से स्पष्ट है–

"सावधान इहि विधि चलै तैसे | नवधा भक्ति करै पुनि ऐसे ||

श्रवण कथन सुमिरण मन दीजै ||अरु संतत सत्संगति कीजै ||"

(दा. च., पृ.27)

तथा एक अन्य स्थान पर कवि लिखता है–

"रस गुनमय मूर्ति जु सवारि | करत भक्ति नवधा जु विचारी ||"

(दा. च., पृ.52)

नवधा के साथ–साथ प्रेमा भक्ति को भी कवि ने महत्व दिया है और कृष्ण के प्रति सखियों की भक्ति को प्रेमाभक्ति का मूल कहा है जैसे –

"भक्ति जहां कथि कही सही नवधा जु बताई

प्रेम लक्ष्छना प्रगटि निवहि ब्रज बुधवनि गाई |"

(दा. च., पृ.58)

भक्ति के संदर्भ में कवि ने मंदिर संस्कृति का भी वर्णन किया है और भक्त को मंदिर की मर्यादा के प्रति सचेत करते हुए कहा है–

"सावधान हरि सदन सिधारै | करै नहीं अपराध विचारै |

पनही पहर न सनमुख जाई |जल फल आदि न सन्मुख खाई |

अशुचि उचिष्ट न मंदिर पैसे | आसन बांधि न सन्मुख बैसे |

अरु सन्मुख नहि पांव पसारै | अनुग्रह करै न कहू मारै ||"

(दा. च., पृ.27)

धार्मिक प्रासंगिकता हेतु कवि ने गुरु को काव्य में सर्वोपरि स्थान दिया है, क्योंकि सच्चा गुरु ही साधक को ईश्वर तक पहुँचा सकता है और शिष्य को सत्य का अनुभव जिस पराविद्या से होगा, वह विद्या केवल गुरु ही दे सकता है | गुरु ही मन में उपजी

द्वैतभावना को समाप्त कर व्यक्ति को ईश्वर के साथ मिलाता है | कवि ने गुरु को एक ऐसे महान व्यक्ति के रूप में चित्रित किया है जो मनुष्य को माया मोह और विषयों से दूर रखता है जैसे –

"गुरु सोई, हरि साधु सिवावै | साधु सोई जो विषै छुड़ावै |"

(दा. च., पृ.5)

कवि का यह मानना है कि बयालीस लाख जल में और बयालिस लाख थल में जन्म लेने के पश्चात ही धर्म–कर्म के कारण मनुष्य शरीर प्राप्त होता है जैसे कि इस उदाहरण से स्पष्ट है –

"बहुत बार तन गौ जब पायौ | पुनि ओसरो मनुज–करि आयौ |"

(दा. च., पृ.30)

फिर इस शरीर को धारण कर सुकर्म करने चाहिए | भक्तों का चरित्र श्रवण करने से भी सद्कर्मों की प्रेरणा मिलती है और भक्ति की तरफ चित लगता है|राजा बलि, भक्त सुदामा, माण्ड़व्य ऋषि, अजामिल, राजा नृग, प्रहलाद, जड़ भरत, व्याध, गीध, गणिका आदि के चरित्र विशेष स्थान रखते हैं जैसे–

"जो यह जस निकें कै सुनै | अर्थ विचार करै मन गुनै |
ताहि भक्ति उपजै धनी | भक्ति प्रतापहि गाईहौ ||"

(दा. च., पृ.17)

"भक्ति, आभूषण भक्ति है" (दा. च., पृ.22) में कवि ने इस बात पर भी बल दिया है कि भक्ति में बड़ी शक्ति है भक्ति बड़े-बड़े पापियों को भी मोक्ष प्रदान करती है | उक्त रचना में कवि ने भक्ति को चार प्रकार की मुक्तियों-सालोक्य, समीप्य, सारुप्य एवं सायुज्य को वरदान स्वरूप देना चाहता है तो सद भक्त का ह्रदय पुकार कर उठता है और भक्त का विश्वास है कि मोक्ष के बाद तो कृष्ण का सामीप्य नहीं रहेगा अतः भक्ति मुक्ति से मधुर है जैसे-

"चार मुक्ति मोहन वर देत | भक्त! भक्ति तजि ताहि न लेत |

कहत कृष्ण यह बात क्यौं ?

मीठी भक्ति मुक्ति ते आहि | सो इस अति जन जाचत चाहि ||"

(दा. च., पृ.51)

ईश्वर के प्रति अनन्यता दिखाते हुए कवि ने इस बात पर बल दिया है कि कृष्ण ही सबसे रक्षक हैं इसलिए सब कुछ छोड़कर केवल उन्हीं की शरण में रहना चाहिए क्योंकि कृष्ण की शरणागति ही मनुष्य को शांति प्रदान करती है जैसे कि इन पंक्तियों से स्पष्ट है-

"वेन आँन नहि चवै, नैन पुनि आन न दरसै |

श्रवण आँन नहि सुनै, चित चिन्तै नहिं आनें ||

मन वच हरि, हरि कर्म और हरि कर्म कछु न जाने ||"

(दा. च., पृ.62)

यही नहीं भक्ति के अंतर्गत कवि मिलन सुख को भी सर्वोपरि कहा है | जिस प्रकार बूंद समुद्र में मिलकर उसकी विराटता में मिल जाती है उसी प्रकार मानव ईश्वर में लीन होकर अपने अपने अस्तित्व को समाप्त कर उसी परमसत्ता में लीन हो जाता है उसके सारे दुख–दर्द दूर हो जाते हैं | इसलिए नाम स्मरण पर बल देते हुए कवि ने कहा है–

"नाम अनन्त परमपद लहिये | 'कृष्ण' नाम सर्वोपरि कहिये |"

(दा. च., पृ.45)

कृष्ण प्राप्ति के मार्ग को सरल बताते हुए कवि ने कर्मकांडों को तिलांजलि दी है | ईश्वर प्राप्ति हेतु तीर्थाटन, दान, व्रत, योग, यज्ञ, जताएं बढ़ाना आदि सब को त्याग कर सदसंगति पर बल दिया है | कवि के मतानुसार–

"व्रत अरु यज्ञ छद तप दान |तीरथ योग नेम जम प्रान|
इन सबहिन के वश नहीं |
सतसंगति वस रहौं सही | जिन सब संग त्याग कै गही |
सतसंगति पेऊ तरे ||"

(दा. च., पृ.22)

केवल भक्ति ही भगवान से मिलाने वाली है पर भक्ति में जब भक्त के ह्रदय में अहं भाव आ जाता है तो भक्ति वहां से पलायन क्र जाती है | जैसे कि इन पंक्तियों से स्पष्ट है–

"भक्ति तहां भागवत जहां, भागवत भक्ति वहां |
कर्म धर्म परधान, तहां हरि भक्ति रहै कहां ||"

(दा. च., पृ.59)

कवि चतुर्भुजदास से मानव को धर्मशास्त्रों वेदों आदि का अनुकरण करने के लिए कहा है क्योंकि धर्मग्रंथ भी भटके हुए मानव को सही मार्ग पर लाकर उसका पथ प्रकाशित करते हैं | इन शास्त्रों में मानव चित की सभी दशाओं का वर्णन मिलता है जैसे–

"पढ़ै वेद व्रत दृढ़ धारि के, पै सकल ग्रंथ मत जो वैजू |
पुनि घर वसि सन्तति कीनी, सव धरकौ धर्म प्रतिपारयौ जू |"

(दा. च., पृ.7)

इसी प्रसंग में जहां नाम–स्मरण के माध्यम से राधाकृष्ण के साथ नेह के संबंध की चर्चा की है तो भगवान वहां स्वयं निवास करते हुए कहते हैं कि मैं स्वयं भक्तों में निवास करता हूँ –

"मेरे भक्त जहां हैं रहत | तहाँ सकल हरि तीरथ कहत |
सुख आनन्द सदा तहाँ |
भक्त वदन ब्रह्मा कौ वास | शिर हों, शंकर नाभि निवास |
पग किन्नर गन्धर्व सब |"

(दा. च., पृ.21)

किसी एक ही व्यक्ति से संबंध रखने वाला वैयक्तिक कहलाता है |[5]

वैयक्तिक पक्ष- व्यक्ति अर्थात् इनडिविज्युअल को अपने विशिष्ट व्यक्तित्व के कारण अन्य प्राणियों से अलग किया जा सकता है | एक सामाजिक प्राणी होने के नाते व्यक्ति का एक व्यक्तिगत जीवन भी होता है जिसमें व्यक्ति विशेष का कार्य कलाप, उसकी विचारधारा, उसके सिद्धांत , उसके मूल्य एवं उसकी ईश्वर के प्रति आस्था आदि सब आते हैं | कवि ने मानव युक्त इस ब्राह्मण्ड का स्वामी ईश्वर को बताते हुए कहा है–

"ज्यौंसकलवर्ण प्रतिबिम्ब फटिकमाहि |
ऐसे सदृश होत हरि ता कहि |"

(दा. च., पृ.6)

कवि का मानना है कि मनुष्य जन्म प्रप्ति करके मानव को भगवान की शरणागति प्राप्त करनी चाहिए इससे अशुभ का नाश होता है यथा –

"कृष्ण भक्ति मनमहि आवै तब अशुभ–रासि उठि भागै जू |
ज्यों जान अजान छियें पावक जरै, हरै पाप हारे गावै जू ||

(दा. च., पृ.10)

मनुष्य मात्र में सद्गुणों के संचार के लिए कवि ने गुरु को पथ–प्रदर्शक के रूप में बताया है क्योंकि गुरु ही शिष्य को उदात्त स्तर तक पहुँचा सकता है | कवि का मानना है–

"प्रथम शिष्य गुरु सरन सिधारै | गुन अरु शील स्वभाव निहारै |
वरनाश्रम सों ज्यारौ होई | इन्द्रीजित गुरु कीजै सोई ||"

(दा. च., पृ.24)

गुरु द्वारा दी गई दीक्षा को ही शिष्य जीवनाधार मानकर चले क्योंकि गुरु ही व्यक्ति को ऊँच-नीच एवं अच्छे-बुरे की पहचान बताता है जैसे कि इन पंक्तियों से पता चलता है-

"मंत्र तन्त्र के भेदहि पावै | वेद दुमनि को सार बतावै |
ता-पँह मंत्र जु दीक्षा लीजै | शिक्षा देई सु निश्चय कीजै ||"

(दा. च., पृ.25)

"साधु संग सर्वोपरि आहि" (पृ.17) में सदसंगति मनुष्य में गुणों के विकास में महत्वपूर्ण योगदान देती है | कवि ने साधु व्यक्तियों का संग करने के लिए प्रेरित भी किया है क्योंकि हरि भी स्वयं इस बात पर बल देते हैं और सदसंगति व्यक्ति को दुर्गणों से बचाती भी है यथा-

"संतत अति सतसंगति करै | पर धन पर दारा परिहरै |
भक्तनि की निन्दा नहि करै | निन्दक संग दूरि परिहरै ||"

(दा. च., पृ.16)

जैसे भक्तवर तुलसीदास कहते हैं-" बिनु सतसंग ज्ञान नहीं होई रामकृपा बिनु सुलभ न सोई ||" उसी प्रकार कवि का विचार है कि जैसे अग्नि में जलाये बिना सोना शुद्ध नहीं होता उसी प्रकार सदसंगति के बिना सद्गुणों का संचार नहीं होता-

"ज्यों सोनो सो-बार पखारै | होइ न शरू अगिनि बिनु डारै |

अस संतत सतसंगति कीजै || साधुन को चरनोदत लीजै |"

(दा. च., पृ.29)

लोक और समाज के कल्याण के लिए उचित ठहराया हुआ आचार व्यवहार नीति के अंतर्गत आता है | नैतिकता को अपनाकर ही व्यक्ति सव का और समाज का कल्याण कर सकता है | इसके लिए कवि ने सर्वप्रथम सदाचरण पर बल दिया है क्योंकि इसी के बल पर ही मनुष्य ईश्वर को प्राप्त कर सकता है | इसी संदर्भ में कवि ने मानव के ग्रहणीय आचरण एवं निंदनीय आचरण दोनों रूपों पर व्यापकता से विचार किया है | कवि का मानना है कि मनुष्य की सेवा, सत्य, संतोष, संयम, द्या, परोपकार, उदारता, सहनशीलता, समदर्शिता, आदि गुणों को अपनाना चाहिए–

"तप व्रतादि कृत कर्म धर्म करि हि समर्पत |"

(दा. च., पृ.63)

समर्पण भाव लिए हुए काम, क्रोध, लोभ, मोह, को आदि के परित्याग पर बल दिया है यथा–

"काम, क्रोध, तृष्णा तजि जानी | अरु पर विषन नरक के दानी ||"

(दा. च., पृ.26)

इसके साथ ही जुआ खेलना, शराब पीना, चोरी करना, माँस खाना, आदि दुर्गणों से दूर रहने की सलाह भी दी है जैसे कि निम्नपद्यांश से स्पष्ट है–

"क्रोध आत्म–धात न कीज | जुआ खेलत, दृष्टि न कीजै ||

मद अरु मांस दोष निज तजियै | और देव मनसाहू न जजियै ||
तृनहि आदि चोरी नहीं करिये | आपु समान जीवन सब धरियै
||"

(दा. च., पृ.26)

इन दुर्गुणों से बचने के लिए मनुष्य को शास्त्रों के अध्ययन की प्रेरणा दी है शास्त्रों के अध्ययन से मनुष्य में जो गुण पैदा होते हैं वे सदा आचरण योग्य है–

"जो मति उपजत सुनत पुरानहि |सो मति सदा हदैं में आनहि |"

(दा. च., पृ.27)

कवि ने इस मनुष्य शरीर को दूसरों की भलाई में समर्पित करने की भी प्रेरणा दी है | 'विमुख मुख भंजन यश' में कवि ने मानव के कल्याण और अकल्याणकारी कृत्यों का वर्णन किया है इसमें कवि ने मन को नियंत्रित करने के लिए भक्ति को अनिवार्य बताया है और कहा है जैसे–जैसे प्रेमाभक्ति का विकास होगा वैसे ही इस देह के दुर्गुण मिटते जाएंगे यथा–

"चतुर्भुज मुरलीधर भक्ति हित तनक सशल्य नष्टहि करै |
ज्यौ सुर सरी–जल–कुम्भ में सुरा बूंद रचक परै ||"

(दा. च., पृ.59)

इस प्रकार कवि मावन को एक ऐसे मन और शरीर वाला जीव कहा है जो बुराईयों को त्याग कर सद्कर्मों और नाम–स्मरण तथा प्रेमभक्ति के द्वारा जीवन सार्थक कर सकता है |

इस प्रकार कवि चुतर्भुज दास ने द्वादश्यश की रचना के माध्यम से आज के मानव को सुखद जीवन जीते हुए स्व के

विकास के साथ–साथ समष्टि के कल्याण की कामना की है | निरन्तर कर्म के लिए प्रेरित करते हुए मानव को कर्मशील होने के साथ नैतिक दृष्टि से भी महान बनने की प्रेरणा दी है | कोई भी रचनाकार एवं रचना भी प्रासंगिक होती है यदि वो सर्वकालिक अपना प्रभाव बनाए हुए है और इस दृष्टि से 'द्वादश्यश' जब– जब भी मानव के समुख कठिनाइयाँ आएंगी उसे सद्कर्म की ओर ले जाने का मार्ग दिखाएगा| राधावल्लभ सम्प्रदाय के अनन्य भक्त होने के नाते कवि की इस सम्प्रदाय के प्रति आस्था होना स्वाभाविक है पर राधाकृष्ण का चित्रांकन, भक्तों पर मुरलीधर की कृपादृष्टि, मानव मन की दुविधाओं एवं भरन्तियों का निराकरण आदि के लिए यह रचना मनुष्यों का पथ प्रशस्त करती है |

<u>संदर्भ :</u>

1. नाभादास, श्रीभक्तमाल, पृ.739
2. मिश्रबन्धु, मिश्रबंधु विनोद, पृ. 246
3. हिन्दी विश्वकोश, श्री नगेन्द्रनाथ वसु, पृ.423
4. नग्रन्द्र, साहित्य का समाजशास्त्र, पृ.6
5. मानक हिन्दी कोश (खंड पांच) संपा. रामचन्द्र वर्मा, पृ. 124

प्रेमचंद की कहानी 'सदगति' में सामाजिक यथार्थ

डॉ.वीरेंद्र सिंह बर्त्वाल

(असिस्टेंट प्रोफेसर हिन्दी,

राष्ट्रीय संस्कृति संस्थान,

श्री रघुनाथ कीर्ति परिसर,देवप्रयाग,

पौड़ी गढ़वाल, उत्तराखंड)

कहानी हिन्दी गद्य साहित्य की महत्त्वपूर्ण विधा है | इसमें जीवन के एक भाव अथवा अंग को केंद्र में रखकर रोचक शब्दों का ताना–बना बुना जाता है | कहानी में मनोरंजन, प्रेरणा और

संदेश होता है | कहानी जीवन के यथार्थ पर आधारित होती है | इसमें कल्पना और रोचकता होती है | कल्पना ऐसी, जो सत्य प्रतीत होती है |

कथानक, चरित्र–चित्रण, देशकाल वातावरण, कथोपकथन, भाषा शैली एवं उद्धेश्य जैसे तत्वों से निर्मित कहानी में कोतूहल, मनोरंजन, शिल्पगत उद्दात्तता, सुसंबद्धता, संक्षिप्तता, आकर्षक भाषा–शैली, नाटकीयता,प्रभावपूर्ण वर्णन, कल्पनाशीलता इत्यादि गुणों का होना उसे सफलता के शिखर पर ले जाते हैं |

कहानी मौखिक या लिखित,कल्पित या वास्तविक तथा गद्य या पद्य में लिखी हुई भाव प्रधान या विषय प्रधान घटना है, जिसका मुख्य उद्धेश्य पाठकों का मनोरंजन करना, उन्हें शिक्षा देना या किसी वस्तुस्थिति से परिचित कराना है |[1]

हमारे देश में प्राचीन काल से ही कथा साहित्य की समृद्ध परम्परा रही है | यह परम्परा उपनिषदों की रूपक कथाओं, महाभारत के उपाख्यानों, बौद्ध साहित्य की जातक कथाओं और इनके बाद वृहत कथा मंजरी, कादम्बरी, दशकुमारचरित, पंचतंत्र आदि ग्रंथों में संचित कथा–साहित्य में देखी जा सकती है | लेकिन आज हम जिस साहित्यिक विधा को कहानी के नाम से जानते हैं, वह वास्तव में आधुनिक युग की देन है |[2]

हिंदी कहानी की आयु लगभग 120 वर्ष है | हिंदी गद्य साहित्य में इसका आविभार्व 20वीं शताब्दी के आरंभ में माना

जाता है कि यह विधा आधुनिक हिंदी साहित्य में पाश्चात्य साहित्य से आयी है | कुछ लोग बंग महिला की 'दुलाईवाली' को तथा कुछ विद्वान माधवराय सप्रे की 'एक टोकरी भर मिटटी' को हिन्दी की प्रथम मौलिक आधुनिक कहानी स्वीकारते हैं |

हिंदी में आधुनिक कहानी–लेखन का आरंभ बीसवीं शताब्दी के पहले दशक से माना जाता है | यद्यपि आरंभिक समय में कहानियों के अनुवाद ही किए गए लेकिन धीरे–धीरे मौलिक कहानियां लिखी जाने लगीं | किशोरीलाल गोस्वामी की ' गुलबहार', मास्टर भगवानदास की 'प्लेग की चुड़ैल', रामचंद्र शुक्ल की 'ग्यारह वर्ष का समय', गिरिजा दत्त वाजपेयी की 'पंडित और पंडितानी इत्यादि आधुनिक कहानी के निकट हैं, किंतु इसमें से कुछ विदेशी शैली की हैं, कुछ जीवन, स्केच, इतिहास, तथा निबंध के निकट हैं | कहानी शिल्प का वास्तविक सौंदर्य इनमें नहीं है | बंग महिला की 'दुलाईवाली' सरस्वती में 1907 में प्रकाशित हुई, जो हिंदी की प्रथम मौलिक आधुनिक कहानी है और दूसरी 'इंदु' में 1911 प्रकाशित जयशंकर प्रसाद की कहानी 'ग्राम' है |[3]

आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने इंदुमती को ही हिंदी की प्रथम मौलिक कहानी माना है जिसका प्रकाशन सन 1900 ई. में 'सरस्वती' पत्रिका में हुआ था,किंतु शिवदान सिंह चौहान के अनुसार यह कहानी शेक्सपीयर के 'टम्पेस्ट' का अनुवाद है, अतः यह मौलिक रचना नहीं कही जा सकती | सरस्वती पत्रिका में ही

सन 1903 में आचार्य रामचंद्र शुक्ल की कहानी 'ग्यारह वर्ष का समय' प्रकाशित हुई तथा सन 1901 में 'एक टोकरी भर मिटटी' कहानी का प्रकाशन 'छत्तीसगढ़ मित्र' नामक पत्रिका में हुआ, जिसके लेखक माधवराय सप्रे थे,अतः यही हिंदी की सर्वप्रथम मौलिक कहानी कही जा सकती है |[4]

हिंदी कहानी के विकास को चार भागों में बांटा जा सकता है –

1. प्रेमचंद पूर्व हिंदी कहानी– सन 1900 से 1915 ई.
2. प्रेमचंद युगीन हिंदी कहानी –सन 1916 से 1936 ई.
3. प्रेमचन्दोत्तर हिंदी कहानी–सन 1936 से 1950 ई.
4. नई कहानी–सन 1950 के बाद |

हिंदी कहानी के लोक में मुंशी प्रेमचंद का नाम सर्वोपरि माना जाता है| वे हिंदी कहानी लेखन को उच्च शिखर तक ले गए | इससे कहानी के प्रति पाठकों का झुकाव हुआ | प्रेमचंद ने अपने जीवन में लगभग तीन सौ कहानियों की रचना की | उनकी अधिसंख्य कहानियों का विषय गावों पर केंद्रित है | उनकी रचनाओं में निर्धनता, जातिवाद, प्रताड़ना, शोषण, वर्गभेद जैसी सामाजिक विडम्बनाएं मुह बाये खड़ी दिखायी देती हैं |

उनके कहानी–लेखन की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि स्वयं उनकी ही कहानियों में हिंदी– कहानी के विकास की प्रायः सभी अवस्थाएं दृष्टिगोचर हो जाती हैं | उनकी आरंभिक

कहानियों में किस्सागोई, आदर्शवाद और सोददेश्यता की मात्रा अधिक है | यद्यपि व्यवहारिक मनोविज्ञान का पुट दे कर मानवचरित्र के सूक्ष्म उदघाटन की क्षमता के फलस्वरूप प्रेमचंद ने अपनी कहानियों को विशिष्ट बना दिया है, पर उनकी आरंभिक कहानियों का कच्चापन और यथार्थ की उनकी कमजोर पकड़ अत्यंत स्पष्ट है |[5]

31 जुलाई,1880 को काशी के निकट लमही में माता आनंदी देवी और पिता अजायब राय के घर जन्मे प्रेमचंद ने हिंदी के साथ उर्दू में भी लेखन किया | उनका वास्तविक नाम धनपत राय था | उर्दू में वे नवाब राय बनारसी नाम से लिखते थे | जब उनके ' सोजे वतन' प्रथम कहानी संग्रह को अंग्रेज़ी सरकार ने जब्त और प्रतिबंधित कर दिया तो उन्होंने 'प्रेमचंद' नाम से लेखन आरंभ कर दिया |

हिंदी साहित्य के इतिहास में कहानी और उपन्यास की विधा के विकास का काल- विभाजन प्रेमचंद को ही केंद्र में रखकर किया जाता है | (प्रेमचंद-पूर्व युग, प्रेमचंद युग, प्रेमचंदोत्तर युग)| यह प्रेमचंद के निर्विवाद महत्व का एक स्पष्ट प्रमाण है | वस्तुतः प्रेमचंद ही पहले रचनाकार हैं, जिन्होंने कहानी और उपन्यास की विधा को कल्पना और रूमानियत के धुंधलके से निकलकर यथार्थ की ठोस जमीन पर प्रतिष्ठित किया |[6]

मुंशी प्रेमचंद की पहली कहानी पंच परमेश्वर सन 1916 में और अंतिम कहानी कफन सन 1936 ई. में प्रकाशित हुई | अतः इस कल को प्रेमचंद युग कहना समीचीन प्रतीत होता है |[7]

पूस की रात, सवा सेर गेहूं, ठाकुर का कुआं, बूढी काकी, माता का ह्रदय, हार की जीत, आत्माराम, ईदगाह, नशा, बेटों वाली विधवा, प्रेरणा, सद्गति, नमक का दरोगा, लॉटरी, बड़े भाई साहब, शतरंज के ख़िलाड़ी, सुजान भगत, कजाकी इत्यादि कहानियों के रचनाकार प्रेमचंद कहानी लेखन के क्षेत्र में सर्वश्रेष्ठ शिल्पी बनकर उभरे हैं |

उनकी सदगति कहानी में व्याप्त जातिवादी परंपरा का प्रबल प्रतिकार करते हुए कर्तव्यबोध की प्रेरणा देती है | यह कहानी छुआछूत की सड़ी-गली रूढ़ि पर प्रहार करते हुए मानवता के शत्रुओं को आत्मावलोकन करने को विवश करती है |

कहानी का पात्र पं.घासीराम जाति का ब्रह्मण है,पूजा-पाठ और पुरोहिताई करता है परंतु इसके बावजूद उसमें निम्न जाति के लोगों के प्रति कोई करुणा और औदार्य नहीं है | उसके दिमाग में वर्गभेद और उच्च जातीय दंभ कूट-कूट कर भरा है | उनकी पत्नी भी इस मामले में घासीराम से दो हाथ आगे है | कहानी का मुख्य पात्र दुखिया चमार जातिवादी और छुआछूत की ढोंगी व्यवस्था का शिकार है, परंतु वह इसे अपनी नियति और भाग्य समझता है, न कि उच्च वर्ग द्वारा किया जा रहा अत्याचार |

दुखिया अपनी बेटी की सगाई की साइत–सगुन देखने घासीराम के पास गया | घासीराम ने दुखिया को भूसा उठाने और लकड़ी फाड़ने का काम सौंप दिया | बेचारा दिनभर भूखा–प्यासा उस घर में यह कार्य करता रहा, जिस घर के आंगन में उसका प्रवेश भी निषिद्ध था |उसने चिलम के लिए पंडिताइन से आग मांगी | पंडिताइन ने इस प्रकार दूर से आग फेंकी कि एक चिंगारी दुखिया के सर पर गिर गयी |

सादगी और निश्छलता से युक्त दुखिया इसे उच्च जाती द्वारा की जा रही प्रताड़ना, शोषण, छुआछूत और वर्गभेद नहीं मानता, अपितु वह मानता है कि यह उसके द्वारा ब्राह्मण के घर में प्रवेश का परिणाम है | भगवान ने उसे यह दंड दे दिया– "उसके मन ने कहा– यह एक पवित्तर ब्राह्मण के घर को अपवित्तर करने का फल है | भगवान ने कितनी जल्दी फल दे दिया | इसी से तो संसार पंडितों से डरता है |" [8]

श्रम और भूख से पीड़ित दुखिया लकड़ी फाड़ते–फाड़ते मौत के मुंह में चला गया, परंतु उसने उच्च जाति के प्रति अपने उस कर्तव्य और सम्मान का परित्याग नहीं किया, जो उसकी पीढीयां वर्षों से करती आ रही हैं | और इस श्रद्धा–भक्ति का फल उसे मृत्यु के बाद भी अपमान के रूप में मिला | उसके शव को घासीराम और उसकी पत्नी ने हाथ नहीं लगाया | उलटे वहां रो रही दुखिया की पत्नी, लड़की और मोहल्ले की महिलाओं को

अपशब्द कह डाले | (चमरौने का कोई आदमी लाश उठा लाने को तैयार न हुआ | हां, दुखी की स्त्री और कन्या दोनों हाय–हाय करती वहाँ से चलीं और पंडित जी के द्वार पर आकर सर पीट–पीटकर रोने लगी | उसके साथ दस पांच और चमारिनें थीं |... आधी रात तक रोना पीटना जारी रहा | देवताओं का सोना मुश्किल हो गया| पर लाश उठाने कोई चमार नहीं आया और ब्राह्मण चमार की लाश कैसे उठाते | भला ऐसा किसी शास्त्र–पुराण में लिखा है ?)[9]

जब लाश सड़ने लगी तो घासीदास ने दूर से उस पर रस्सी का फंदा डालकर किनारे तक घसीट डाला और अपवित्र होने के कारण स्नान के पूजा की | (उधर दुखी की लाश को खेत में गीदड़ और गिद्ध, कुत्ते और कौए नोंच रहे थे | यही जीवन–पर्यन्त की भक्ति, सेवा और निष्ठा पुरस्कार था |)[10]

इस कहानी में जातीय विष मानवता का बड़ा शत्रु प्रदर्शित किया गया है | झूठी शान के सामने करुणा और धर्म बौने बन गए हैं | जातीय दंभ और ऐंठन ने एक ऐसे निरीह प्राणी के प्राण हरण कर लिये, जो अपने कर्तव्य मार्ग से विचलित नहीं हुआ | थोथी परंपराओं का पालन करते–करते दुखिया इस संसार से चला गया | उसकी मौत हमारे समाज के बीच बनी गहरी विभेदीकरण की खाई पर अनेक प्रश्न खड़े कर गयी |

'सदगति' भारतीय संस्कृति की उस महान परंपरा पर चोट करती है, जो समाज में जाति और वर्ग वैषम्य के द्वारा विभेद पैदा

करती है व मनुष्य को मानवीय नहीं रहने देती है | यह जातीय और वर्गीय दंश अंततः मनुष्य की जान लेने में भी नहीं हिचकता | प्रेमचंद यथार्थवादी कलाकार हैं | वह कहीं नहीं कहते कि भारतीय संस्कृति के इस चेहरे को बदलो, पर 'सदगति' के पाठकों को यह एक कहानी बेचैनी से भर देती और वह सामाजिक बदलाव के लिए सोचने को मजबूर हो जाता है | [11]

प्रेमचंद ने इस कहानी में भारतीय समाज में व्याप्त उस कलंक को दिखाने का प्रयास किया है, जिसके कारण मनुष्य–मनुष्य के बीच ऊंच–नीच, बड़े–छोटे का विभेद उत्पन्न किया गया है | यह हमारे समाज का वह दर्दीला पहलू है, जिसने मानवता को गर्त में धकेल दिया है | अनुसूचित जाति का व्यक्ति जहां असीम उत्तरदायित्वों और कर्तव्यों के बोझ तले जीवनभर कसमसाता रहता हैं | पं. घासीराम दुखिया के घर आने वाले थे | दुखिया की पत्नी झुरिया उनके बैठने के लिए उच्च जाति के लोगों के यहां से खाट मंगवाना चाहती है | दुखिया इस पर आक्रोशित हो जाता है | उसे पता है कि ठकुराने वाले हम नीच जाति वालों को खाट नहीं देंगे | वह इसे समाज का सिद्धांत और परंपरा स्वीकार करते हुए व्यक्त करता है कि ठकुराने वाले हमें अपनी कोई वस्तु न दें, इसमें कोई अलग बात नहीं और वे हमारी वस्तुएं उठा ले जाएं तो भी कोई अलग बात नहीं |

(झुरिया– कहीं से खटिया न मिल जायगी ? ठकुराने से मांग लाना | दखी– तू तो कभी– कभी ऐसी बात कह देती है कि

देह जल जाती है | ठकुराने वाले मुझे खटिया देंगे | आग तो घर से निकलती नहीं, खटिया देंगे | कैथाने में जाकर एक लोटा पानी मांगू तो न मिले | खटिया कौन देगा | हमारे उपले, सेंठे, भूसा, लकड़ी थोड़े ही हैं कि जो चाहे उठा ले जाय | ले अपनी खटोली धोकर रख दे | गरमी के तो दिन हैं उनके आते–आते सूख जायगी |)[12]

आम आदमी को अपनी कहानी का नायक बनाना और उसके व्यवहार और शब्दों से शोषक वर्ग के प्रति बहुत कुछ उगलवाना प्रेमचंद की कहानियों की विशेषता है | वे कहानी के पात्रों के माध्यम से सामंती व्यवस्था की हत्या करते प्रतीत होते हैं | सदगति जैसी उनकी कहानी पर प्रगतिशीलता की शक्ल दिखाई देती है | आडम्बर के विरोध का उनका तरीका भी अनोखा है | दलितों का शोषण करने वाले और उससे भेदभाव करने वाले पं.घासीराम और उसकी पत्नी के चरित्र को प्रेमचंद ने विशेष कला के माध्यम से खूब उघाड़कर रखा है |

'ठाकुर का कुआं', 'सदगति' आदि कहानियों में तथा 'गोदान' एवं 'कर्मभूमि' उपन्यासों में दलितों के शोषण, उत्पीड़न, अपमान और विद्रोह की अभिव्यक्ति है | प्रेमचंद पहले ग्रामीण कथाकार व् पहले दलितों के पक्षधर थे | उन्होंने दलितों के जीवन पर उस समय लिखा, जब हिंदी में दलित साहित्य का 'कान्सेप्ट' भी नहीं था | [13]

प्रेमचंद की कहानियां पाठक को झकझोर देती हैं | उनमें मानवीय संवेदनाओं को प्रमुखता मिली है | वे कहानियों में मानव मन के भावों को कुशलता से परोसकर पत्रों के मध्यम से उन्हीं के परिवेश की भाषा में उनके समाज का पूरा सच अभिव्यक्त कर देते हैं | 'सदगति' में दुखिया चमार, पं.घासीराम और उनकी पत्नी के माध्यम से उन्होंने दो जातियों के बीच आपसी संबंधों, अंधविश्वास, छुआछूत, अमानवीयता इत्यादि का सुंदर प्रतिबिंबन किया है |

सारांशतः कहा जा सकता है कि सदगति कहानी में कथाकार प्रेमचंद के उस उत्कृष्ठ कथा–शिल्प के दर्शन होते हैं, जिस कला के कारण वे इस क्षेत्र में शिखर पुरुष बने हैं | आम आदमी को कथावस्तु के केंद्र में रखने वाले प्रेमचंद के शब्दों का जादुई चमत्कार इसमें स्पष्ट दिखाई देता है | वे इसमें मानवीय मूल्यों के उपासक, मानवता के पुजारी दिखलाई देते हैं | ग्राम्य जीवन का साक्षात्कार कराने वाली इस कहानी के अध्ययन से प्रतीत होता है कि ग्रामीण समाज के प्रति इस कथाकार का कितना अगाध प्रेम था | धर्म नहीं, कर्म की उच्चता को वरीयता देने का संदेश देने वाली इस कहानी के माध्यम से कथाकार कहना चाहता है कि आचरण की उच्चता ही सामाजिक श्रेष्ठता का मानक है | कहानीकार समाज में पुरानी थोथी परंपराओं को समूल नष्ट कर उनकी जगह पर मानवीय मूल्य स्थापित करने की पैरवी करता है | वैसे भी प्रेमचंद साहित्यिक क्षेत्र में इसलिए प्रसिद्ध हैं कि उन्होंने समाज में व्याप्त अप्रिय और पीड़ादायक

सच को बेहतरीन तरीके से प्रस्तुत किया है | उन्होंने निम्न, शोषित, दलित, निर्धन वर्ग पर हो रहे अन्याय और अत्याचार का खुलकर विरोध किया है | उन्होंने एक प्रकार से 'राम राज्य' वाले समाज की संकल्पना की है | उनके साहित्य में जनवाद, गांधीवाद और मार्क्सवाद झलकता है | डॉ. रजनीकांत एस. शाह के शब्दों में " प्रेमचंद जी मानव मन की संवेदनाएं तथा कुंठा के कुशल वक्ता रहे हैं | उनका कथासाहित्य मानव संस्कृति की आभ्यंतर अनुभूतियों को व्यथा के रूप में प्रभावक ढंग से निरुपित करता है | ये संवेदनाएं ही मानव के विराट स्वरूप का मानवीय रूप में मुल्यांकन पाती है |" [14]

<u>संदर्भ :</u>

1. डॉ. नरेन्द्र प्रताप सिंह, ज्ञान प्रभा (लेखन की साहित्यिक विधाः कहानी), पृ.–30
2. प्रो. भगवान देव पाण्डेय, डॉ नरेंद्र प्रताप सिंह, भाषा, साहित्य और जनसंचार, पृ.–46
3. राष्ट्री भाग–2, पृ.–1, (भूमिका) राष्ट्रीय– संस्कृत–संस्थान, नई दिल्ली
4. डॉ.नरेन्द्र प्रताप सिंह, ज्ञान प्रभा (लेखन की साहित्यिक विधा : कहानी), पृ.–32–33
5. प्रो. भगवान देव पाण्डेय, डॉ नरेंद्र प्रताप सिंह, भाषा, साहित्य और जनसंचार, पृ.–51

6. हिंदी साहित्य का इतिहास,संपादक– डॉ नगेंद्र, डॉ.हरदयाल, पृ.–564
7. आरोह,भाग 1, पृ.–4, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्,2006
8. डॉ.नरेन्द्र प्रताप सिंह, ज्ञान प्रभा (लेखन की साहित्यिक विधाः कहानी), पृ.–34
9. राष्ट्र भाग–2, पृ.–42, राष्ट्रिय– संस्कृति–संस्थान, नई दिल्ली
10. राष्ट्र भाग–2, पृ.–45, राष्ट्रिय– संस्कृति–संस्थान, नई दिल्ली
11. राष्ट्र भाग–2, पृ.–45 , राष्ट्रिय– संस्कृति–संस्थान, नई दिल्ली
12. राष्ट्र भाग–2, पृ.–39, राष्ट्रिय– संस्कृति–संस्थान, नई दिल्ली
13. राष्ट्र भाग–2, पृ.–40, राष्ट्रिय– संस्कृति–संस्थान, नई दिल्ली
14. डॉ. चंचल शर्मा (डोगरा)कश्फ़ (प्रेमचंद की प्रासंगिकता),अंक–1, जून.2017, पृ.–139
15. डॉ. रजनीकांत. एस,शाह, कश्फ (प्रेमचंद के कथासाहित्य में नारीविमर्श), अंक–1, जून,2017, पृ.–146

पताः
मकान नंबर–एच.301,नेहरु कॉलोनी
धर्मपुर, देहरादून, उत्तराखंड

पिन–248001
फोन–9411341443,7535975381
ई–मेलः veerendra.bartwal8@gmail.com

प्रेमाभिव्यक्ति से परिपूर्ण : 'रोशनी दर रोशनी'

डॉ. मुदस्सिर अहमद भट्ट

आधुनिकता तथा बाजारवाद के बढ़ते प्रभाव ने भारतीय समाज की सामाजिकता तथा आर्थिक संरचना को प्रभावित करने के साथ–साथ साहित्य में अनेक विमर्शों को भी गहराई से प्रभावित किया है

। एक ओर भौतिकवाद ने अपनी जड़ें जमाना शुरू कीं तो दूसरी ओर अस्तित्ववाद, मानवतावाद तथा संरचनावाद जैसे अनेक विमर्शों पर चर्चा–परिचर्चाएं होने लगीं । परिणामस्वरूप यौन–शोषण, अनमेल विवाह, विधवा विवाह आदि अनेक विषयों पर खुलकर बात होने लगीं। बलात्कार, भ्रूण हत्या जैसे जघन्य अपराध आज भी समाज में व्याप्त है । इन सब विसंगतियों तथा विडम्बनाओं के चलते विभिन्न लेखकों ने स्त्री से सम्बंधित विभिन्न प्रकार के प्रश्नों को सामने रखा जिससे स्त्री विमर्श को दिशा मिली।

इसमें कोई संदेह नहीं है कि प्राचीन काल से ही धर्म तथा पुरुष–प्रधान समाज ने स्त्री की स्थिति को निर्धारित किया है। इसमें भी कोई दोराय नहीं है कि विभिन्न प्रकार के पारिवारिक उत्पीडन तथा सामाजिक तिरस्कार के बावजूद स्त्री लेखिकाओं ने स्वयं को स्थापित किया है। उन्होंने न केवल अपनी भावाभिव्यक्ति की है अपितु समाज में व्याप्त अनेक विसंगतियों को भी आइना दिखाया है। इस सूची में मीरा, राजेन्द्रबाला घोष (बंग महिला) महादेवी, मन्नू भंडारी, नासिरा शर्मा, कृष्णा सोबती, उषा प्रियंवदा, अलका

सरावगी, अनामिका, मनीषा कुलश्रेष्ठ, दिव्या माथुर, नमिता श्रीवास्तव इत्यादि | इन लेखिकाओं ने कथा–साहित्य तथा काव्य में समकालीन जीवन के उन अनछुए पहलुओं को उजागर किया है जिनको एक लेखक शायद इतनी प्रभावी ढंग से अभिव्यक्त नहीं कर पाता |

साहित्य मानव के भावों और विचारों की समष्टि है | साहित्य में सामाजिक प्रभाव का प्रतिफलन दिखाई देता है | समाज और साहित्य का अनन्य सम्बन्ध उनके निरंतर प्रवाह की गति का बोधक होता है | इसी कारण युगों की विशिष्टता साहित्य में प्रतिबिंबित होती है | समाज की स्थिति का प्रभाव साहित्य पर पड़ता है और इस प्रभाव का यथा रूप मानव को उसकी वास्तविकता से परिचित करता है

एक समय ऐसा था जब पुरुष रचनाकार स्त्री जीवन की वेदना तथा पीड़ा को व्यक्त करने का काम करता था परन्तु गीता ठाकुर जैसी अनेक लेखिकाओं के अपनी भावाभिव्यक्ति स्वयं की और जीवन से सम्बंधित विभिन्न विसंगतियों तथा विडम्बनाओं को

भी चित्रित किया है | वास्तव में स्त्री–लेखन के इतिहास में लेखिकाओं की कमी नहीं है | मीराबाई और आंडाल से लेकर महादेवी तक एक लम्भी परंपरा है | वर्तमान समय में विभिन्न दृष्टियों तथा कोणों से लेखिकाओं के अपनी संवेदनाओं तथा विडम्बनाओं को अभिव्यक्ति करने का काम किया है | बाजारवाद की दौड़ में स्त्री की ओर इशारा करते हुए सुधा अरोड़ा की कविता 'अकेली औरत' द्रष्टव्य है–

"इक्कीसवीं सदी की यह औरत / हांड मास की नहीं रह जाती / इस्पात में डल जाती है / और समाज का सदियों पुराना / शोषण का इतिहास बदल डालती है / बाजार के साथ बाजार बनती / यह सबसे सफल औरत |"[1]

इस प्रकार समय समय पर लेखिकाओं ने समाज और संस्कृति में व्याप्त प्रथाओं एवं आदर्शों का बखूबी चित्रण किया है | नारी जीवन में हो रही उथलपुथल तथा संत्रास को भी लेखिकाओं ने अभिव्यक्त किया है | इस सन्दर्भ में किरण अग्रवाल की कविता को देखना समीचीन होगा–

"कि पक्षी अब उड़ते नहीं महज़ फडफडाते है / और पेड़ पेड़ नहीं ठूंठ नाम से जाने जाते है / कि कोख कोख नहीं जलता हुआ रेगिस्तान है / और हृदय संवीदना शून्य, बर्फ उगलता एक शमशान है / कि आज़ादी शब्द हमारे शब्दकोश में ही नहीं |"[2]

'रोशनी दर रोशनी' गीता ठाकुर रोशनी का एक सशक्त गज़ल संग्रह हैं | आपका जन्म 11 अक्टोबर 1952 को नई दिल्ली में हुआ | दिल्ली विश्विद्यालय से ग्रजवेशन करने के बाद उनकी शादी एक व्यापारी दीपक ठाकुर से हो गई | रोशनी जी का पहला काव्य संग्रह अप्रैल 1994 में प्रकाशित हुआ | 'रोशनी दर रोशनी' उनकी दूसरी प्रकाशित रचना है | आप लिखती है– "मैंने जब लिखना शुरू किया तो मुझे हैरानी भी हुई और ख़ुशी भी कि मैं जो कहना चाहती हूँ वो शायरी में ढलता जा रहा है | घर के लोगों और दोस्तों के इसरार पर मैंने फिर से ग़ज़लों को किताबी सूरत में लाया | अब शायरी ही मेरे जज़्बात का आइनादार हो गई है | उनका कहना है–

रात की गोद में 'रोशनी' / दूर तक झिलमिलाती रही"[3]

'रोशनी दर रोशनी' एक गज़ल संग्रह है | हमारे सामने एक महत्वपूर्ण प्रश्न यह है कि हिंदी में गज़ल की अवधारणा किस प्रकार हुई? हिंदी के कई विद्वानों एवं ग़ज़लकारों की यह अवधारणा बनी हुई है कि हिंदी में ग़ज़ल की अवधारणा उर्दू ग़ज़ल के प्रभाव के कारण हुई है। कई शोधकर्ता भी इस बात का समर्थन करते हैं। लेकिन हिंदी में कुछ विद्वान ऐसे भी हैं जो यह मानते है कि हिंदी में गज़ल की अवधारणा उर्दू के प्रभाव के कारण नहीं हुई बल्कि फारसी गज़ल के प्रभाव के कारण हुई। वैसे यह बात सत्य भी लगती है क्योंकि जब हम अमीर खुसरो से हिंदी ग़ज़ल का प्रारंभ मानते हैं तब यह निःसंदेह कह सकते हैं कि हिंदी गज़ल की अवधारणा सीधे फ़ारसी से हुई है क्योंकि अमीर खुसरो फ़ारसी में ग़ज़ल लिखते थे। हिंदी साहित्य के आदिकाल को हम हिंदी ग़ज़ल साहित्य का प्रारंभिक काल कह सकते हैं क्योंकि इस काल में ही हिंदी ग़ज़ल के बीज बोने का ऐतिहासिक दायित्व आमिर खुसरो ने निभाया। गज़ल मूलतः अरबी भाषा का शब्द है जिसका अर्थ है "प्रेमिका से वार्तालाप" .फारसी और फिर उर्दू में यह एक कविता विशेष है

जिसमें एक ही रदीफ़ और काफिए में 11 शेर होते है | हर शेर का विषय अलग होता है | पहला शेर 'मत्ला' कहलाता है जिसके दोनों मिस्रे सानुप्रास होते है और अंतिम शेर मक्ता होता है जिसमें शायर अपना उपनाम लगता है | इस रूप में यह विधा प्रेमाभिव्यक्ति का माध्यम है | इसी प्रेमाभिव्यक्ति का सशक्त और मार्मिक चित्रण 'रोशनी दर रोशनी' गज़ल संग्रह में मिलता है |

गीता ठाकुर 'रोशनी' जी की ग़ज़लें रदीफ़–काफिया की कसौटी पर सही उतरती हैं | रदीफ़–काफ़िया की गहरी सूझ–बूझ होने के कारण रोशनी जी की गज़लें स्वाभाविक और प्रभावपूर्ण बन पड़ी हैं | जो गज़लकार रदीफ़–काफिया के प्रति जितना सतर्क होगा उसकी गज़ल उतनी ही प्राभावशाली हो जाती हैं | रोशनी जी अपने प्रेमी के साक्षात्कार को यूँ बयान करती है– अब तो हटा लो हुसन के चेहरे से ये नकाब / कोई तरस के रह गया दीदार के लिए |[4]

रोशनी जी को अपने महबूब का चेहरा चाँद जैसा लगता है जिसका चित्रण वे कई स्थलों पर करते है– घटाओं में महताब छुपा है ऐसे / तेरा चेहरा तेरी जुल्फों में जैसे |[5]

एक अन्य स्थल पर– हंसी चाँद पे छा रही है गज़ब है / ये जुल्फ़े काली घटाएं तुम्हारी |[6]

यद्यपि रोशनी जी की सभी ग़ज़लों में अपने प्रेमी के प्रति अपार स्नेह, त्याग, बलिदान ही दिखाई देता है परन्तु कहीं–कहीं पर निराशा, हताशा का भी चित्रण मिलता हैं–

हसीं जितने हो उतने ही संगदिल हो / किसी ने न देखी जफ़ाएँ तुम्हारी |[7]

एक अन्य स्थल पर देखिए–

उजड़ गयी है प्यार की दुनियां तेरे बगैर ऐ हमदम

तेरी प्यारी सूरत को बस दिल में बसा रखा है |[8]

रोशनी जी ग़ज़लों का सीधा सम्बन्ध करुणा, दया, मानवता, त्याग, बलिदान इत्यादि से है | उनका विश्वास है कि जिस व्यक्ति

का मन जितना कोमल और सरल होगा वह उतना ही परोपकारी होगा | परन्तु आज दुर्भाग्य से लोगों ने अपने ह्रदय में करुणा की जगह कठोरता बसा ली है | बाजारवाद की दौड़ में प्रत्येक व्यक्ति पैसे के पीछे पड़ गया है तथा उद्योगीकरण के दौर में व्यक्ति एक मेशीन मात्र रह गया है | वे स्वयं को भूल गया है जिसका सुन्दर शब्दों में इस प्रकार चित्रण हुआ है–

हर आदमी जीने की अदा भूल गया है

शायद बनाके हमको खुदा भूल गया है |

पैसे को खुदा मानते है ज़र के ये गुलाम

हर शख्स जैसे खौफे खुदा भूल गया है |[9]

निष्कर्षतः कवियत्री आम आदमी की भलाई के पक्ष में है | अपने सुख की अपेक्षा वे दूसरों के सुख में अपना सुख मानते है | अपने ग़ज़लों के शेरों के माध्यम से उन्होंने सामान्य जन की पीड़ा का भी

चित्रण किया है | उनके शरों में रोमानियत झलकती है तथा प्रेमाभिव्यक्ति का भी सशक्त और सुन्दर अभिव्यक्ति हुई है |

सन्दर्भ सूची

1. अंजु लता गौड़ा, हिंदी एकांकी में जीवन मूल्य',शलभ प्रकाशन, 1994, पृ. 43
2. डॉ. अंजुलता, स्त्री लेखन, हिंदी विभाग तेजपुर केन्द्रीय विश्वविद्यालय, पृ. 15
3. वही, पृ. 16
4. गीता ठाकुर 'रोशनी', रोशनी दर रोशनी, पृ. 33
5. वही, पृ. 21
6. वही, पृ. 23
7. वही, पृ. 30
8. वही, पृ. 30
9. वही, पृ. 38

10. वही, पृ. 16

डॉ. मुदस्सिर अहमद
भट्ट
श्रीनगर कश्मीर
फोन नं० 9622495937

पानी केरा बुदबुदा और नारी अस्तित्व

शोधार्थी:- सबज़ार अहमद बट्ट

न्युयॉर्क के कोलंबिया विश्वविद्यालय में हिंदी भाषा और साहित्य की प्रोफेसर सुषम बेदी ने लगभग सभी साहित्यिक विधाओं पर लेखनी चलाई है. उनके अधिकाँश उपन्यास अमेरिका में रहने वाले भारतीय पात्रों पर आधारित है. विशेषकर महिला पात्र ही उनके उपन्यासों का केंद्र होती है | पानी केरा बुदबुदा भी पाश्चात्य धरातल पर लिखा गया एक बहुआयामी उपन्यास है, जिसमे लेखिका ने पिया नामक महिला पात्र के माध्यम से कई समस्याओं को पाठकों के समक्ष रखने का सफल प्रयास किया है. आलोच्य उपन्यास में लेखिका के लेखन–कार्य के कई रंगों का साक्षात्कार होता है | चाहे वह भारतीय तथा पाश्चात्य संस्कृति का अंतर हो या फिर कश्मीर प्रांत का वर्णन | एक ओर जहाँ पश्चिमी देशों में मानव पूर्ण स्वतंत्रता प्राप्त कर जीवन को व्यतीत करता है तो दूसरी ओर भारत में रहकर मनुष्य अनेक प्रकार की धार्मिक तथा सामजिक बाधाओं में झकड़ा हुआ अपनी कई इच्छाओं का दमन करने के लिए विवश होता है |

अमेरिका जाने के पश्चात पिया स्वयं को मुक्त एवं स्वतंत्र अनुभव करती ह, “यह समाज मुझे बहुत रास आता है। कोई किसी की ज़िन्दगी में दखल नहीं देता सब अपना अपना काम देखते हैं। अपने में रहना यही संभव है।”1 भारत में ऐसी कई समस्याएं हैं जो आधुनिक युग में भी एक अभिशाप बनकर सम्पूर्ण मानव जाति विशेषकर महिलाओं को अपनी चपेट में ले रही है। यहाँ महिलाओं को बोझ समझते हुए उनके प्रत्येक इच्छाओं का दमन किया जाता है। कभी उनकी पढाई पर रोक लगा दी जाती है तो कभी उनकी

इच्छा के विपरीत उनका विवाह कर दिया जाता है। "दामोदर से मैंने कभी प्यार नहीं किया। घरवालों ने शादी कर दी और तुम हिन्दुस्तानी लड़की की हालत तो जानते ही हो। परिवार की आग्रह के आगे चुप हो जाना पड़ता है।"2

आलोच्य उपन्यास में लेखिका ने एक प्रावासी भारती की मनःस्थिति तथा उसके दर्द का भी मार्मिक ढंग से चित्रण किया है। अपनी जन्मभूमि छोड़कर विदेश में हर प्रकार की सुविधा होते हुए भी अपने देश की याद उन्हें हर पल कचोटती रहती है। "कश्मीर से विस्थापित होकर दिल्ली में बसा पिया का परिवार अपने खोए हुए साम्राज्य के शोक और उदासियों में ही डुबा हुआ था।"3 यद्यपि इस उपन्यास में उपरोक्त समस्याओं के अतिरिक्त कई अन्य पहलुओं पर भी प्रकाश डाला गया है चाहे वह पुरुष–प्रधानता की समस्या हो या फिर भारतीय नेताओं पर कटाक्ष परन्तु इस उपन्यास को ध्यानपूर्वक पढने के पश्चात यह ज्ञात होता है कि इन सब पक्षों को कहीं न कहीं अस्तित्वबोध में विस्तार करने के लिए प्रयोग में लाया गया है |

यह उपन्यास एक ऐसी नारी की व्यथा–कथा है जो अपने देश को छोडकर दूसरी जगह नहीं जाना चाहती परन्तु भारतीय रीति–रिवाजों के आगे आत्मसमर्पण कर उसे अपने पति के साथ अमेरिका जाना पड़ता है और यही से शुरू होता है संघर्ष ; अपने अस्तित्व को सुरक्षित रखने का संघर्ष किसी भी वस्तु को तब तक अस्तित्ववान नहीं माना जाता जब तक दूसरों को उसके होने का अनुभव न हो या फिर दूसरों से उसे स्वीकृति न मिले | उसके लिए

व्यक्ति की पहले स्वयम अपने होने का आभास होना चाहिए | "हर किसी को कन्फर्मेशन तो चाहिए होती है | कोई कितना भी सुंदर, बढ़िया या ख़ास हो, वह तब तक उतनी नज़र ए ख़ास नहीं हो पाता जब तक कि उसे ऐसा उसके ख़ास मित्र नहीं महसूस कराते, तभी व्यक्ति में अपने कुछ होने का विशवास जागेगा ना?|"4 अतः व्यक्ति की जन्मजात या प्राप्त उपलब्धियों के लिए अभिमूल्यन आवश्यक है |

नारी–अस्तित्व के लिए पुरुष–प्रधानता एक चुनौती का विषय बन गया है | पुरुषों को ही अतिआधिक महत्त्व देकर, जीवन की भागडोर उनके हाथ में देकर नारी अपने अस्तित्व को स्वयं नकारती है | कुछ ऐसी ही दशा आलोच्य उपन्यास की नायिका पिया की भी है जिसका विवाह यह कहकर जल्दी कर दिया जाता है कि उनके पिता का देहांत होने के कारण उसके लिए अच्छा वर मिलना कठिन हो गया है| "पिया झींकती इस बात पर यानि कि बाप का होना ही सब कुछ है| लड़की का व्यक्तित्व, उसकी लियाकत सब बेमायने.....|"5 विवाह के बाद भी यह भेदभाव उसके जीवन में व्हालता रहता है और उसके अस्तित्व पर लगातार प्रहार होता रहता है| यदि वह उसका विरोध करती तो उसे अनेक प्रकार की मानसिक तथा शारीरिक यातनाएँ पहुँचाई जाती है| "पति उसे मोम की गुडिया की तरह अपने हाथों में डालना चाहता तो पिया का अंतर चीख उठता| यह वह नहीं चाहती| वह असहमति जताती| वह बर्दाशत न कर पाती| झगडा होता और झगडे का अंत होता पिया की पिटाई पर|"6

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी होने के कारण समाज से कट कर जीवन–यापन नहीं कर सकता | उसके अस्तित्व–निर्माण में समाज एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है अर्थात समाज मानव–जीवन का एक ऐसा अंश है जिसके अभाव में मनुष्य जीने की कल्पना नहीं कर सकता और स्वयं को अर्थहीन अनुभव करता है | समाज के होने पर ही मनुष्य स्वयं को सुरक्षित रख सकता है | पिया निशांत से कहती है – "यू आर आउटरेजियस ! हमेशा बेसिरपैर की बात | समाज को झड़ से उखाड़ फेंकने की बात | समाज न होता तो तुम भी एग्जिस्ट न कर रहे होते | किसी ने शिकार कर लेना था तुम्हारा |"7

मनुष्य समाज को आवश्यक मानते हुए भी पलायन की ओर उन्मुख हो रहा है | वह अब सदैव अकेले रहने का प्रयास करता रहता है | वः अपने अस्तित्व को पहचानने के लिए अकेलेपन का सहारा लेता है | यद्यपि मनुष्य अकेले नहीं रह पाता फिर भी वह कभी–कभी दूसरों से अलग रहना पसंद करता है; जहाँ पर उसे अपने होने का बोध होता है| इसका कारन यही है कि वह दूसरों के शोषण तथा उनके द्वारा किये गए अत्याचार को सहन नहीं कर पाता| "यूँ तो पिया भी ज्यादा वक्त अकेले ही रहती है, उसे अच्छा ही लगता है अपना अकेला होना, अपने कर्मों पर अपना अधिकार होना, अपने फैसलों की छूट होना, अपने मन के मुताबिक अपना हर दिन व्यस्थित करना, अपनी मनमर्जी से अपना जीवन डालना|"8

अस्तित्व के लिए और एक विशेष बात यह है कि यह सर्वप्रथम स्वतंत्रता की माँग करता है| एक स्वतन्त्र मनुष्य ही अपने अस्तित्व कोसार्थक रूप दे सकता है और यही कारण है कि आज लोग अपनी स्वतंत्रता प्राप्ति के लिए अपने विवाह के बंधन को भी नहीं कतराते| उन्हें लगता है कि वैवाहिक जीवन में उनकी स्वतंत्रता समाप्त हो रही है| हमारे समाज में आज भी नारी को उसके अधिकारों से वंचित कर दिया जाता है| पिया कुछ ऐसे ही नारी वर्ग का प्रतिनिधित्व करती है;जो विवाह के पश्चात अपनी इच्छाओं पर अपना अधिकार खो देती है | उसे अपने हर कार्य के लिए अपने पति की अनुमति लेनी पड़ती है | यहाँ तक कि अपनी कमाई पर भी उसका कोई अधिकार नहीं रहता है | यही कारण था कि वह अपने पति को छोडकर अलग रहने का निर्णय लेती है | "वह हमेशा यही होना चाहती थी–अपने आप की स्वामिनी | इसी से उसने अपने शादी के बंधन को तोड़ा | पति को छोड़ | उस रिश्ते में उसे लगातार लगता था कि वह अपनी मालिक खुद नहीं | हर कदम पर कोई दखलअंदाजी करने वाला था |"9

लेखिका ने बड़े सजीव ढंग से नारी–मन में चल रहे अंतर्द्वन्द्व को दर्शाया है| यह अंतर्द्वन्द्व केवल अपने अस्तित्व को स्थापित करने की ललकवश उनके मन में प्रवेश करता है| पिया एक ओर अपने पति दामोदर से अलग होकर स्वतन्त्र रूप से जीना चाहती है तो वही दूसरी ओर कभी अनुराग तो कभी निशांत को उसी विवाह के लिए प्रतिबद्ध करना चाहती है, जिसे वह अपने अस्तित्व के लिए मात्र एक अड़चन मानती चली आ रही थी| "पिया को तो बहुत

ख्वाहिश थी कि वह और अनुराग विवाह कर ले। शायद उसे अपने होने की पूरी सार्थकता मिल पाती।"10 हमारे जीवन में रिश्ते भी एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाते है, रिश्तों में बंधे रहना मनुष्य के लिए एक सामजिक मजबूरी भी बन गयी है क्योंकि इसमें रहने से ही वह अपनी आवशकताओं को पूरा कर सकता है तथा उन्हें सुख–दुःख का साथी बनाकर संतुष्टि प्राप्त कर लेता है। "हम इंसानों की बहुत मूलभूत ज़रूरत है अहम् को सहलाए जाने की। तभी तो हम रिश्तों में बंधते हैं। किसी को हम सहलाएं, कोई हमें। वरना हमारी ईमारत ढलने लगती है।"11

निष्कर्षतः यह कई पहलुओं को साथ लेकर चलने वाला एक बहुआयामी उपन्यास है, जिसमे सुषम बेदी की लेखन प्रतिभा का साक्षात्कार हो जाता है। इस उपन्यास की भाषा का निर्माण सरल ढंग से किया गया है और रोचकता बढानें के लिए उर्दू शब्दों का भी प्रयोग किया गया है। बेशर्म, बेमुरव्वत, बेहया, जंगे–मैदान जैसे शब्द इतने आकर्षित है कि पाठक को मंत्रमुग्ध कर लेते हैं। इसके अतरिक्त अंग्रेजी शब्दों की भी भरमार है। न केवल शब्द बल्कि पूरे के पूरे वाक्य देखने को मिलते हैं। जैसे पिया द्वारा निशांत को कहा गया यह वाक्य " डू आई हेव पॉवर ओवर यु।"12 इस प्रकार के अन्य कई वाक्य इस उपन्यास में देखने को मिलते हैं और ऐसा होना स्वभाविक है क्योंकि इस कृति का भूमिक्षेत्र पाश्चात्य धरातल है और उसके पात्र भी वही निवास कर रहे हैं।

संदर्भ ग्रन्थ सूची:-

१.सुषम बेदी, पानी केरा बुदबुदा,पृष्ठ.68
२.वही, पृष्ठ.34
३.वही, पृष्ठ.15
४. वही, पृष्ठ.6–7
५. वही, पृष्ठ.27
६. वही, पृष्ठ.29
७. वही, पृष्ठ.54
८. वही, पृष्ठ.57
९. वही, पृष्ठ.8
१०. वही, पृष्ठ.6
११. वही, पृष्ठ.135
१२. वही, पृष्ठ.5

सब्जार अहमद बट्टू
पीएच.डी.शोधार्थी
कश्मीर विश्वविद्यालय श्रीनगर |
फोन.नं०: 9596193687